सत्यमेव जयते

UPSC (IAS)

2027/28

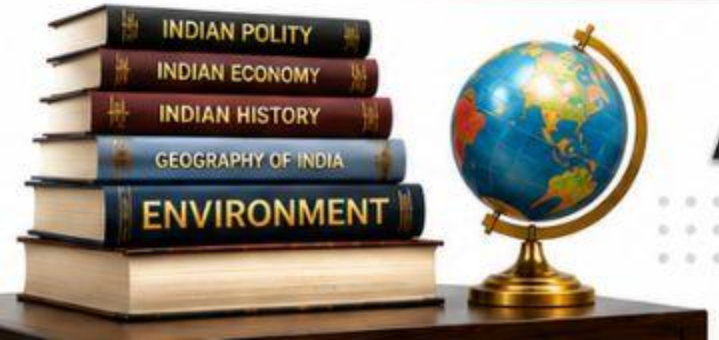
Result Mitra

pib
पत्र सूचना कार्यालय
PRESS INFORMATION BUREAU
भारत सरकार

THE HINDU
INDIA'S NATIONAL NEWSPAPER
SINCE 1878

The Indian EXPRESS
JOURNALISM OF COURAGE

COMPLETE JUNE MONTH CURRENT AFFAIRS

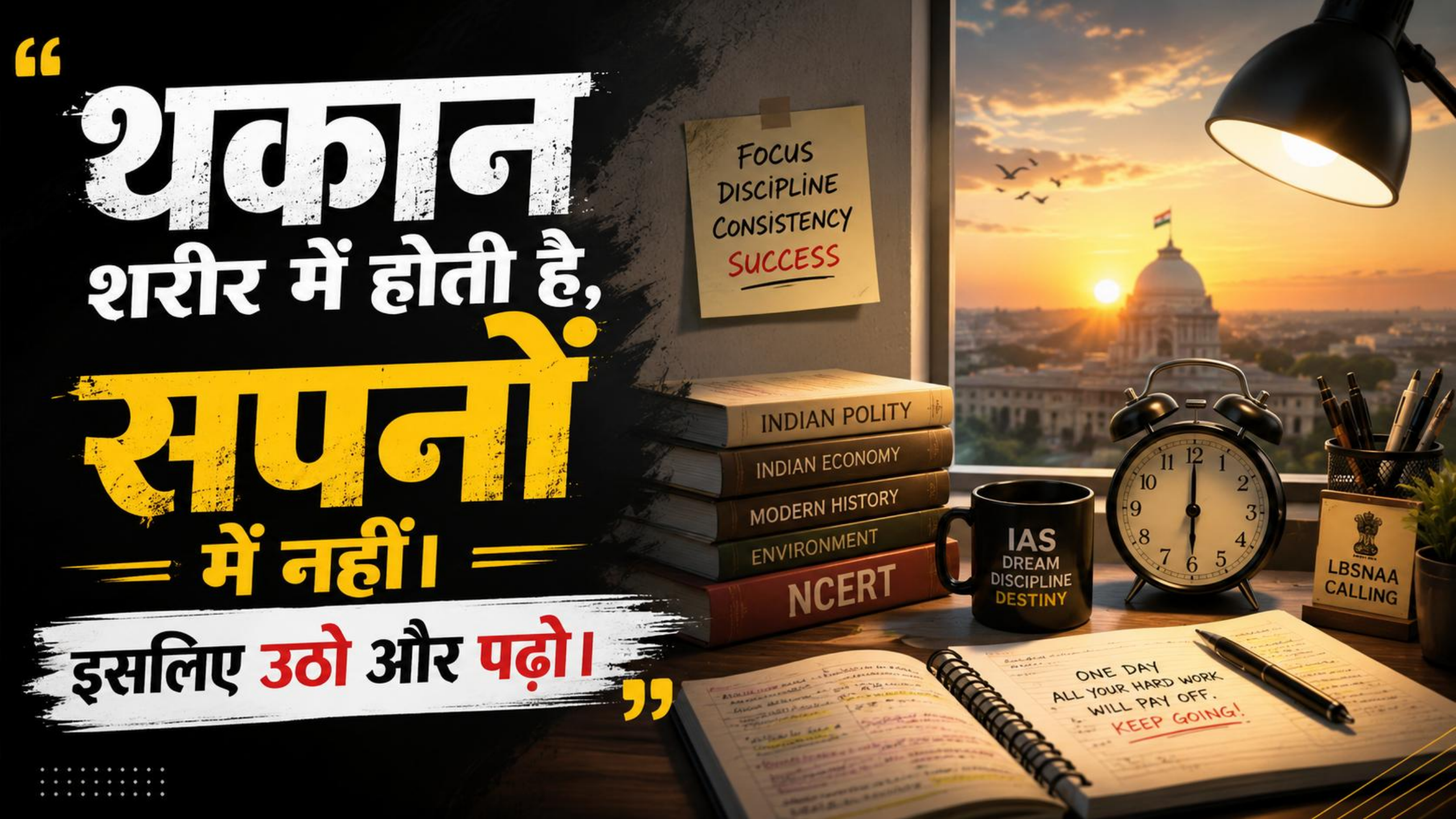




FOR

PRELIMS & MAINS

By- Dr. Faiyaz Sir


“
थकान
शरीर में होती है,
सपनों
में नहीं।
इसलिए उठो और पढ़ो।
”
FOCUS
DISCIPLINE
CONSISTENCY
SUCCESS
INDIAN POLITY
INDIAN ECONOMY
MODERN HISTORY
ENVIRONMENT
NCERT
IAS
DREAM
DISCIPLINE
DESTINY
LBSNAA
CALLING
ONE DAY
ALL YOUR HARD WORK
WILL PAY OFF.
KEEP GOING!

INDEX

1. अंतर्राष्ट्रीय संबंध (International Relations - IR)

1. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में सुधार: वैश्विक शासन की अनिवार्यता
2. भारत-वेनेजुएला संबंध: ऊर्जा सुरक्षा और भू-राजनीतिक पुनर्संतुलन
3. लाल सागर में हूती विद्रोहियों का संकट
4. यूरोपीय संघ (EU) का 21वां प्रतिबंध पैकेज और भारत
5. जापान का रक्षा कायाकल्प: शांतिवाद से 'सक्रिय निवारण' की ओर एक संक्रमण
6. 'इंडिया-फ्रांस इनोवेशन रोडमैप 2030'
7. ब्रिटेन का सोशल मीडिया प्रतिबंध और वैश्विक बहस
8. प्रोजेक्ट 'निम्बस': तकनीक, नैतिकता और भू-राजनीति
9. 'इंडो-पैसिफिक' से 'पैसिफिक': अमेरिकी रणनीतिक बदलाव
10. कीर स्टारमर का इस्तीफा और ब्रिटेन का बदलता राजनीतिक परिदृश्य
11. यूरोप का 'हीटवेव संकट' (2026)
12. चीन की नई ऊर्जा योजना (2026-30)
13. 52वां G7 शिखर सम्मेलन (2026)
14. भारत-यूके व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौता (CETA)
15. भारत-न्यूजीलैंड मुक्त व्यापार समझौता (FTA)
16. भारत-नेपाल संबंध
17. भारत-बांग्लादेश-चीन: त्रिकोणीय भू-राजनीति और तीस्ता नदी विवाद
18. यूएस-ईरान संघर्ष:
19. BRICS: वैश्विक दक्षिण का नेतृत्व और भारत की अध्यक्षता (2026)
20. SpaceX IPO और एलन मस्क
21. जून 2026 में प्रधानमंत्री की प्रमुख यात्राएँ
22. प्रमुख विदेशी व्यक्तियों की भारत की यात्रा

2. राष्ट्रीय घटनाक्रम (National Current Affairs)

1. सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीश नियुक्ति
2. NEET-UG 2026: सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय
3. CBSE का ऑन-स्क्रीन मार्किंग (OSM) सिस्टम
4. नीति आयोग: 11वीं शासी परिषद की बैठक
5. पश्चिम बंगाल का आयुष्मान भारत में प्रवेश
6. दिव्यांगजन कारीगरों का आर्थिक सशक्तिकरण: पीएम विश्वकर्मा और OSOP का अभिसरण
7. NCERT पाठ्यक्रम में 'आपातकाल' का समावेश: लोकतांत्रिक सीख
8. लिंग चयन निषेध और भारत की 'अधूरी' सामाजिक यात्रा
9. भारतीय कला बाजार का उदय और राजा रवि वर्मा की विरासत
10. विकसित भारत गारंटी रोजगार और आजीविका मिशन (VB-G RAM G)
11. NCB वार्षिक रिपोर्ट 2026: भारत में मादक पदार्थों की तस्करी की चुनौतियां

INDEX

3. राजव्यवस्था और शासन (Polity & Governance)

1. पैदल चलने का अधिकार: संवैधानिक और न्यायिक आयाम
2. जीवन का अधिकार और आघात संबंधी देखभाल (Trauma Care): न्यायिक निर्देश
3. महाराष्ट्र आरटीआई नियम, 2026: एक विवेचनात्मक विश्लेषण
4. चुनाव चिन्ह आवंटन और निर्वाचन आयोग के नियम
5. दलबदल विरोधी कानून और 'विलय अपवाद' की संवैधानिक पहेली
6. CBSE त्रिभाषा सूत्र विवाद:
7. अयोध्या राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामला:
8. आरएसएस (RSS) की कानूनी स्थिति और जवाबदेही का प्रश्न
9. आधार (Aadhaar) और चुनावी शुचिता: न्यायिक विमर्श और वैधानिक सीमाएं
10. वक्फ प्रशासन और शासन की चुनौतियां:
11. नागरिकता प्रमाण के रूप में आधार का उपयोग: न्यायिक संज्ञान

4. अर्थव्यवस्था (ECONOMY)

1. UPI लेनदेन: मई 2026 के रिकॉर्ड आंकड़े
2. बचत खातों से सावधि जमा (FD) की ओर बदलाव
3. अमेरिका का 12.5% टैरिफ प्रस्ताव और भारत
4. ब्लैक मनी एक्ट और पूर्वव्यापी कानून की चुनौतियाँ
5. भारतीय प्रेषण (Remittance): ऐतिहासिक उछाल
6. वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल (WGC) सर्वेक्षण 2026
7. आरबीआई स्वर्ण भंडार: स्पष्टीकरण और स्थिति
8. भारत में मुद्रास्फीति: मई 2026 का आर्थिक विश्लेषण
9. ड्रॉप शिपिंग: एक डिजिटल मध्यस्थता मॉडल
10. FCRA संशोधन 2026 – विनियमन, नियंत्रण और संवैधानिक संतुलन
11. एडीआर रिपोर्ट 2026: राज्यसभा सांसदों की पृष्ठभूमि
12. थोक मूल्य सूचकांक का आधार वर्ष 2011-12 में संशोधन

5. विज्ञान और तकनीक (Science & tech)

1. एआई (AI) सुरक्षा और वैश्विक शासन: 'मायथोस' मॉडल का नया प्रतिमान
2. भारत का सेमीकंडक्टर उद्योग
3. अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड (UPF) और स्वास्थ्य:
4. E85 ईंधन और भारत का इथेनॉल मिश्रण कार्यक्रम:
5. भारत का पवन ऊर्जा संकल्प — 'एम्बिशन टू एक्सेलरेशन' की ओर
6. C-295 विमान कार्यक्रम
7. भारतीय नौसेना में आईएनएस दुनागिरी, आईएनएस संशोधक, और आईएनएस अग्रेय हुए शामिल:
8. स्वदेशी 'नेत्र' एयरबोर्न अर्ली वार्निंग एंड कंट्रोल सिस्टम:
9. प्री-वेंटीबी ट्रायल और टीबी उन्मूलन
10. आदित्य-L1 सौर मिशन: वैज्ञानिक डेटा का दूसरा सेट जारी
11. सॉवरेन एआई: भारत की वैश्विक एआई निर्माता बनने की यात्रा
12. सब-1 नैनोमीटर चिप तकनीक: सेमीकंडक्टर निर्माण में परमाणु-स्तरीय क्रांति
13. भारत की 'कूलिंग डॉक्ट्रिन' और हीटवेव रणनीति:
14. केंद्र सरकार द्वारा 16 निश्चित खुराक संयोजन (FDC) दवाओं पर प्रतिबंध

INDEX

6. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी (Environment & Ecology)

1. भारत में मानसून का सूखा और जलवायु तैयारी
2. अल नीनो तंत्र
3. मैडेन-जूलियन ऑसिलेशन (MJO)
4. हिंद महासागर द्विध्रुव (IOD)
5. ग्रेट निकोबार मेगा-प्रोजेक्ट: विकास और पर्यावरण का संतुलन
6. भारत में अरोरा (अरोरा बोरेलिस) का दृश्य
7. अरावली संरक्षण: उच्च-स्तरीय विशेषज्ञ पैनल का गठन
8. विश्व पर्यावरण दिवस 2026
9. भारत में शहरी अग्निकांड

8. नियुक्तियाँ

1. डॉ. महेश दीक्षित बने इंटेलिजेंस ब्यूरो (IB) के नए निदेशक
2. डॉ. सैबल चट्टोपाध्याय बने राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग के नए अध्यक्ष
3. CBSE के नए चेयरमैन बने लोखंडे प्रशांत सीताराम
4. प्रभजीत सिंह बने OpenAI भारत के प्रबंध निदेशक
5. सौरभ विजय बने इंडियाएआई मिशन के नए सीईओ
6. सर्वोच्च न्यायालय में 5 न्यायाधीशों की नियुक्ति
7. जनरल एनएस राजा सुब्रमणि: भारत के तीसरे चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (CDS)
8. विवेक अग्रवाल बने FATF के नए उपाध्यक्ष
9. तुषार मेहता पुनः नियुक्त: सॉलिसिटर जनरल ऑफ इंडिया
10. तुर्किये में भारत के नए राजदूत

7. प्रमुख सम्मेलन (Important Summits)

1. 52वां G7 शिखर सम्मेलन, 2026
2. शंघाई सहयोग संगठन (SCO) शिखर सम्मेलन 2026
3. 18वां ब्रिक्स (BRICS) शिखर सम्मेलन, 2026
4. पैक्स सिलिका शिखर सम्मेलन 2026

9. चर्चित व्यक्तित्व (Persons in News)

1. अजीत डोभाल
2. जनरल धीरज सेठ: भारत के 31वें थल सेनाध्यक्ष
3. सुदर्शन पटनायक
4. विश्वनाथन आनंद
5. रॉबर्ट फिको
6. नीलकंठ मिश्रा
7. प्रोफेसर जैनेंद्र कुमार जैन
8. कुणाल शाह
9. यानुंग जमोह लेगो
10. सोनम वांगचुक
11. बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

10. खेल-कूद (Sports)

1. राष्ट्रीय खेल प्रशासन अधिनियम, 2025
2. मेंस एशिया कप 2026:
3. SAFF महिला चैंपियनशिप 2026:
3. फीफा (FIFA)
4. आईसीसी महिला टी-20 विश्व कप 2026
5. ग्लासगो राष्ट्रमंडल खेल 2026
6. भारत के सबसे तेज़ एथलीट: गुरिंदरवीर सिंह
7. तैराकी (Swimming): विश्व और भारतीय रिकॉर्ड्स

I. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में सुधार: वैश्विक शासन की अनिवार्यता



चर्चा में क्यों?

- UNSC में 5 नए अस्थायी सदस्य जोड़े गए।
- भारत ने हाल ही में ECOSOC फोरम और UNSC सुधार संबंधी चर्चाओं में वैश्विक वित्तीय संरचना के पुनर्गठन और सुरक्षा परिषद के त्वरित विस्तार की पुरजोर वकालत की है। भारत ने तर्क दिया है कि 1945 की शक्ति संरचना वर्तमान भू-राजनीतिक वास्तविकताओं और 'ग्लोबल साउथ' की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करने में विफल है।

- United Nations Security Council के लिए **2027–2028 कार्यकाल** हेतु चुने गए 5 नए अस्थायी सदस्य ये हैं:
- Austria
- Kyrgyzstan (पहली बार UNSC का सदस्य चुना गया)
- Portugal
- Trinidad and Tobago
- Zimbabwe
- इनका **2 वर्ष का कार्यकाल। जनवरी 2027 से 31 दिसंबर 2028** तक रहेगा। ये सदस्य क्रमशः Denmark, Greece, Pakistan, Panama और Somalia का स्थान लेंगे।



Fact

- **पहली बार चुना गया देश:** Kyrgyzstan
- **कार्यकाल:** 2027–2028
- **चुनाव:** United Nations General Assembly द्वारा जून 2026 में आयोजित।

मुख्य विवरण

- **संरचनात्मक विसंगतिः** 1945 में संयुक्त राष्ट्र के 51 सदस्य थे, जो अब बढ़कर 193 हो गए हैं। इसके बावजूद UNSC की संरचना में मात्र एक बार (1965) विस्तार किया गया है।
- **प्रतिनिधित्व का अभावः** अफ्रीका और लैटिन अमेरिका का स्थायी प्रतिनिधित्व शून्य है। वर्तमान संरचना केवल द्वितीय विश्व युद्ध के विजेताओं का वर्चस्व दर्शाती है।
- **वीटो पावर की बाधाः** P-5 (अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, चीन) के पास वीटो शक्ति है, जो अक्सर मानवीय संकटों (जैसेः सीरिया, यूक्रेन) के समय वैश्विक शांति प्रयासों को अवरुद्ध करने का उपकरण बन जाती है।

सुधार हेतु G-4 प्रस्ताव (2024)

- जी-4 राष्ट्रों (भारत, ब्राजील, जर्मनी, जापान) ने UNSC के लिए व्यापक सुधार प्रस्ताव पेश किए हैं:
- **विस्तारित सदस्यता:** परिषद में कुल 11 स्थायी और 14-15 अस्थायी सदस्य हों।
- **समान क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व:** अफ्रीका, एशिया-प्रशांत, लैटिन अमेरिका और कैरेबियन, तथा पश्चिमी यूरोप और अन्य राज्यों के बीच 6 नई स्थायी सीटें वितरित की जाएं।
- **वीटो का प्रावधान:** नए स्थायी सदस्यों को शुरुआती 15 वर्षों तक वीटो का अधिकार नहीं होगा, जिसके बाद इस प्रावधान की समीक्षा की जाएगी।

प्रमुख समूह

- G-4: भारत, ब्राजील, जर्मनी और जापान (स्थायी सदस्यता के प्रमुख दावेदार)।
- L.69 समूह: सुधार समर्थक विकासशील देशों का समूह।
- कॉफी क्लब: इटली और पाकिस्तान के नेतृत्व वाला समूह, जो स्थायी सीटों के विस्तार का विरोध करता है।

संयुक्त राष्ट्र (UN): एक अवलोकन

- स्थापना: 24 अक्टूबर 1945 (मुख्यालय: न्यूयॉर्क)।
- प्रमुख उद्देश्य: अंतर्राष्ट्रीय शांति, सुरक्षा, मैत्रीपूर्ण संबंध और सामाजिक प्रगति।

- **6 प्रमुख अंग:** UNSC, महासभा (UNGA), आर्थिक और सामाजिक परिषद (ECOSOC), अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय, न्यास परिषद (निष्क्रिय), और सचिवालय।
- **कार्यप्रणाली:** केवल UNSC के प्रस्ताव सदस्य देशों के लिए 'बाध्यकारी' होते हैं।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC): संरचना

- **वर्तमान संरचना:** 5 स्थायी सदस्य (P5) और 10 अस्थायी सदस्य (2 वर्ष का कार्यकाल)।
- **अस्थायी सदस्य चयन:** महासभा द्वारा क्षेत्रीय आधार पर। (भारत अब तक 8 बार निर्वाचित)।
- **शांति स्थापना:** 'ब्लू हेलमेट्स' के माध्यम से संघर्ष समाधान। (भारत सबसे बड़ा योगदानकर्ता)।

2.भारत-वेनेजुएला संबंध: ऊर्जा सुरक्षा और भू-राजनीतिक पुनर्संतुलन



चर्चा में क्यों?

- 4 जून, 2026 को वेनेजुएला की कार्यवाहक राष्ट्रपति डेलसी एलोइना रोड्रिगेज गोमेज़ की भारत यात्रा ने दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों के एक नए युग का सूत्रपात किया है।

पृष्ठभूमि और प्रमुख घटनाक्रम

- **नेतृत्व परिवर्तनः** जनवरी 2026 में निकोलस मादुरो की अमेरिकी बलों द्वारा हिरासत के बाद डेलसी रोड्रिगेज वेनेजुएला का नेतृत्व कर रही हैं।
- **ऐतिहासिक संदर्भः** 2020 से पूर्व भारत वेनेजुएला के भारी कच्चे तेल का प्रमुख आयातक था (लगभग 4,00,000 बैरल प्रतिदिन), जिसे बाद में अमेरिकी प्रतिबंधों के कारण रोक दिया गया था।

- **वर्तमान स्थिति:** पश्चिम एशिया संकट के कारण उत्पन्न आपूर्ति बाधाओं के बीच भारत ने पुनः वेनेजुएला से तेल खरीद शुरू की है।
- **भारत के लिए रणनीतिक निहितार्थ:** पश्चिम एशिया में अस्थिरता के कारण अपनी ऊर्जा टोकरी को सुरक्षित करने हेतु वेनेजुएला के भारी कच्चे तेल का चयन, जो भारतीय रिफाइनरियों के लिए अत्यधिक उपयुक्त है।

वेनेजुएला के बारे में

- **अवस्थिति:** दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के उत्तरी तट पर स्थित।
- **सीमाएँ:** उत्तर में कैरेबियन सागर, पूर्व में गुयाना, दक्षिण में ब्राजील और पश्चिम में कोलंबिया।

- **राजधानी:** काराकास।
- **मुद्रा:** बोलिवार सोबेरानो या डिजिटल बोलिवार।
- **तेल भंडार:** दुनिया का सबसे बड़ा प्रमाणित कच्चा तेल भंडार वेनेजुएला में है।
- **ओपेक (OPEC):** यह पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन (OPEC) का संस्थापक सदस्य है।
- **एंजेल फॉल्स:** दुनिया का सबसे ऊँचा जलप्रपात, जो चुरुन नदी (ओरिनोको की सहायक नदी) पर स्थित है।
- **मराकाइबो झील:** दक्षिण अमेरिका की सबसे बड़ी झीलों में से एक, जो अपने विशाल तेल भंडारों के लिए प्रसिद्ध है।

3. लाल सागर में हूती विद्रोहियों का संकट



चर्चा में क्यों?

- यमन के ईरान-समर्थित हूती विद्रोहियों द्वारा लाल सागर में इजरायली जहाजों पर 'पूर्ण प्रतिबंध' की घोषणा और मिसाइल हमलों ने पश्चिम एशिया में सुरक्षा चिंताओं को और गहरा दिया है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- **उदय:** हूती विद्रोहियों का उद्भव 1990 के दशक में यमन के 'जैदी शिया' समुदाय के 'अंसार अल्लाह' आंदोलन के रूप में हुआ।
- **वर्तमान स्थिति:** 2014 में राजधानी सना पर कब्जे के बाद, ये यमन के बड़े हिस्से को नियंत्रित कर रहे हैं और ईरान समर्थित 'एक्सिस ऑफ रेजिस्टेंस' का प्रमुख हिस्सा हैं।

लाल सागर और स्वेज नहर का रणनीतिक महत्व

- **व्यापारिक गलियारा:** वैश्विक व्यापार का 12% और समुद्री कंटेनर यातायात का 15% इसी मार्ग से होता है।
- **वैकल्पिक मार्ग:** हूती हमलों के डर से जहाजों का अफ्रीका के दक्षिणी सिरे (केप ऑफ गुड होप) से गुजरना, यात्रा में 10-20 दिन की अतिरिक्त देरी और ईंधन लागत में भारी वृद्धि का कारण बन रहा है।

परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण बिन्दु :

- **भौगोलिक क्षेत्र** - **लाल सागर**
- **महत्वपूर्ण तथ्य** · यह अफ्रीका और एशिया महाद्वीपों के मध्य स्थित एक संकीर्ण जल निकाय है।
- इसकी सीमा कुल 6 देशों से लगती है—मिस्र, सूडान, इरिट्रिया, जिबूती, सऊदी अरब और यमन।
- यह वैश्विक 'रिफ्ट वैली' (दरार घाटी) का हिस्सा है और अत्यधिक खारे पानी के लिए जाना जाता है।



बाब-अल-मंडेब जलडमरूमध्य

- यह रणनीतिक चोक पॉइंट लाल सागर को अदन की खाड़ी (अरब सागर) से जोड़ता है।
- जलमार्ग की भौगोलिक कठिनाइयों के कारण इसे 'आँसुओं का द्वार' भी कहा जाता है।
- यह यमन, जिबूती और इरिट्रिया के मध्य स्थित है, जो वर्तमान में हूती संकट का मुख्य केंद्र है।



स्वेज नहर

- यह मिस्र (Egypt) के नियंत्रण में स्थित एक कृत्रिम जलमार्ग है, जो लाल सागर को भूमध्य सागर से जोड़ता है।
- यह एशिया और यूरोप के बीच का सबसे छोटा समुद्री मार्ग है, जो यात्रा की दूरी को लगभग 7,000 किलोमीटर कम करता है।



हॉर्मुज जलडमरूमध्य

- यह संवेदनशील जलमार्ग फारस की खाड़ी को ओमान की खाड़ी से जोड़ता है।
- यह ओमान और ईरान के बीच स्थित है। वैश्विक कच्चे तेल के कुल समुद्री व्यापार का एक-तिहाई हिस्सा इसी चोक पॉइंट से होकर गुजरता है।



5. यूरोपीय संघ (EU) का 21वां प्रतिबंध पैकेज और भारत



चर्चा में क्यों?

- EU द्वारा रूस पर प्रस्तावित यह पैकेज ऊर्जा, वित्तीय सेवाओं और 'दोहरे उपयोग' वाली वस्तुओं को लक्षित करता है। यह भारत के लिए कूटनीतिक चुनौती है क्योंकि इसमें कुछ भारतीय संस्थाओं का नाम भी कथित तौर पर शामिल है।

प्रमुख बिंदु:

- **लक्षित क्षेत्र:** रूस की 'युद्ध अर्थव्यवस्था', 'शैडो फ्लीट' (30 जहाज), 3। रूसी बैंक और निर्यात नियंत्रण (ड्रोन/रक्षा-अंतरिक्ष सामग्री)।

भारत के लिए चुनौतीः

- इसमें कुछ भारतीय संस्थाओं का नाम कथित तौर पर शामिल होना भारत की 'रणनीतिक स्वायत्तता' और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में उसकी विश्वसनीयता के लिए एक परीक्षा है।
- भारत सरकार को कूटनीतिक माध्यमों से यह प्रमाणित करना होगा कि भारतीय संस्थाएं केवल वैध और अंतरराष्ट्रीय नियमों के अनुरूप व्यापार कर रही हैं।
- भारतीय कंपनियों को अपने व्यापारिक नेटवर्क की जांच-परख कड़ी करनी होगी ताकि अनजाने में भी प्रतिबंधित संस्थाओं के साथ लेन-देन न हो।

भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौता:

- जनवरी 2026 में संपन्न वार्ता के बाद, यह समझौता वर्तमान में 'विधिक परिशोधन' (Legal Scrubbing) और अनुसमर्थन (Ratification) की प्रक्रिया में है। इसे 16वें भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन में घोषित किया गया था।

महत्वपूर्ण बिन्दु:

- वार्ता 2007 में शुरू हुई, 2013 में स्थगित और 2022 में पुनः प्रारंभ हुई।
- **बाजार पहुंच (यूरोपीय संघ):** भारत के 99.5% निर्यात को कवर करने हेतु 97% टैरिफ लाइनों को शून्य शुल्क के साथ खोला गया है।

- **बाजार पहुंच (भारत):** भारत ने 92.1% टैरिफ लाइनों (यूरोपीय संघ के 97.5% निर्यात को कवर) पर बाजार पहुंच दी है।
- **प्रमुख लाभ क्षेत्र:** कपड़ा, परिधान, चमड़ा, फुटवियर, समुद्री उत्पाद, रसायन और इंजीनियरिंग सामान। इन पर वर्तमान में 4%-26% शुल्क लगता है, जिसे शून्य किया जाएगा।
- **संवेदनशील क्षेत्रों का संरक्षण:** दुग्ध उत्पाद, अनाज और कुक्कुट जैसे संवेदनशील कृषि क्षेत्रों को समझौते से बाहर रखकर सुरक्षित किया गया है।
- **बौद्धिक संपदा (IPR):** TRIPS-संगत संरक्षण के साथ भारत के जेनेरिक दवा उद्योग और पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (TKDL) को पूर्ण सुरक्षा।

- **सेवा क्षेत्रः** IT/ITES और पेशेवर सेवाओं सहित 144 सेवा उप-क्षेत्रों में व्यापक प्रतिबद्धताएं।

रणनीतिक एवं अन्य आयामः

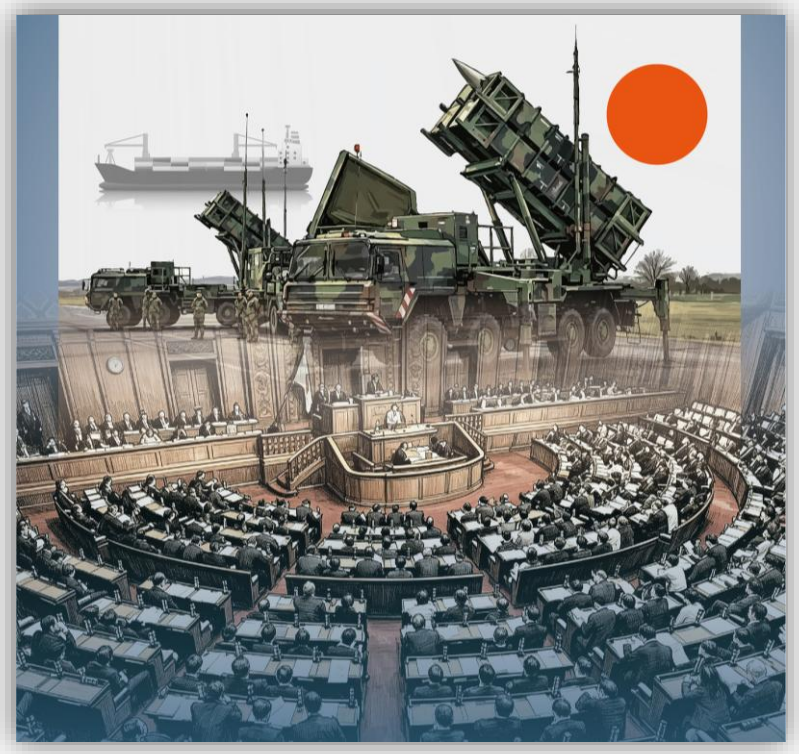
- **सुरक्षा एवं रक्षा साझेदारीः** FTA के साथ-साथ 'भारत-यूरोपीय संघ सुरक्षा और रक्षा साझेदारी' पर भी हस्ताक्षर। यह जापान और दक्षिण कोरिया के बाद एशिया में EU का तीसरा SDP है।
- **श्रम-शक्ति का सशक्तिकरणः** 5 वर्षों के भीतर सामाजिक सुरक्षा समझौतों और भारतीय छात्रों के लिए 'पोस्ट-स्टडी वर्क वीजा' की रूपरेखा।

- **आर्थिक महत्वः** 'चाइना-प्लस-वन' रणनीति को मजबूती। वैश्विक GDP के 25% हिस्से वाले बाजार तक भारत की सुगम पहुंच।
- **तकनीकी सहयोगः** सेनेटरी एंड फाइटोसैनेटरी (SPS) और तकनीकी व्यापार बाधाओं (TBT) पर सहयोग।

चुनौतियां और समाधानः

- **गैर-शुल्क बाधाएंः** CBAM (कार्बन टैक्स) और EUDR (वनोन्मूलन विनियमन)।
- **समाधानः** 'त्वरित प्रतिक्रिया मंच', विशेष छूट और परिवर्तन अवधि का प्रस्ताव।

5. जापान का रक्षा कायाकल्पः शांतिवाद से 'सक्रिय निवारण' की ओर एक संक्रमण



चर्चा में क्यों?

- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से 'शांतिवाद' को अपना मूल राष्ट्रीय चरित्र मानने वाला जापान, क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों और भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं के कारण अपनी रक्षा नीति में ऐतिहासिक बदलाव कर रहा है। इसमें रक्षा बजट को GDP के 1% से बढ़ाकर 2% करना और घातक हथियारों के निर्यात पर से प्रतिबंध हटाना शामिल है।

ऐतिहासिक संदर्भ

- **योशिदा सिद्धांत (1951):** जापान ने अपनी सुरक्षा की जिम्मेदारी अमेरिका को सौंपकर आर्थिक पुनरुद्धार पर ध्यान केंद्रित किया।

- **अनुच्छेद 9 (शांतिवादी खंड):** जापानी संविधान का यह खंड युद्ध और सेना रखने के अधिकार का त्याग करता है।
- **आबे युग (2014-15):** तत्कालीन प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने 'सामूहिक आत्मरक्षा' की व्याख्या का विस्तार कर जापानी सेना के उपयोग का मार्ग प्रशस्त किया।

वर्तमान बदलाव के प्रमुख कारक

- चीन का बढ़ता समुद्री प्रभुत्व और उत्तर कोरिया के निरंतर मिसाइल परीक्षण।
- सुरक्षा गारंटी को लेकर संशय ने टोक्यो को रक्षा क्षमताओं के स्वतंत्र सुदृढ़ीकरण पर मजबूर किया है।
- यूरेशिया में चीन, रूस, ईरान और उत्तर कोरिया की बढ़ती रणनीतिक साझेदारी।

रक्षा नीति के प्रमुख स्तंभ

- घातक हथियारों के निर्यात से प्रतिबंध हटाना, ताकि रक्षा औद्योगिक आधार मजबूत हो सके।
- ग्युक्यु द्वीप श्रृंखला को 'मिसाइल आउटपोस्ट' में बदलना और 2030 तक सतह-से-हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणालियों की तैनाती।
- रक्षा कंपनियों को वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धी बनाना।

जापान के बारे में

- यह मुख्य रूप से होक्काइडो, होन्शू, शिकोकू और क्यूशू द्वीपों से मिलकर बना है।

- यह 'रिंग ऑफ फायर' पर स्थित है, जहाँ माउंट फूजी सबसे ऊँचा ज्वालामुखी है।
- त्सुगारू जलडमरूमध्य होक्काइडो-होन्शू को अलग करता है, जबकि कोरिया जलडमरूमध्य जापान और दक्षिण कोरिया के बीच स्थित है।
- यहाँ की गर्म 'कुरोशियो' और ठंडी 'ओयाशियो' धाराओं का मिलन क्षेत्र दुनिया के सबसे समृद्ध मछली पकड़ने वाले केंद्रों का निर्माण करता है।

6. 'इंडिया-फ्रांस इनोवेशन रोडमैप 2030'

1. India AI Impact Summit
2. Bharat Innovates Summit
3. Viva Tech Summit
4. India France Innovation year



चर्चा में क्यों?

- 17 फरवरी 2026 को भारत-फ्रांस नवाचार वर्ष और 'इंडिया-फ्रांस इनोवेशन रोडमैप 2030' की शुरुआत की गई है। यह 'विकसित भारत 2047' और 'फ्रांस 2030' की महत्वाकांक्षाओं का संगम है।

साझेदारी के चार प्रमुख स्तंभः

- विश्वसनीय एआई (AI): सुरक्षित, नैतिक और मानवाधिकारों के अनुरूप एआई प्रणालियों पर जोर; 'एआई इम्पैक्ट समिट 2026' के माध्यम से 'सेफ्टी-बाय-डिजाइन' मानकों का विकास।
- अकादमिक एवं प्रतिभा साझेदारी: 2030 तक 30,000 भारतीय छात्रों को फ्रांस भेजने का लक्ष्य; 'शैक्षणिक योग्यताओं की पारस्परिक मान्यता' (MRQ) और डॉक्टरेट को-सुपरविज़न का विस्तार।

- **तकनीकी आत्मनिर्भरता:** 'इंडिया-फ्रांस इनोएक्सचेंज ब्रिज' और कानपुर में 'एरोनॉटिकल ट्रेनिंग कैंपस' की स्थापना; निजी स्पेस इकोसिस्टम के बीच सहयोग।
- **स्वास्थ्य नवाचार:** भारत के 'डीईपीए' (DEPA) और फ्रांस के 'हेल्थ डेटा हब' के माध्यम से सुरक्षित डेटा साझाकरण आर्किटेक्चर का विकास।

भारत-फ्रांस संबंध:

- हाल ही में फरवरी 2026 में फ्रांसीसी राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान द्विपक्षीय संबंधों को अपग्रेड कर 'विशेष वैश्विक रणनीतिक साझेदारी' का दर्जा दिया गया है। वर्ष 2026 को 'नवाचार वर्ष' (Year of Innovation) के रूप में मनाया जा रहा है।

सहयोग के प्रमुख स्तंभः

रक्षा एवं सुरक्षाः

- फ्रांस रूस के बाद भारत का दूसरा सबसे बड़ा रक्षा आपूर्तिकर्ता है।
- **प्रमुख परियोजनाएंः** राफेल-मरीन विमान सौदा, टाटा-एयरबस साझेदारी (H125 हेलीकॉप्टर), और मझगांव डॉक में प्रोजेक्ट-75 (स्कॉर्पीन पनडुब्बी)।
- **सैन्य अभ्यासः** वरुण (नौसेना), गरुड़ (वायुसेना), शक्ति (थलसेना)।

- **परमाणु ऊर्जा:** जैतापुर परमाणु ऊर्जा परियोजना (9,900 MW) और स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर्स (SMRs) पर कार्य।
- **डिजिटल:** फ्रांस UPI को स्वीकार करने वाला पहला यूरोपीय देश है, जिसका विस्तार अब पेरिस और नीस हवाई अड्डों तक किया गया है।
- **रणनीतिक स्वायत्तता:** यह संबंधों का मूल दर्शन है। 1998 के पोखरण परीक्षणों के बाद, बिना प्रतिबंध लगाए भारत का समर्थन करने वाला फ्रांस एकमात्र प्रमुख पश्चिमी देश था।

महत्वपूर्ण संयुक्त पहलः

- **होराइजन 2047:** साझेदारी की 25वीं वर्षगांठ पर लॉन्च रोडमैप, जो 2047 तक के संबंधों की दिशा तय करेगा।
- **रक्षा औद्योगिक रोडमैपः** सैन्य हार्डवेयर के सह-डिजाइन और सह-विकास हेतु।
- **भारत-फ्रांस AI रोडमैपः** सुरक्षित और भरोसेमंद AI के विकास हेतु।
- **अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA):** 2015 में दोनों देशों द्वारा सह-स्थापना।

7. ब्रिटेन का सोशल मीडिया प्रतिबंध और वैश्विक बहस



चर्चा में क्यों?

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री कीयर स्टार्मर ने 2027 से 16 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए सोशल मीडिया और 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए एआई (AI) चैटबॉट्स पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की घोषणा की है।

नीति के मुख्य बिंदु:

- आधार: 1,16,000 प्रतिक्रियाओं वाले जन-परामर्श और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं।
- उद्देश्य: 'एडिक्टिव डिजाइन' और हानिकारक एल्गोरिदम पर प्रहार करना।
- दृष्टिकोण: तकनीक को 'सुरक्षित-डिजाइन' बनाने के लिए राज्य का हस्तक्षेप अनिवार्य माना गया है।

भारत की रणनीति और सक्रियता:

- **राज्य-स्तरीय पहल:** कर्नाटक (16 वर्ष से कम) और आंध्र प्रदेश (13 वर्ष से कम) द्वारा आयु सीमा की घोषणा।
- **राष्ट्रीय ढांचा:** DPDP अधिनियम (2023) के तहत 18 वर्ष से कम आयु के लिए अभिभावकों की सहमति अनिवार्य।
- **दृष्टिकोण:** भारत 'पूर्ण प्रतिबंध' के बजाय आयु आधारित आईडी वेरिफिकेशन, कड़े पैरेंटल कंट्रोल और 'ग्रेडेड अप्रोच' पर विचार कर रहा है।
- **व्यवहार परिवर्तन:** कर्नाटक का "मोबाइल छोड़ो, किताब पकड़ो" जैसा जागरूकता अभियान।

8. प्रोजेक्ट 'निम्बस': तकनीक, नैतिकता और भू-राजनीति



चर्चा में क्यों?

- गूगल और अमेज़न द्वारा इजरायल सरकार को प्रदान की जा रही । बिलियन डॉलर की 'प्रोजेक्ट निम्बस' क्लाउड सेवा परियोजना, अपने कथित सैन्य उपयोग और मानवाधिकार संबंधी चिंताओं के कारण वैश्विक विवाद का केंद्र बनी हुई है।

प्रोजेक्ट निम्बस के बारे में:

- यह इजरायल सरकार, उसके मंत्रालयों और सरकारी संस्थाओं हेतु एक उच्च-सुरक्षा वाला क्लाउड कंप्यूटिंग अनुबंध है।
- इसका विकास गूगल क्लाउड प्लेटफॉर्म और अमेज़न वेब सर्विसेज (AWS) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया है।

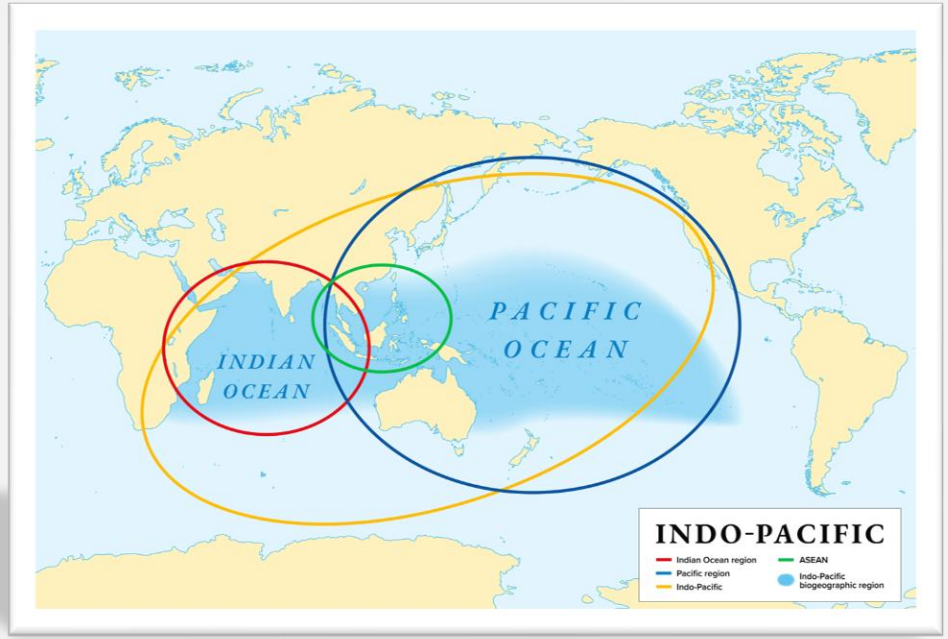
- इसका उद्देश्य इजरायली सार्वजनिक क्षेत्र के बुनियादी ढांचे का डिजिटलीकरण और आधुनिकीकरण; डेटा स्टोरेज, मशीन लर्निंग (ML) और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) सेवाएं प्रदान करना है।
- इसकी प्रारंभिक अवधि 7 वर्ष की है, जिसे 23 वर्षों तक बढ़ाने का प्रावधान है।
- **विवाद के बिंदु:** प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि क्लाउड सेवाएं इजरायली सैन्य अभियानों और निगरानी में सहायक हो सकती हैं। साथ ही, अनुबंध की शर्तों में इजरायली सरकारी इकाइयों द्वारा सेवाओं के उपयोग पर 'गैर-प्रतिबंध' की शर्त ने कंपनियों की जवाबदेही पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है।
- **कंपनियों का रुख:** गूगल और अमेज़न का दावा है कि क्लाउड वर्कलोड का सीधा संबंध सैन्य हथियारों या खुफिया ऑपरेशनों से नहीं है।

१. 'इंडो-पैसिफिक' से 'पैसिफिक': अमेरिकी रणनीतिक बदलाव



चर्चा में क्यों?:

- अमेरिकी रक्षा विभाग द्वारा 'यूएस इंडो-पैसिफिक कमांड' का नाम बदलकर पुनः 'यूएस पैसिफिक कमांड' (USPACOM) कर दिया गया है। यह 2018 के ट्रम्प प्रशासन के उस निर्णय को उलटता है, जिसने हिंद महासागर के महत्व को वैश्विक रणनीतिक मानचित्र पर केंद्र में रखा था।



मुख्य विवरण:

- **ऐतिहासिक संदर्भ:** USPACOM अमेरिका का सबसे पुराना (स्थापना: 1947) और सबसे बड़ा एकीकृत लड़ाकू कमांड है। 2018 में 'इंडो-पैसिफिक' नामकरण भारत के उदय और हिंद-प्रशांत कनेक्टिविटी को रेखांकित करने हेतु किया गया था।
- **रणनीतिक बदलाव:** नाम से 'इंडो' शब्द हटाना यह संकेत देता है कि वाशिंगटन का प्राथमिक फोकस अब हिंद महासागर की तुलना में पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र और दक्षिण चीन सागर में चीन को नियंत्रित करने पर केंद्रित हो गया है।
- **परिचालन सीमा:** पेंटागन के अनुसार, नाम बदलने के बावजूद इस कमांड का 'जिम्मेदारी क्षेत्र' (AOR) अमेरिका के पश्चिमी तट से भारत की पश्चिमी सीमा तक अपरिवर्तित रहेगा।

महत्वः

- ***क्वाड (QUAD) और कूटनीतिक संकेतः*** *'इंडो' शब्द हटने से क्वाड (भारत, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया) के भविष्य और इसके 'इंडो-पैसिफिक' केंद्रित वैचारिक आधार पर प्रश्नचिह्न लग सकते हैं। यह भारत के लिए वाशिंगटन की रणनीतिक ऊर्जा के स्थानांतरण का एक सूक्ष्म संकेत है।*
- ***रणनीतिक शून्यताः*** *हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में सुरक्षा जिम्मेदारी को लेकर एक 'वैक्यूम' पैदा हो सकता है।*
- ***भारत के लिए विकल्पः*** *भारत को अपनी समुद्री सुरक्षा हेतु केवल अमेरिका पर निर्भर रहने के बजाय 'रणनीतिक स्वायत्तता' को प्राथमिकता देनी होगी। भारत को IOR में 'नेट सिक्योरिटी प्रोवाइडर' के रूप में फ्रांस, यूके और आसियान जैसे क्षेत्रीय भागीदारों के साथ सहयोग बढ़ाना अनिवार्य होगा।*

अतिरिक्त जानकारी:

- **इंडो-पैसिफिक अवधारणा:** यह अफ्रीका के पूर्वी तट से अमेरिका के पश्चिमी तट तक फैला है, जहाँ से वैश्विक समुद्री व्यापार का 60% से अधिक हिस्सा गुजरता है।

प्रमुख सुरक्षा ढांचे:

- **QUAD:** मुक्त, खुले और समावेशी क्षेत्र हेतु गठबंधन।
- **AUKUS:** ऑस्ट्रेलिया, यूके, अमेरिका त्रिपक्षीय सुरक्षा गठबंधन।
- **IORA:** हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (आर्थिक सहयोग)।
- **भारत का दृष्टिकोण:** भारत की 'SAGAR' (Security and Growth for All in the Region) नीति और UNCLOS (अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानून) आधारित सुरक्षा पर बल।

10. कीर स्टारमर का इस्तीफा और ब्रिटेन का बदलता राजनीतिक परिदृश्य



चर्चा में क्यों?

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री कीर स्टारमर ने पद और लेबर पार्टी के नेतृत्व से इस्तीफा दे दिया है। 2024 में 412 सीटों के प्रचंड बहुमत से सत्ता में आने के दो वर्ष के भीतर ही सरकार का पतन यूके के गहरे राजनीतिक व आर्थिक संकट को दर्शाता है।

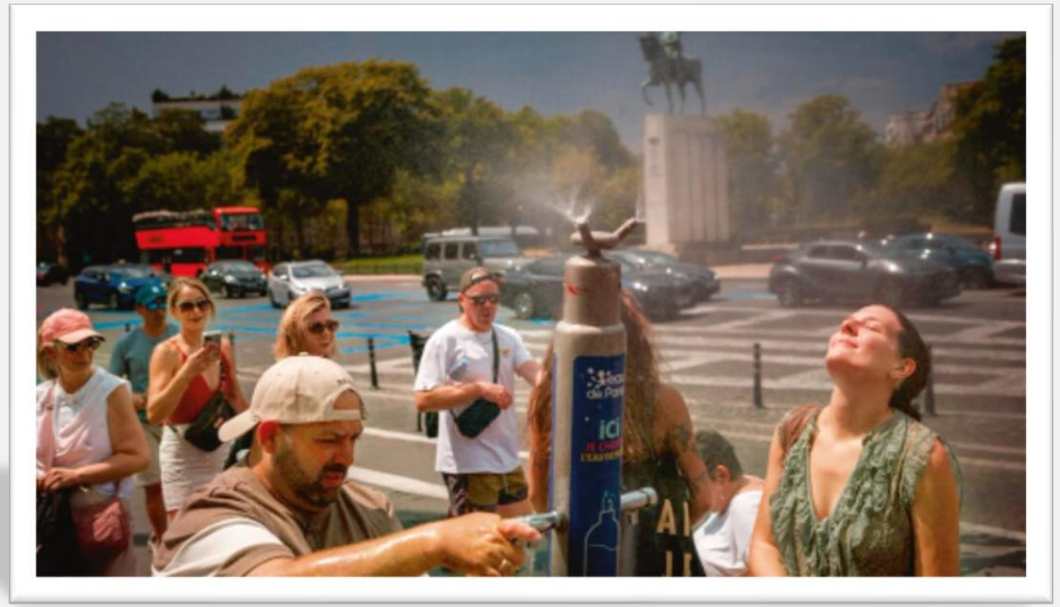
स्टारमर के पतन के प्रमुख कारण

- **घरेलू नीतिगत विफलताएं:** 'फ्रीबीज़ गेट', पेंशन सब्सिडी में कटौती, 1,700 कैदियों की समयपूर्व रिहाई और स्वास्थ्य सेवा की बदहाली ने सरकार की साख गिराई।
- **वैचारिक असंतोष:** 'दो-बच्चे लाभ कैप' जैसे मुद्दों पर पार्टी के भीतर विरोध और पारंपरिक वोट बैंक का 'ग्रीन पार्टी' की ओर झुकाव।
- **ब्रेक्सिट का प्रभाव:** आर्थिक संकुचन, मुद्रास्फीति और व्यापारिक जटिलताओं के कारण अर्थव्यवस्था की नाजुक स्थिति।
- **राजनीतिक चुनौती:** नाइजेल फराज की 'रिफॉर्म यूके' पार्टी के उदय से पारंपरिक द्विदलीय प्रणाली को चुनौती।

तुलनात्मक विश्लेषण: भारत बनाम यूके संसदीय प्रणाली

मानदंड	ब्रिटेन (UK)	भारत
सर्वोच्चता	संसद की संप्रभुता सर्वोच्च है।	संविधान की सर्वोच्चता।
राज्य प्रमुख	वंशानुगत राजतंत्र	निर्वाचित राष्ट्रपति (गणतंत्र)।
मंत्रियों की पात्रता	केवल वर्तमान MP ही मंत्री बन सकते हैं।	गैर-MP 6 महीने तक मंत्री रह सकता है।
PM की सदस्यता	अनिवार्य रूप से 'हाउस ऑफ कॉमन्स' से।	किसी भी सदन (लोकसभा या राज्यसभा) से।
शैडो कैबिनेट	आधिकारिक व्यवस्था (विपक्ष द्वारा)।	कोई आधिकारिक व्यवस्था नहीं।
दलबदल कानून	अनुपस्थित (सांसद स्वतंत्र मत दे सकते हैं)।	10वीं अनुसूची (व्हिप उल्लंघन पर सदस्यता रद्द)।
कानूनी जिम्मेदारी	मंत्रियों की कानूनी जिम्मेदारी होती है।	मंत्रियों की कोई कानूनी जिम्मेदारी नहीं।

II. यूरोप का 'हीटवेव संकट' (2026)

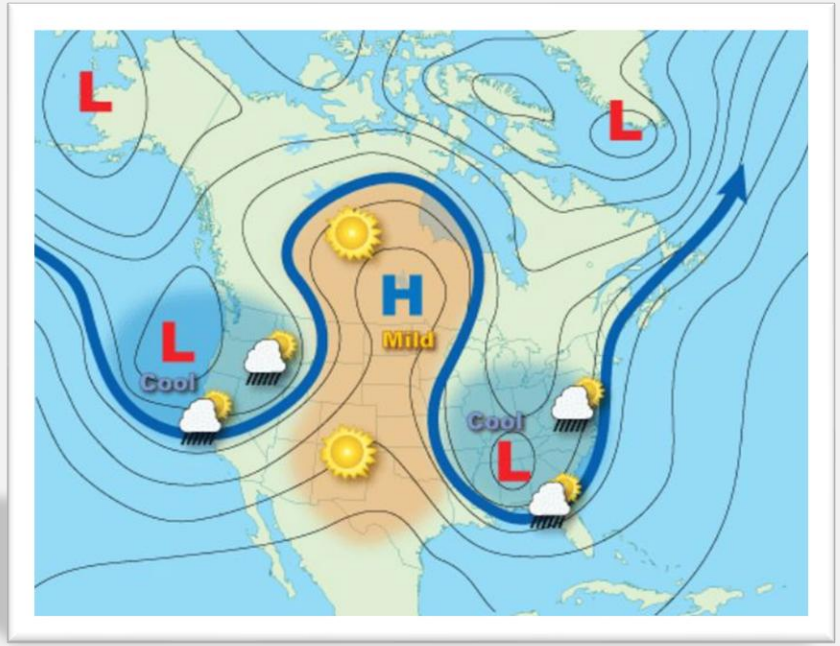


चर्चा में क्यों?

- जून 2026 में पश्चिमी यूरोप (फ्रांस, यूके, इटली, नीदरलैंड) में तापमान 44.3°C तक पहुँच गया है। यह संकट महज एक मौसमी घटना नहीं, बल्कि यूरोप की 'संरचनात्मक जलवायु भेद्यता' का प्रमाण है, जिसे मुख्य रूप से वायुमंडलीय 'ओमेगा ब्लॉक' ने प्रेरित किया है।

ओमेगा ब्लॉक: घटना और प्रक्रिया

- यह एक ग्रीक अक्षर 'Ω' के आकार का वायुमंडलीय दबाव पैटर्न है:
- **प्रक्रिया:** जेट स्ट्रीम के प्रवाह में बड़े मोड़ (Bends) आने से इसका निर्माण होता है।
- **दबाव तंत्र:** एक उच्च-दबाव क्षेत्र दो निम्न-दबाव क्षेत्रों के बीच फंसकर 'ढक्कन' की तरह कार्य करता है।
- **परिणाम:** यह गर्म हवा को सतह के पास रोक देता है, जिससे 'कंप्रेशनल हीटिंग' होती है और वर्षा की संभावना पूरी तरह खत्म हो जाती है।

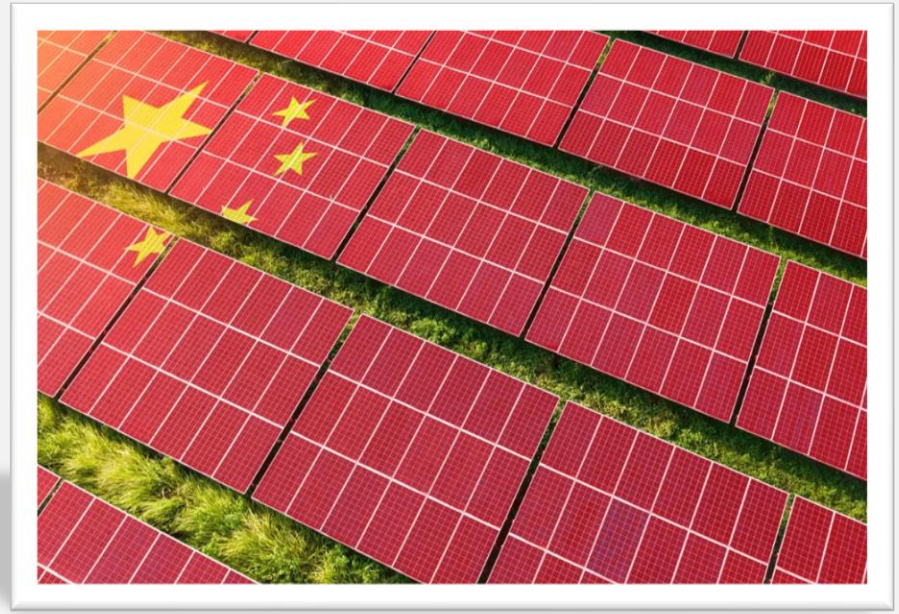


यूरोप की त्वरित उष्णता के लिए जिम्मेदार 'संरचनात्मक कारक'

- **शहरी ऊष्मा द्वीपः** कंक्रीट संरचनाओं द्वारा ऊष्मा का अवशोषण और उसे लंबे समय तक बनाए रखना।
- **अल्बेडो प्रभाव का क्षरणः** आर्कटिक में ग्लेशियरों के पिघलने से सौर विकिरण का परावर्तन कम होना और गहरे पानी द्वारा अधिक ऊष्मा अवशोषण।
- **ऐतिहासिक बुनियादी ढांचाः** पुरानी इमारतें, जो ठंड को रोकने के लिए बनी थीं, अब एयर कंडीशनिंग के अभाव में 'तंदूर' (Ovens) की तरह काम कर रही हैं।

- ***भौगोलिक स्थितिः*** *उच्च अक्षांशों पर लंबी अवधि के दिन होने से जमीन और इमारतों को रात में ठंडा होने का पर्याप्त समय नहीं मिलता।*
- *यूरोप की वृद्ध जनसंख्या इस संकट को 'स्वास्थ्य आपातकाल' में बदल रही है। गर्मी के प्रति शारीरिक सहनशीलता कम होने के कारण बढ़ती मृत्यु दर ने स्वास्थ्य प्रणालियों पर भारी दबाव डाल दिया है।*

12. चीन की नई ऊर्जा योजना (2026-30)



चर्चा में क्यों?

- चीन ने जून 2026 में अपनी नई पांच-वर्षीय ऊर्जा योजना जारी की है, जिसका लक्ष्य 2030 तक अपनी बिजली उत्पादन क्षमता का 50% हिस्सा 'गैर-जीवाश्म स्रोतों' से प्राप्त करना है।

चीन की नई ऊर्जा योजना (2026-30) के प्रमुख बिंदु

- **ऊर्जा मिश्रण:** गैर-जीवाश्म बिजली उत्पादन का लक्ष्य 2025 के 41% से बढ़ाकर 2030 तक 50% करना।
- **पवन और सौर ऊर्जा:** स्थापित क्षमता का 50% से अधिक (लगभग 2,700 GW) हिस्सा पवन और सौर ऊर्जा से होगा।

- **ग्रिड लचीलापन और ईवी:** वाहन-से-ग्रिड (V2G) क्षमता को 2030 तक 50 GW तक पहुंचाना और चार्जिंग स्टेशनों की संख्या बढ़ाकर 4 करोड़ करना।
- **हाइड्रोजन और परमाणु ऊर्जा:** नवीकरणीय हाइड्रोजन उत्पादन को 2 मिलियन टन प्रति वर्ष और परमाणु ऊर्जा क्षमता को 110 GW करने का लक्ष्य।

भारत बनाम चीन: नवीकरणीय ऊर्जा और हरित संक्रमण

तुलना के मानदंड	चीन की रणनीति (2026-30)	भारत की रणनीति (2030 लक्ष्य)
नेट-ज़ीरो लक्ष्य	2060 तक पूर्ण कार्बन तटस्थता।	2070 तक नेट-ज़ीरो उत्सर्जन।
2030 क्षमता लक्ष्य	2,700 GW से अधिक (पवन/सौर)।	500 GW गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता।
हरित हाइड्रोजन	2 मिलियन टन प्रति वर्ष।	5 मिलियन टन प्रति वर्ष।

भारत में नवीकरणीय ऊर्जा का वर्तमान परिदृश्य (जून 2026 तक)

ऊर्जा स्रोत	स्थापित क्षमता
सौर ऊर्जा	157 GW
पवन ऊर्जा	56.8 GW
जल विद्युत	57.07 GW (51.9 + 5.17)
बायो-पावर	11.7 GW
ज्वारीय ऊर्जा	3.2 MW
कुल स्थापित क्षमता	282.74 GW

उपलब्धियां

- **वैश्विक स्थिति:** भारत अब नवीकरणीय ऊर्जा स्थापित क्षमता के मामले में दुनिया में तीसरे स्थान पर है।
- **लक्ष्य प्राप्ति:** भारत ने गैर-जीवाश्म ईंधन का 50% लक्ष्य निर्धारित समय से पूर्व (2025 में ही) प्राप्त कर लिया है।

राज्यवार अग्रणी स्थिति:

- **गुजरात:** कुल नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता में प्रथम।
- **राजस्थान:** सौर ऊर्जा उत्पादन में देश में प्रथम और कुल नवीकरणीय क्षमता में दूसरे स्थान पर।
- **तमिलनाडु:** पवन ऊर्जा का सबसे बड़ा केंद्र और कुल क्षमता में तीसरे स्थान पर।

13. 52वां G7 शिखर सम्मेलन (2026)



चर्चा में क्यों?

- 15 से 17 जून 2026 के मध्य एवियन-ले-बैंस, फ्रांस में आयोजित यह शिखर सम्मेलन वैश्विक भू-राजनीतिक ध्रुवीकरण और आपूर्ति श्रृंखला संकटों के बीच अंतरराष्ट्रीय एकजुटता के पुनर्निर्माण हेतु संपन्न हुआ।

सम्मेलन के बारे में

- संस्करण: 52वां G7 शिखर सम्मेलन।
- अध्यक्षता: फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन।
- थीम: "नए साझेदारियों का निर्माण और अंतरराष्ट्रीय एकजुटता का पुनर्निर्माण"।

- ***G7 सदस्य:*** *फ्रांस, जर्मनी, इटली, यूनाइटेड किंगडम, जापान, अमेरिका और कनाडा (तथा EU)।*
- ***विशेष अतिथि (आउटरीच देश):*** *भारत, ब्राजील, मिस्र, केन्या, दक्षिण कोरिया, कतर, यूक्रेन और संयुक्त अरब अमीरात (UAE)।*
- ***आगामी आयोजन:*** *53वां G7 शिखर सम्मेलन जून 2027 में संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रस्तावित है।*

सम्मेलन के मुख्य परिणाम

- ***भू-राजनीतिक सुरक्षा:*** *यूक्रेन की संप्रभुता का समर्थन; लेबनान में शांति हेतु युद्धविराम का आह्वान।*

- ***आर्थिक स्थिरता:*** *महत्वपूर्ण खनिजों (Critical Minerals) की आपूर्ति श्रृंखला में सहयोग; प्रवासी तस्करी को रोकने हेतु साझा कानूनी ढांचा।*
- ***वैश्विक कल्याण और स्वास्थ्य:*** *इबोला के विरुद्ध $1 बिलियन से अधिक की सहायता; बाल चिकित्सा कैंसर हेतु समन्वित दृष्टिकोण।*
- ***तकनीकी शासन:*** *बच्चों को साइबर खतरों से बचाने के लिए AI चैटबॉट्स के सुरक्षा प्रोटोकॉल में सुधार पर सहमति।*

G7 Summit 2026 में भारत के प्रमुख Initiatives

- 52nd G7 Summit में भारत ने केवल अपनी चिंताएँ नहीं रखीं, बल्कि कई ठोस पहल (Initiatives) भी प्रस्तावित कीं। प्रमुख पहलें निम्नलिखित हैं:

IMPACT Initiative (International Mobilization Partnership for Accelerating Connectivity and Trade)

- भारत ने **G7 की पूंजी (Capital)**, **भारत की प्रतिभा (Talent)** और **Global South की भागीदारी (Ownership)** को जोड़ने का प्रस्ताव दिया।
- उद्देश्य: **कनेक्टिविटी, व्यापार और सतत विकास** को बढ़ावा देना।

Global South की आवाज़ को मजबूत करना

- भारत ने विकासशील देशों की प्राथमिकताओं को वैश्विक निर्णय-प्रक्रिया में अधिक महत्व देने की मांग की।
- समानता, साझेदारी और पारस्परिक सम्मान पर आधारित विकास मॉडल का समर्थन किया।

Global Trust Deficit को कम करने की पहल

- भारत ने देशों के बीच बढ़ते अविश्वास को दूर करने और बहुपक्षवाद (Multilateralism) को मजबूत करने पर जोर दिया।

India–Africa Development Partnership

- भारत ने अफ्रीका में क्षमता निर्माण, कृषि, जल प्रबंधन, ऊर्जा और कौशल विकास में अपने सहयोग को विकास साझेदारी (Development Partnership) के मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया।

Maritime Security Initiative

- सुरक्षित समुद्री मार्ग (Sea Lanes) और वैश्विक व्यापार की सुरक्षा पर जोर दिया, विशेषकर Strait of Hormuz जैसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों के संदर्भ में।

Fact

- भारत **G7 का सदस्य नहीं** है, बल्कि **Invited Partner Country** के रूप में भाग लेता है।

भारत की द्विपक्षीय कूटनीति (शिखर सम्मेलन के इतर)

- **भारत-कनाडा:** 2030 तक व्यापार दोगुना करने का लक्ष्य; GSOIA (सुरक्षा समझौता) पर वार्ता; कैमेको के साथ CAD $2.6 बिलियन का दीर्घकालिक यूरेनियम आपूर्ति समझौता।
- **संस्थागत नवाचार:** 'रायसीना डायलॉग' मॉडल पर "रायसीना अमेरिका" प्लेटफॉर्म की स्थापना की घोषणा।
- **भारत-यूके:** 'विजन 2035' के अंतर्गत रक्षा, प्रौद्योगिकी और शिक्षा पर केंद्रित CETA समझौते को गति देने पर प्रतिबद्धता।
- **भारत-UAE:** होर्मुज जलडमरूमध्य में समुद्री सुरक्षा और नेविगेशन पर जोर; 18वें BRICS शिखर सम्मेलन (2026) हेतु UAE राष्ट्रपति को निमंत्रण।

14. भारत-यूके व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौता (CETA)



चर्चा में क्यों?:

- भारत और यूनाइटेड किंगडम के बीच हस्ताक्षरित 'व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौता' (CETA) आगामी 1S जुलाई, 2026 से आधिकारिक रूप से लागू होने जा रहा है। यह समझौता भारत-यूके द्विपक्षीय व्यापार को वर्ष 2030 तक 100 बिलियन डॉलर तक पहुँचाने के लक्ष्य को गति देगा।

मुख्य विवरण:

- **पृष्ठभूमि:** समझौते की नींव 'भारत-यूके रोडमैप 2030' के माध्यम से रखी गई थी। जुलाई 2025 में हस्ताक्षर के बाद अब यह 15 जुलाई, 2026 से प्रभावी होगा।
- **वस्तु निर्यात:** भारत के 99% निर्यात को यूके के बाजार में तत्काल शुल्क-मुक्त (Duty-Free) पहुँच प्राप्त होगी।
- **प्रमुख क्षेत्र:** कपड़ा, चमड़ा, रत्न-आभूषण, समुद्री उत्पाद, फार्मास्यूटिकल्स और इंजीनियरिंग सामान।
- **सेवा क्षेत्र:** यूके ने भारत के हित वाले 137 उप-क्षेत्रों (आईटी, वित्तीय सेवाएं, पेशेवर सेवाएं आदि) में बाजार तक पहुंच प्रदान की है।

- **सामाजिक सुरक्षा:** 'डबल कंट्रीब्यूशन कन्वेंशन' के तहत, यूके में काम करने वाले भारतीय पेशेवरों के लिए सामाजिक सुरक्षा कर छूट की अवधि 3 साल से बढ़ाकर 5 साल कर दी गई है।
- **भारतीय हितों का संरक्षण:** डेयरी, अनाज, बाजरा, दालें, और सोने-आभूषण जैसे संवेदनशील क्षेत्रों को समझौते से बाहर रखा गया है। 'मेक इन इंडिया' से जुड़े उत्पादों के लिए चरणबद्ध टैरिफ कटौती (5-10 वर्ष) का प्रावधान है।
- **आधुनिक अध्याय:** इसमें पहली बार डिजिटल व्यापार, दूरसंचार, सरकारी खरीद और MSMEs जैसे 'नेक्स्ट-जेनरेशन' विषयों को शामिल किया गया है।

अतिरिक्त जानकारी:

- **रणनीतिक साझेदारी:** CETA केवल व्यापार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह द्विपक्षीय संबंधों को 'व्यापक रणनीतिक साझेदारी' (Comprehensive Strategic Partnership) की दिशा में आगे बढ़ाता है।
- **डबल कंट्रीब्यूशन कन्वेंशन (DCC):** यह भारतीय पेशेवरों को यूके में दोहरी सामाजिक सुरक्षा योगदान के बोझ से राहत देकर उनकी वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाता है।

15. भारत-न्यूजीलैंड मुक्त व्यापार समझौता (FTA)



चर्चा में क्यों?:

- भारत और न्यूजीलैंड ने 27 अप्रैल, 2026 को एक ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौते (FTA) पर हस्ताक्षर किए हैं। यह समझौता 'विकसित भारत 2047' के विजन के अनुरूप ओशिनिया क्षेत्र में भारत की रणनीतिक पहुंच और आर्थिक साझेदारी को मजबूती प्रदान करेगा।

मुख्य विवरण:

- **टैरिफ रियायतें:** न्यूजीलैंड ने भारत के सभी निर्यात उत्पादों (100% टैरिफ लाइनों) पर तत्काल प्रभाव से सीमा शुल्क समाप्त कर दिया है, जिससे कपड़ा, चमड़ा, रत्न-आभूषण और इंजीनियरिंग सामानों को बढ़ावा मिलेगा।
- **भारत की प्रतिबद्धता:** भारत ने अपनी 70% टैरिफ लाइनों पर न्यूजीलैंड को बाजार पहुंच दी है, जो न्यूजीलैंड के 95% निर्यात को कवर करती है।
- **संवेदनशील क्षेत्रों का संरक्षण:** भारतीय किसानों और घरेलू उद्योगों के हितों की रक्षा के लिए डेयरी उत्पाद, चीनी, एल्यूमीनियम और अन्य कृषि उत्पादों को 'अपवर्जन सूची' में रखा गया है।

- **सेवा क्षेत्र और आयुष:** दोनों देशों ने 11.8 सेवा उप-क्षेत्रों में बाजार पहुंच प्रदान की है। पहली बार न्यूजीलैंड ने भारत की पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों (आयुष और योग) के व्यापार के लिए एक विशेष अनुबंध पर हस्ताक्षर किए हैं।
- **पेशेवर गतिशीलता:** कुशल भारतीयों के लिए प्रतिवर्ष 1,667 अस्थायी रोजगार वीजा (कुल सीमा 5,000) और STEM छात्रों के लिए 3-4 वर्ष का 'पोस्ट-स्टडी वर्क वीजा' सुनिश्चित किया गया है।
- **निवेश:** न्यूजीलैंड ने अगले 15 वर्षों में भारत के कृषि, बुनियादी ढांचे और नवाचार क्षेत्रों में 20 बिलियन डॉलर के निवेश की प्रतिबद्धता जताई है।

महत्वः

- समझौते का उद्देश्य द्विपक्षीय व्यापार को वर्तमान 1.3 बिलियन डॉलर (FY25) से बढ़ाकर अगले 5 वर्षों में 5 बिलियन डॉलर तक पहुँचाना है।
- समझौते के दुरुपयोग (जैसे चीन द्वारा डंपिंग) को रोकने के लिए 'उत्पाद-विशिष्ट उत्पत्ति नियमों (PSRs) का एक मजबूत ढांचा स्थापित किया गया है।
- न्यूजीलैंड में लगभग 3,00,000 भारतीयों का प्रवासी समुदाय है, जो इस समझौते के लिए एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और आर्थिक सेतु के रूप में कार्य करता है।

Result Mitra

16. भारत-नेपाल संबंध



चर्चा में क्यों?:

- भारत के प्रधानमंत्री ने नेपाल के नवनियुक्त प्रधानमंत्री को बधाई देते हुए दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक मित्रता, सांस्कृतिक संबंधों और बहुआयामी सहयोग को और अधिक मजबूत करने की प्रबल इच्छा व्यक्त की है।

भारत नेपाल संबंध के मुख्य बिन्दु :

- **रणनीतिक एवं सुरक्षा महत्व:** नेपाल भारत और चीन के मध्य एक महत्वपूर्ण बफर (मध्यवर्ती) देश है, जो भारत की उत्तरी सीमा की सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

- ***आर्थिक भागीदारी:*** *भारत नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) का प्रमुख स्रोत है।*
- ***जल संसाधन प्रबंधन:*** *नेपाल की नदियां भारत के उत्तरी राज्यों के लिए जल सुरक्षा, बाढ़ नियंत्रण और पनबिजली उत्पादन के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।*
- ***सैन्य सहयोग:*** *दोनों देशों के बीच प्रगाढ़ सैन्य संबंध हैं, जिसमें भारतीय सेना की 'गोरखा रेजीमेंट' में लगभग 32,000 नेपाली सैनिकों की भागीदारी परस्पर विश्वास का प्रतीक है।*
- ***सांस्कृतिक संबंध:*** *दोनों देशों के बीच गहरे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध हैं, जिन्हें 'रोटी-बेटी' के संबंध के रूप में जाना जाता है।*

भारत के लिए नेपाल का महत्वः

- **नेबरहुड फर्स्ट नीतिः** भारत की 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति के अंतर्गत नेपाल क्षेत्रीय स्थिरता और बिम्सटेक (BIMSTEC) जैसे सहयोग मंचों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- **क्षेत्रीय सुरक्षाः** चीन के बढ़ते प्रभाव (जैसे बेल्ट और रोड इनिशिएटिव) के कारण भारत-नेपाल संबंधों की संवेदनशीलता बढ़ गई है, जिसे आर्थिक सहयोग और कूटनीतिक सक्रियता से संतुलित करना आवश्यक है।

- **सीमा सुरक्षा:** खुली सीमा के कारण अवैध व्यापार और तस्करी की चुनौतियों को नियंत्रित करना भारत की सुरक्षा के लिए अपरिहार्य है।
- **सांस्कृतिक कूटनीति:** रामायण सर्किट, लुंबिनी की साझी विरासत और हिंदू-बौद्ध धर्म के गहरे संबंध सॉफ्ट पावर के रूप में कार्य करते हैं।

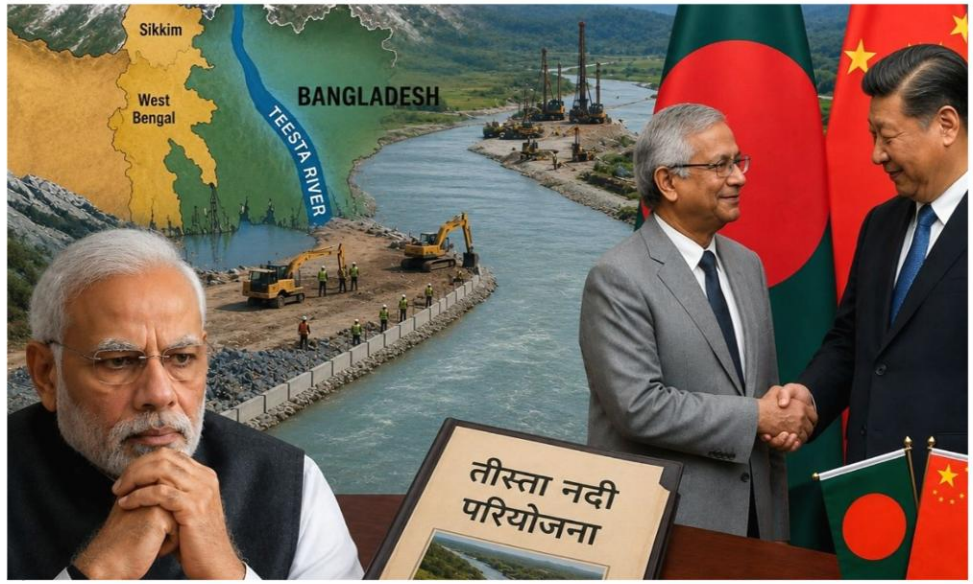
द्विपक्षीय संबंधों में चुनौतियाँ:

- **सीमा विवाद:** कालापानी, लिपुलेख, लिम्पियाधुरा और सुस्ता को लेकर अनसुलझे मुद्दे। नेपाल सुगौली संधि (1816) को आधार मानकर कालापानी और लिपुलेख जैसे क्षेत्रों पर अपना दावा प्रस्तुत करता है।
- **परियोजनाओं में विलंब:** पंचेश्वर, अरुण-III और अपर कर्णाली जैसी भारत द्वारा वित्तपोषित जलविद्युत परियोजनाओं के क्रियान्वयन में देरी।



- ***चीन का प्रभावः*** *नेपाल में चीन का बढ़ता निवेश और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में भागीदारी।*
- ***जल बंटवाराः*** *महाकाली, कोसी और गंडक नदी जल संधियों के प्रबंधन से संबंधित उभरते मुद्दे।*
- ***आगे की राहः*** *भारत को अपनी ऊर्जा और पर्यटन सहयोग को बढ़ावा देकर चीन के बढ़ते प्रभाव को कम करने तथा सीमा विवादों को शांतिपूर्ण कूटनीतिक वार्ता से सुलझाने पर ध्यान देना चाहिए।*

17. भारत-बांग्लादेश-चीनः त्रिकोणीय भू-राजनीति और तीस्ता नदी विवाद



चर्चा में क्यों?

- दक्षिण एशिया की भू-राजनीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर, बांग्लादेश ने तीस्ता नदी के प्रबंधन के लिए चीन से लगभग । अरब डॉलर के ऋण की मांग की है। भारत-बांग्लादेश के बीच लंबित जल-बंटवारे समझौते और चीन के बढ़ते आर्थिक-रणनीतिक प्रभाव ने इस त्रिकोणीय संबंधों को अत्यंत संवेदनशील बना दिया है।

भारत बांग्लादेश और चीन त्रिकोण संबंधः

- **रणनीतिक समीकरणः** भारत बांग्लादेश का ऐतिहासिक साझेदार है, जबकि चीन अपने 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' (BRI) और हथियार आपूर्ति के माध्यम से वहां रणनीतिक पैठ बना रहा है।
- **तीस्ता जल विवादः** जल-बंटवारा समझौता आठ वर्षों से लंबित है। इसी कारण बांग्लादेश ने "तीस्ता नदी व्यापक प्रबंधन परियोजना" के लिए चीन से लगभग । बिलियन डॉलर के ऋण की मांग की है।
- तीस्ता नदी सिक्किम (त्सोलामो) से निकलती है और ब्रह्मपुत्र की एक प्रमुख सहायक नदी है।

- **चीन का आर्थिक प्रभाव:** चीन बांग्लादेश का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। हाल ही में चीन द्वारा 97% बांग्लादेशी निर्यात पर शुल्क-मुक्ति की घोषणा से ढाका की बीजिंग पर निर्भरता बढ़ी है।
- **हालिया घटनाक्रम:** 2025 में व्यापार प्रतिबंध, राजनीतिक अस्थिरता और बांग्लादेश का चीन-पाकिस्तान की ओर बढ़ता झुकाव भारत के लिए चिंता का विषय है।

भारत के लिए रणनीतिक चुनौतियाँ:

- **सुरक्षा चिंताएँ:** चटगांव/सोनाडिया बंदरगाहों तक चीन की पहुँच और रक्षा सहयोग भारत की 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' और पूर्वोत्तर भारत की सुरक्षा के लिए चुनौती है।

- ***रणनीतिक स्वायत्तता:*** *बांग्लादेश अपनी विदेश नीति में भारत के सुरक्षा हितों और चीन के आर्थिक-सैन्य निवेश के बीच संतुलन बनाए रखने का प्रयास कर रहा है।*
- ***क्षेत्रीय प्रभाव:*** *तीस्ता परियोजना का चीन द्वारा वित्तपोषण भारत के क्षेत्रीय आर्थिक दबदबे और जल-कूटनीति के लिए एक परीक्षा है।*
- ***सॉफ्ट पावर का क्षरण:*** *व्यापार प्रतिबंधों और कूटनीतिक दरारों से भारत की साख प्रभावित हो रही है, जिसका लाभ चीन उठा रहा है।*

- **पूर्वोत्तर स्थिरता:** बांग्लादेश में अस्थिरता का सीधा असर पूर्वोत्तर भारत की सीमा सुरक्षा और शरणार्थी प्रबंधन पर पड़ता है।
- **आगे की राह:** भारत को CEPA जैसे आर्थिक समझौतों को शीघ्र अंतिम रूप देने के साथ-साथ केवल सरकार नहीं, बल्कि नागरिक समाज और क्षेत्रीय हितधारकों के साथ एक समावेशी 'बहुआयामी कूटनीति' अपनानी चाहिए।

14. यूएस-ईरान संघर्ष:



चर्चा में क्यों?

- अमेरिका-इज़राइल द्वारा 'ऑपरेशन एपिक फ्यूरी' के माध्यम से ईरान के सैन्य केंद्रों और नेतृत्व पर किए गए समन्वित हमलों ने पश्चिम एशिया को पूर्ण युद्ध की स्थिति में धकेल दिया है, जिससे वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति और क्षेत्रीय भू-राजनीति में गंभीर संकट उत्पन्न हो गया है।

संघर्ष के मूल कारण:

- **परमाणु और रणनीतिक अविश्वास:** संयुक्त व्यापक कार्ययोजना (JCPOA) से अमेरिका के हटने के बाद ईरान द्वारा यूरेनियम संवर्धन में तीव्र वृद्धि और इज़राइल की सुरक्षा के लिए इसे 'अस्तित्वगत खतरा' मानना।

- **क्षेत्रीय प्रॉक्सी युद्ध:** लेबनान, यमन, इराक और सीरिया में सक्रिय ईरानी समर्थित 'एक्सिस ऑफ रेसिस्टेंस' का अमेरिका-इज़राइल के क्षेत्रीय प्रभुत्व को चुनौती देना।
- **तात्कालिक कारण :** 2026 के आरंभ में सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की मृत्यु और उसके बाद तेल टैंकरों पर हुए ड्रोन हमलों ने संघर्ष को चरम पर पहुँचा दिया।

प्रमुख सैन्य अभियान:

- **ऑपरेशन एपिक फ्यूरी (अमेरिका):** ईरान की सैन्य परिसंपत्तियों को पंगु बनाने हेतु लक्षित हमले।
- **ऑपरेशन लायंस रोअर (इज़राइल):** लेबनान और ईरान में हिजबुल्लाह के बुनियादी ढांचे के विरुद्ध समन्वित सैन्य कार्रवाई।

भारत के लिए रणनीतिक चुनौतियाँ:

- **ऊर्जा और वित्तीय दबाव:** भारत अपनी तेल जरूरतों का ~50% और LPG और LNG का ~60-85% इसी क्षेत्र से आयात करता है। कच्चे तेल की कीमतों में प्रत्येक 1 डॉलर की वृद्धि से भारत के आयात बिल पर 1.4-2 बिलियन डॉलर का अतिरिक्त बोझ पड़ता है।
- **कनेक्टिविटी एवं निवेश:** इस संघर्ष ने भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे (IMEEC) जैसी प्रमुख कनेक्टिविटी परियोजनाओं को ठप कर दिया है।
- **खाद्य एवं उर्वरक सुरक्षा:** प्राकृतिक गैस की कमी के कारण यूरिया सब्सिडी बजट (~12.7 बिलियन डॉलर) पर अत्यधिक दबाव बढ़ गया है, क्योंकि वैश्विक उर्वरक कीमतें 40% तक बढ़ गई हैं।

- **प्रवासी सुरक्षा:** खाड़ी देशों में कार्यरत ~10 मिलियन भारतीयों की सुरक्षा और उनके द्वारा प्रेषित धन (remittances) का प्रवाह भारत के लिए एक महत्वपूर्ण संवेदनशीलता है।

भारत द्वारा उठाए गए कदम:

- **आपातकालीन निकासी:** भारत ने अपने नागरिकों को सुरक्षित निकालने के लिए 'ऑपरेशन सिंधु' का संचालन किया।
- **वित्तीय सुरक्षा कवच:** बाहरी झटकों और मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए सरकार ने 573 अरब रुपये (6.20 बिलियन डॉलर) का 'आर्थिक स्थिरीकरण कोष' बनाने का प्रस्ताव रखा है।

- ***आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण:*** *तेल और उर्वरकों के लिए रूस, मोरक्को, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे वैकल्पिक बाजारों से आपातकालीन खरीद शुरू की गई।*
- ***वैश्विक सहयोग:*** *IMO के साथ मिलकर 11,000+ नाविकों को बचाने हेतु समन्वय, जो भारत की 'रीजनल सिक्योरिटी प्रोवाइडर' की भूमिका को रेखांकित करता है।*

शांति समझौते की वर्तमान स्थिति:

- *लगभग चार महीने तक चले इस तीव्र संघर्ष के बाद, जून 2026 में अमेरिका और ईरान के बीच एक रूपरेखा शांति समझौता (Framework Peace Deal) तय हुआ। हालाँकि, तनाव के दीर्घकालिक प्रभावों और अस्थिरता के कारण पश्चिम एशिया में कूटनीतिक चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं।*

19. BRICS: वैश्विक दक्षिण का नेतृत्व और भारत की अध्यक्षता (2026)



चर्चा में क्यों?

- भारत वर्ष 2026 में BRICS की अध्यक्षता कर रहा है और नई दिल्ली में 18वें शिखर सम्मेलन की मेजबानी कर रहा है। इसका प्राथमिक उद्देश्य 'मानवता-केंद्रित शासन' के माध्यम से वैश्विक दक्षिण (Global South) की आकांक्षाओं को मंच प्रदान करना है।

BRICS और इसका विस्तार:

- **संकल्पना:** वर्ष 2001 में गोल्डमैन सैक्स के अर्थशास्त्री जिम ओ'नील ने तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं के लिए 'BRIC' शब्द गढ़ा था।

- **गठनः** 2006 में औपचारिक शुरुआत, 2010 में दक्षिण अफ्रीका के जुड़ने से यह 'BRICS' बना। ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका BRICS के 5 मूल सदस्य देश थे ।
- **स्वरूपः** यह विश्व की प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं का समूह है, जो बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की वकालत करता है।

BRICS का विस्तार (BRICS+):

- **प्रथम चरण (2024):** मिस्र, इथियोपिया, ईरान और संयुक्त अरब अमीरात पूर्ण सदस्य बने।
- **द्वितीय चरण (2025):** इंडोनेशिया पूर्ण सदस्य बना। साथ ही, बेलारूस, बोलिविया, कजाकिस्तान, क्यूबा, मलेशिया, नाइजीरिया, थाईलैंड, युगांडा और उज्बेकिस्तान को 'पार्टनर देश' के रूप में शामिल किया गया।
- यह विस्तारित BRICS+ अब दुनिया की लगभग 45-50% आबादी, वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का 37% से अधिक और वैश्विक व्यापार का लगभग 26% हिस्सा संभालता है।

प्रमुख BRICS शिखर सम्मेलनः

शिखर सम्मेलन	स्थान एवं वर्ष	प्रमुख जानकारी
16वाँ	कज़ान, रूस (2024)	• 'कज़ान घोषणापत्र' जारी • 13 देशों को 'पार्टनर देश' का दर्जा • डॉलर के प्रभाव को कम करने हेतु स्थानीय मुद्राओं में व्यापार पर सहमति।
17वाँ	रियो, ब्राज़ील (2025)	• 'रियो घोषणापत्र' अपनाया गया; • AI गवर्नेंस, गरीबी उन्मूलन और UN/IMF जैसे वैश्विक वित्तीय संस्थानों में सुधारों पर सहमति।
18वाँ	नई दिल्ली, भारत (2026)	• 12-13 सितंबर 2026 को निर्धारित। • थीमः "लचीलापन, नवाचार, सहयोग और निरंतरता" • भारत ने इससे पहले 2012, 2016, और 2021 में मेजबानी की है।

BRICS के प्रमुख इनिशिएटिव:

- **न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB):** उभरते देशों में बुनियादी ढांचे हेतु वित्तपोषण (मुख्यालय: शंघाई)।
- **आकस्मिक आरक्षित व्यवस्था (CRA):** 100 बिलियन डॉलर का कोष, जो अल्पकालिक तरलता संकट से बचाता है।
- **BRICS भुगतान प्रणाली:** SWIFT के विकल्प के रूप में डॉलर-आधारित प्रणाली पर निर्भरता कम करने का प्रयास।
- **NSA बैठकें:** आतंकवाद-निरोध, साइबर सुरक्षा और ट्रांस-नेशनल अपराधों पर सहयोग।

भारत के लिए महत्वः

- **रणनीतिक स्वायत्तताः** भारत के लिए यह मंच 'ग्लोबल साउथ' की आवाज बनने और पश्चिमी व चीन-केंद्रित व्यवस्था के बीच संतुलन बनाने का माध्यम है।
- **वैश्विक सुधारः** UN सुरक्षा परिषद और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों (IMF, WB) में समावेशी सुधारों की वकालत।
- **सहयोगः** व्यापार, निवेश, जलवायु न्याय और आतंकवाद-निरोध जैसे वैश्विक मुद्दों पर साझा मंच।

चुनौतियाँ:

- ***आंतरिक मतभेद:*** *भारत-चीन सीमा विवाद और सदस्यों के अलग-अलग भू-राजनीतिक हित एकता में बाधक हैं।*
- ***चीन का प्रभुत्व:*** *चीन की बढ़ती आर्थिक और रणनीतिक शक्ति छोटे सदस्यों के हितों को प्रभावित कर सकती है।*
- ***आर्थिक विषमता:*** *सदस्यों के बीच व्यापार असंतुलन और अलग-अलग मुद्रा नीतियां एक 'साझा मुद्रा' के लक्ष्य को जटिल बनाती हैं।*
- ***विस्तार का प्रबंधन:*** *नए सदस्य देशों और 'साझेदार देशों' के साथ सर्वसम्मति बनाना और समूह की कार्यक्षमता बनाए रखना।*

निष्कर्ष:

- BRICS भारत के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है जहाँ भारत अपनी अध्यक्षता (2026) के माध्यम से डिजिटल नवाचार और समावेशी विकास को बढ़ावा देकर इसे 'ग्लोबल साउथ' के वास्तविक प्रतिनिधि के रूप में स्थापित करने का प्रयास कर रहा है।

20. SpaceX IPO और एलन मस्क



चर्चा में क्यों?:

- जून 2026 में SpaceX के नैस्डैक (NASDAQ) पर सूचीबद्ध होने के बाद, एलन मस्क की कुल संपत्ति $1 ट्रिलियन का आंकड़ा पार कर गई है। यह ऐतिहासिक IPO वैश्विक पूंजी बाजार में निजी अंतरिक्ष कंपनियों के बढ़ते दबदबे को प्रदर्शित करता है।

SpaceX IPO की मुख्य विशेषताएं:

- **ऐतिहासिक IPO:** SpaceX ने $75 बिलियन जुटाकर विश्व के अब तक के सबसे बड़े IPO का रिकॉर्ड बनाया; यह 3.5 गुना ओवरसब्सक्राइब हुआ।
- **बाजार मूल्यांकन:** लिस्टिंग के उपरांत कंपनी का बाजार पूंजीकरण $2 ट्रिलियन से अधिक हो गया, जिससे यह अमेरिका की सबसे मूल्यवान सार्वजनिक कंपनियों की श्रेणी में आ गई।
- **आर्थिक प्रभाव:** मस्क की कुल संपत्ति $1.1 ट्रिलियन दर्ज की गई, जो विश्व के लगभग 174 देशों की संयुक्त वार्षिक GDP से अधिक है।

- मस्क की संपत्ति का आधार मात्र SpaceX नहीं, बल्कि टेस्ला और X (ट्विटर) में उनकी हिस्सेदारी भी है।

IPO क्या है?

- इनिशियल पब्लिक ऑफरिंग (IPO) वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक निजी कंपनी पहली बार जनता को अपने शेयर बेचकर सार्वजनिक होती है। इसका प्राथमिक उद्देश्य कंपनी के विस्तार के लिए पूंजी जुटाना है।

अर्थव्यवस्था और वैश्विक प्रभाव:

- निजी अंतरिक्ष युग: अंतरिक्ष अन्वेषण का नेतृत्व सरकारी संस्थानों (ISRO/NASA) से निजी क्षेत्र की ओर स्थानांतरित हो रहा है, जिसमें भारी निवेश की क्षमता देखी गई है।

- ***तकनीकी एकीकरण:*** *जुटाई गई पूंजी का उपयोग ऑर्बिटल डेटा सेंटर और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) यूनिट्स के विस्तार में किया जाएगा, जो भविष्य की तकनीक के लिए आधारभूत है।*
- ***भारतीय संदर्भ:*** *भारत सरकार द्वारा IN-SPACe के माध्यम से निजी स्टार्टअप्स (जैसे स्काईरूट, अग्निकुल) को दिए जा रहे प्रोत्साहन के लिए यह एक वैश्विक बेंचमार्क है।*
- ***आगे की राह:*** *अंतरिक्ष आधारित अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र का उदय विकास के नए अवसर खोल रहा है, लेकिन इसके लिए वैश्विक स्तर पर अंतरिक्ष कानून और वित्तीय विनिवेश के कड़े नियमों की आवश्यकता होगी।*

21. जून 2026 में प्रधानमंत्री की प्रमुख यात्राएँ



प्रधानमंत्री की यूरोप यात्रा (फ्रांस और स्लोवाकिया) (13-18 जून, 2026)

- **यात्रा का उद्देश्य:** फ्रांस और स्लोवाकिया के साथ रणनीतिक संबंधों को प्रगाढ़ करना और G7 शिखर सम्मेलन में भारत की वैश्विक भूमिका को प्रदर्शित करना।

यात्रा कार्यक्रम:

1. **फ्रांस (नीस - 13-14 जून):** राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन के साथ द्विपक्षीय वार्ता। 'भारत इनोवेट्स' कार्यक्रम का संयुक्त उद्घाटन।

2. **स्लोवाकिया (14-16 जून):** 1993 में स्लोवाकिया की स्वतंत्रता के बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली राजकीय यात्रा। प्रधानमंत्री रॉबर्ट फिको और राष्ट्रपति पीटर पेलेग्रिनी के साथ बैठक।

3. **फ्रांस (एवियन - 16-17 जून):** G7 शिखर सम्मेलन में भागीदारी।

- **प्रमुख विषय:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का सुरक्षित कार्यान्वयन, साझा आर्थिक विकास, और अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता।

4. **फ्रांस (पेरिस - 18 जून):** विवाटेक शिखर सम्मेलन में भाग लेना और भारतीय समुदाय को संबोधन।

महत्व :

- **द्विपक्षीय नवाचार:** 'भारत इनोवेट्स' और विवाटेक शिखर सम्मेलन में भागीदारी भारत को वैश्विक डिजिटल और नवाचार केंद्र के रूप में स्थापित करती है।
- **ऐतिहासिक मील का पत्थर:** स्लोवाकिया की पहली उच्च-स्तरीय यात्रा व्यापार, निवेश और ऑटोमोबाइल व रेलवे विनिर्माण में सहयोग के नए द्वार खोलेगी।
- **वैश्विक नेतृत्व:** G7 में प्रधानमंत्री की उपस्थिति 'ग्लोबल साउथ' (Global South) की आवाज के रूप में भारत के बढ़ते कद और वैश्विक चुनौतियों के समाधान में एक प्रमुख भागीदार के रूप में भारत की स्थिति को सुदृढ़ करती है।

- **क्षेत्रीय प्रतिबद्धता:** यह यात्रा यूरोपीय संघ (EU) के साथ भारत की व्यापक रणनीतिक साझेदारी को नई गति प्रदान करेगी।

प्रधानमंत्री की सेशेल्स राजकीय यात्रा (28 जून, 2026)

चर्चा में क्यों?

- प्रधानमंत्री मोदी की सेशेल्स यात्रा के दौरान भारत और सेशेल्स के बीच राजनयिक संबंधों के 50 वर्ष (स्वर्ण जयंती) पूरे होने का जश्न मनाया गया और द्विपक्षीय सहयोग को नई ऊँचाइयों पर ले जाने पर सहमति बनी।

यात्रा की प्रमुख उपलब्धियाँ और समझौते:

- **रणनीतिक सहयोग:** स्वास्थ्य, शिक्षा, डिजिटल परिवर्तन, नवीकरणीय ऊर्जा, समुद्री सुरक्षा और रक्षा जैसे क्षेत्रों में सहयोग को सुदृढ़ करना।
- **आर्थिक सहायता:** भारत द्वारा सेशेल्स को 1,250 करोड़ रुपये की 'लाइन ऑफ क्रेडिट' (ऋण लाइन) प्रदान की गई।
- **महत्वपूर्ण घोषणा:** सेशेल्स ने आपदा प्रतिरोधी अवसंरचना गठबंधन (CDRI) में आधिकारिक रूप से शामिल होने की घोषणा की।
- **समझौता ज्ञापन (MoUs):** क्षमता निर्माण, सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि, अंतरिक्ष और प्रत्यर्पण सहित कई क्षेत्रों में द्विपक्षीय समझौतों का आदान-प्रदान।

ऐतिहासिक और राजनयिक महत्वः

- **संसदीय संबोधनः** प्रधानमंत्री मोदी सेशेल्स की राष्ट्रीय सभा को संबोधित करने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री बने।
- **साझा मूल्यः** दोनों देशों ने लोकतंत्र, कानून के शासन और जन-केंद्रित शासन के साझा मूल्यों पर जोर दिया।
- **क्षेत्रीय चुनौतियाँः** हिंद महासागर क्षेत्र में अवैध मछली पकड़ने, मादक पदार्थों की तस्करी और समुद्री डकैती जैसी साझा चुनौतियों का समाधान करने पर सहमति।

रणनीतिक विश्लेषण:

1. **हिंद महासागर रणनीति:** सेशेल्स के साथ यह प्रगाढ़ साझेदारी भारत की 'SAGAR' (Security and Growth for All in the Region) पहल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
2. **सॉफ्ट पावर और कूटनीति:** स्वर्ण जयंती (50 वर्ष) पर लोगो जारी करना और संसद को संबोधित करना 'सांस्कृतिक और संसदीय कूटनीति' (Parliamentary Diplomacy) का उत्कृष्ट उदाहरण है।
3. **विकास का मॉडल:** CDRI में सेशेल्स का शामिल होना जलवायु परिवर्तन से निपटने में छोटे द्वीप देशों (SIDS) के साथ भारत की नेतृत्वकारी भूमिका को दर्शाता है।

Result Mitra

22. प्रमुख विदेशी व्यक्तियों की भारत की यात्रा

वेनेजुएला की कार्यवाहक राष्ट्रपति की भारत यात्रा (3-7 जून, 2026)

चर्चा में क्यों?

- वेनेजुएला की कार्यवाहक राष्ट्रपति सुश्री डेल्सी एलोइना रोड्रिग्ज गोमेज़ 3 से 7 जून 2026 तक भारत की कार्य यात्रा पर हैं। यह उनकी छठी भारत यात्रा है, जो दोनों देशों के बीच निरंतर और मजबूत होते राजनयिक संबंधों को दर्शाती है।



यात्रा का रणनीतिक महत्व और एजेंडा:

- **उच्च-स्तरीय वार्ता:** प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ द्विपक्षीय वार्ता, जिसमें ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार, फार्मास्यूटिकल्स, स्वास्थ्य, परिवहन और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर चर्चा होगी।
- **औद्योगिक अवलोकन:** वेनेजुएला का प्रतिनिधिमंडल ऊर्जा, फार्मास्यूटिकल्स और ऑटो क्षेत्रों से जुड़े स्थलों का दौरा करेगा, ताकि भारतीय तकनीकी क्षमताओं का अध्ययन किया जा सके।
- **ऊर्जा सहयोग:** भारत और वेनेजुएला के बीच ऊर्जा क्षेत्र एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम (PSUs) वहां पहले से ही सक्रिय हैं और अपनी उपस्थिति बढ़ाने के अवसरों की तलाश कर रहे हैं।

द्विपक्षीय संबंध और वैश्विक दृष्टिकोण:

- **साझा प्रतिबद्धता:** दोनों देशों के बीच घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंध हैं, जो ऊर्जा व्यापार और 'ग्लोबल साउथ' (Global South) के हितों के प्रति साझा प्रतिबद्धता पर आधारित हैं।
- **निरंतरता:** कार्यवाहक राष्ट्रपति रोड्रिगेज का पूर्व में विदेश मंत्री और उपराष्ट्रपति के रूप में भारत का दौरा करना, दोनों देशों के बीच संस्थागत समझ को और अधिक गहरा बनाता है।


लग चुकी है तलब जीत की अब
खुद को आग में झोंक देंगे, ठोकरें
कहती है मारा जाएगा, हौसले
कहते हैं देख लेंगे..!!
UPSC
DREAM
BELIEVE
ACHIEVE
संघर्ष
परिश्रम
धैर्य
सफलता
INDIAN POLITY
INDIAN ECONOMY
MODERN HISTORY
GEOGRAPHY
ENVIRONMENT
TARGET
UPSC
DISCIPLINE
TODAY
SUCCESS
TOMORROW

1. सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीश नियुक्ति



चर्चा में क्यों?

- भारत सरकार के विधि मंत्रालय द्वारा 1 जून, 2026 को जारी अधिसूचना के तहत सर्वोच्च न्यायालय में पाँच नए न्यायाधीशों की नियुक्ति की गई है।

प्रमुख बिंदु:

- **न्यायाधीशों की नई सूची:** वेंकिता सुब्रमणि मोहना (वरिष्ठ अधिवक्ता), न्यायमूर्ति श्री चंद्रशेखर (बॉम्बे HC), न्यायमूर्ति शील नागू (पंजाब और हरियाणा HC), न्यायमूर्ति संजीव सचदेवा (मध्य प्रदेश HC), और न्यायमूर्ति अरुण पल्ली (J&K और लद्दाख HC)।

- **संख्यात्मक बदलाव:** सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीशों की कुल स्वीकृत संख्या 34 से बढ़कर 38 हो गई है। पाँच नई नियुक्तियों के बाद न्यायालय में मात्र 1 पद रिक्त है।
- **प्रक्रिया की गति:** सर्वोच्च न्यायालय कॉलेजियम द्वारा 27 मई, 2026 को सिफारिश की गई थी, जिसे 4 दिनों के भीतर सरकार ने मंजूरी दी।
- **संवैधानिक प्रावधान:** अनुच्छेद 124(2) के तहत नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा CJI और अन्य न्यायाधीशों के परामर्श से की जाती है।
- **योग्यता (अनुच्छेद 124(3)):** भारत का नागरिक; 5 वर्ष उच्च न्यायालय में न्यायाधीश या 10 वर्ष अधिवक्ता के रूप में अनुभव, या राष्ट्रपति की राय में प्रतिष्ठित विधिवेत्ता।

- **कॉलेजियम प्रणाली:** संरचना 1+4 (CJI + 4 वरिष्ठतम न्यायाधीश) है। यह प्रणाली तृतीय न्यायाधीश मामला (1998) के माध्यम से स्थापित हुई।

महत्वपूर्ण केस लॉ:

- **प्रथम न्यायाधीश मामला (1981):** परामर्श 'सहमति' नहीं है।
- **द्वितीय न्यायाधीश मामला (1993):** कॉलेजियम प्रणाली की शुरुआत।
- **तृतीय न्यायाधीश मामला (1998):** कॉलेजियम की संख्या 1+4 निर्धारित।
- **निर्णायक भूमिका:** न्यायाधीशों की संख्या में यह वृद्धि लंबित मामलों के बोझ को कम करने और न्यायिक प्रशासन में तीव्रता लाने में सहायक होगी।

सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियमः

- जस्टिस जे.के. माहेश्वरी के सेवानिवृत्त होने के बाद, सुप्रीम कोर्ट के पांचवें वरिष्ठतम जज जस्टिस पी.एस. नरसिम्हा कॉलेजियम के नए सदस्य के रूप में शामिल हुए हैं। वर्तमान में कॉलेजियम की संरचना में भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI) और चार वरिष्ठतम न्यायाधीश शामिल हैं।

कॉलेजियम प्रणालीः

- उत्पत्तिः यह प्रणाली 'थ्री जजेस केस' (Three Judges Cases) के माध्यम से विकसित हुई (मुख्यतः 1993 और 1998 के निर्णयों द्वारा)। यह संविधान में स्पष्ट रूप से उल्लेखित नहीं है, बल्कि एक न्यायिक व्याख्या (Judicial Interpretation) है।

- **संरचनाः** इसमें CJI और सुप्रीम कोर्ट के चार अन्य वरिष्ठतम न्यायाधीश होते हैं।

कार्यक्षेत्रः

- सुप्रीम कोर्ट के जजों की नियुक्ति।
- हाई कोर्ट के जजों की नियुक्ति और उनका स्थानांतरण (Transfer)।
- हाई कोर्ट के जजों की चीफ जस्टिस के रूप में पदोन्नति (Promotion)।

प्रक्रिया और सरकार की भूमिका:

1. **सिफारिश:** कॉलेजियम नामों की सिफारिश केंद्र सरकार को भेजता है।
2. **समीक्षा:** सरकार इन सिफारिशों पर पुनर्विचार का आग्रह कर सकती है।
3. **बाध्यता:** यदि कॉलेजियम अपनी सिफारिश को दोहराता (Reiterate) है, तो सरकार उसे मानने के लिए कानूनी रूप से बाध्य होती है।

2. NEET-UG 2026: सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय



चर्चा में क्यों?

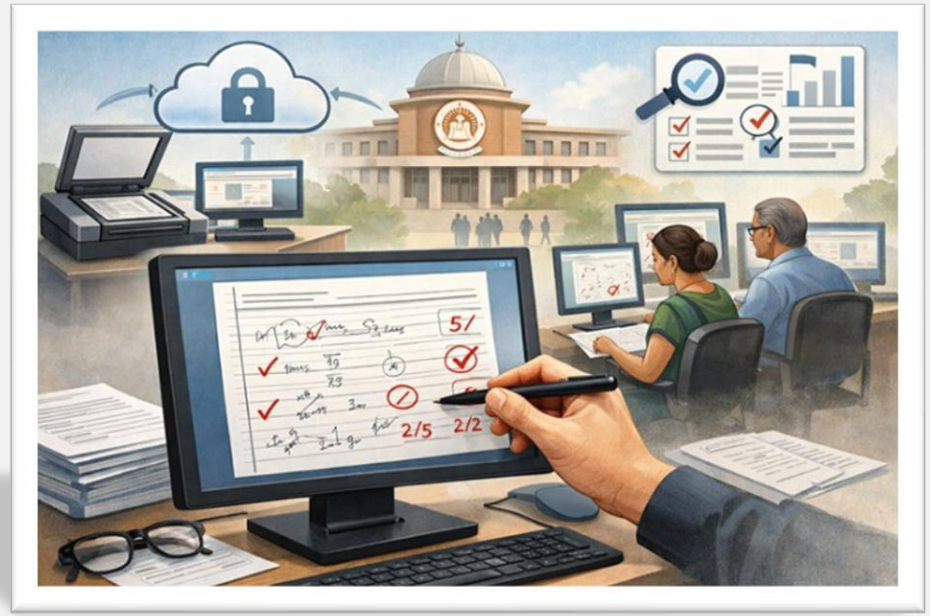
- सर्वोच्च न्यायालय ने 21 जून, 2026 को प्रस्तावित NEET-UG 2026 की पुनर्परीक्षा को पेन-एंड-पेपर मोड से बदलकर कंप्यूटर-आधारित परीक्षा (CBT) में आयोजित करने की याचिका को खारिज कर दिया है।

प्रमुख बिंदु:

- **न्यायालय का रुख:** न्यायमूर्ति पी.एस. नरसिम्हा और न्यायमूर्ति अरविंद कुमार की पीठ ने कहा कि परीक्षा के तरीके में अचानक बदलाव से व्यावहारिक कठिनाइयाँ उत्पन्न होंगी।

- **सुनवाई का स्थगनः** याचिकाकर्ता (सांसद सुधाकर सिंह) के अनुरोध को जुलाई तक के लिए टाल दिया गया है।
- **NTA का हलफनामाः** NTA ने सूचित किया कि उच्च-स्तरीय विशेषज्ञ समिति की सिफारिश पर, अगले परीक्षा सत्र से NEET-UG को पूर्णतः CBT मोड में स्थानांतरित किया जाएगा।
- **सुरक्षा उपायः** 21 जून की पुनर्परीक्षा के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) तैयार की गई है, जिसमें बहुस्तरीय प्रमाणीकरण (Multi-layer authentication) अनिवार्य है।
- **पृष्ठभूमिः** पेपर लीक के आरोपों के बाद 3 मई, 2026 को निर्धारित परीक्षा 12 मई को रद्द कर दी गई थी, जिसकी जांच CBI कर रही है।

3. CBSE का ऑन-स्क्रीन मार्किंग (OSM) सिस्टम



चर्चा में क्यों?

- CBSE द्वारा कक्षा 12 की उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन हेतु 'ऑन-स्क्रीन मार्किंग' (OSM) प्रणाली को पूर्णतः डिजिटल करने के निर्णय पर तकनीकी और प्रशासनिक चिंताओं के कारण बहस छिड़ गई है।

OSM प्रणाली के बारे में

- OSM (On-Screen Marking) प्रणाली एक डिजिटल मूल्यांकन प्रक्रिया है, जिसमें छात्रों की मुख्य उत्तर पुस्तिकाओं को स्कैन करके कंप्यूटर स्क्रीन पर जांचा जाता है। यह पद्धति कॉपियों के मूल्यांकन को अधिक सुरक्षित, सटीक, पारदर्शी और त्रुटिहीन बनाती है।

मुख्य लाभः

- **सुरक्षाः** कॉपियों के गुम होने या फटने का डर नहीं रहता।
- **सटीकताः** अंकों को जोड़ने में कोई मानवीय गलती नहीं होती।
- **तेजीः** परीक्षा परिणाम जल्दी घोषित करने में मदद मिलती है।
- **पारदर्शिताः** पूरी प्रक्रिया ट्रैक की जा सकती है और अधिक निष्पक्ष होती है।

विवाद के प्रमुख कारण

- **अंकों में विसंगतियां:** सही उत्तरों के बावजूद शून्य अंक या बहुत कम मार्किंग; 90+ स्कोर करने वाले छात्रों का अन्य विषयों में आश्चर्यजनक रूप से फेल होना।
- **अनचेक्ड प्रश्न:** डिजिटल जांच के दौरान कई प्रश्नों का मूल्यांकन किए बिना ही छोड़ दिया जाना।
- **तकनीकी एवं सुरक्षा खामियां:** मूल्यांकन पोर्टल में गड़बड़ियां और पेमेंट गेटवे हैकिंग के गंभीर आरोप।
- **पुनर्मूल्यांकन में उछाल:** अंकों से असंतुष्ट छात्रों द्वारा रिकॉर्ड संख्या में री-चेकिंग और वेरिफिकेशन के आवेदन।

सुधार हेतु उठाए गए कदम

- शिक्षा मंत्रालय और बोर्ड द्वारा पोर्टल की खामियों को स्वीकार कर सुधार की प्रक्रिया शुरू करना।
- सुरक्षा को पुख्ता करने के लिए CERT-In, CBI और IB जैसे संगठनों की सहायता ली गई।
- प्रभावित छात्रों को पुनर्मूल्यांकन और वेरिफिकेशन के लिए विशेष अवसर प्रदान किए गए।

Result Mitra

५. नीति आयोगः ।।वीं शासी परिषद की बैठक



चर्चा में क्यों?

- हाल ही में आयोजित ।।वीं बैठक का मुख्य फोकस "2047 तक विकसित भारत के लिए समावेशी मानव विकास" था, जो नीतिगत ढांचे को आर्थिक आंकड़ों से आगे ले जाकर मानवीय कल्याण पर केंद्रित करता है।

समावेशी मानव विकास के ५ स्तंभः

1. मानव पूंजी और भविष्य के कौशलः केवल डिग्री पर नहीं, बल्कि 'फ्यूचर-रेडी' कौशल पर जोर।
2. उत्पादक रोजगार और उद्यमिताः विकेंद्रीकृत मॉडल के जरिए स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन।
3. स्वास्थ्य, पोषण और कल्याणः एकीकृत स्वास्थ्य प्रणाली का निर्माण।
5. समानता और गरिमाः सामाजिक-आर्थिक भेदभाव का उन्मूलन।

कार्यान्वयन रणनीतिः

- DPI (डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना): पारदर्शिता और त्वरित वितरण।
- डेटा-आधारित शासनः अल्प, मध्यम और दीर्घकालिक परिणामों की निगरानी के लिए संरचित तंत्र।
- सहकारी संघवादः राष्ट्रीय लक्ष्यों और राज्य-स्तरीय दृष्टिकोणों का संरेखण।

नीति आयोग (NITI Aayog): एक परिचय

- **स्थापना:** 1 जनवरी, 2015 (योजना आयोग के स्थान पर)।
- **अर्थ:** National Institution for Transforming India.
- **अध्यक्ष:** प्रधानमंत्री।
- **संरचना:** इसमें शासी परिषद (मुख्यमंत्री + केंद्र शासित प्रदेशों के उपराज्यपाल) शामिल है, जो इसे 'सहकारी संघवाद' का सबसे महत्वपूर्ण मंच बनाती है।
- **वर्तमान नेतृत्व:** उपाध्यक्ष - अशोक कुमार लाहिड़ी; CEO - श्री बी.वी.आर. सुब्रह्मण्यम।

योजना आयोग बनाम नीति आयोग

विशेषता	योजना आयोग (1950)	नीति आयोग (2015)
दृष्टिकोण	टॉप-डाउन (ऊपर से नीचे)	बॉटम-अप (नीचे से ऊपर)
राज्यों की भूमिका	सीमित भागीदारी	सक्रिय भागीदारी
वित्तीय शक्ति	फंड आवंटन का अधिकार	केवल नीतिगत सुझाव
प्रकृति	केंद्र-केंद्रित	विकेंद्रीकृत

Result Mitra

5. पश्चिम बंगाल का आयुष्मान भारत में प्रवेश



चर्चा में क्यों?

- पश्चिम बंगाल सरकार और राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (NHA) के बीच हुए समझौता ज्ञापन (MoU) के साथ, पश्चिम बंगाल AB PM-JAY को लागू करने वाला देश का 36वां राज्य/केंद्र शासित प्रदेश बन गया है।

महत्वपूर्ण तथ्य:

- **पहला राज्य:** जम्मू और कश्मीर, आयुष्मान भारत योजना लागू करने और सबसे अधिक गोल्डन कार्ड जारी करने वाला पहला राज्य/केंद्र शासित प्रदेश है।

- **योजना का शुभारंभ:** 23 सितंबर 2018 को रांची, झारखंड से।
- **लक्ष्य:** सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज (UHC) और SDG-3 (अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण) के तहत 'किसी को भी पीछे न छोड़ें' (Leave No One Behind) का सिद्धांत।

आयुष्मान भारत के चार स्तंभ

I. **आयुष्मान आरोग्य मंदिर (AAM):** प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल का आधार; संक्रामक और गैर-संक्रामक रोगों (मधुमेह, उच्च रक्तचाप) की स्क्रीनिंग और उपचार।

2. **प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (PM-JAY):** प्रति पात्र परिवार प्रति वर्ष ₹5 लाख का कैशलेस/पेपरलेस स्वास्थ्य बीमा कवर। यह निचले 40% (लगभग 55 करोड़) आबादी को कवर करती है।

3. **PM-ABHIM (2021):** स्वास्थ्य ढांचे को मजबूती देने हेतु केंद्रीय वित्त पोषित योजना; इसका लक्ष्य महामारी और आपदा प्रबंधन को सुदृढ़ करना तथा 'वन हेल्थ' (One Health) दृष्टिकोण को बढ़ावा देना है।

4. **आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (ABDM):** ABHA ID के माध्यम से इंटरऑपरेबल डिजिटल स्वास्थ्य इकोसिस्टम बनाना।

PM-JAY: मुख्य विशेषताएं और पात्रता

- **पोर्टेबिलिटी:** लाभार्थी पूरे देश में कहीं भी, किसी भी सूचीबद्ध अस्पताल में इलाज करा सकते हैं।
- **कवरेज:** परिवार के आकार या आयु पर कोई सीमा नहीं; भर्ती होने से 3 दिन पहले और छुट्टी के बाद के 15 दिनों का खर्च शामिल।
- **पात्रता:** मुख्य रूप से SECC 2011 के आंकड़ों पर आधारित; पात्रता जांच हेतु mera.pmjay.gov.in पोर्टल या 'आयुष्मान मित्र' केंद्र।
- **कार्यान्वयन:** NHA (स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत स्वायत्त संस्था) द्वारा संचालित।

पश्चिम बंगाल के लिए महत्व

- **समावेशी स्वास्थ्य सेवा:** आर्थिक तंगी के बिना गुणवत्तापूर्ण तृतीयक देखभाल तक पहुंच।
- **सहकारी संघवाद:** स्वास्थ्य एक राज्य सूची (State List) का विषय है; केंद्र-राज्य का सहयोग संघवाद को मजबूत करता है।
- **बुनियादी ढांचा:** सरकारी और निजी अस्पतालों के विशाल नेटवर्क के जुड़ने से चिकित्सा सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार होगा।

6. दिव्यांगजन कारीगरों का आर्थिक सशक्तिकरणः पीएम विश्वकर्मा और OSOP का अभिसरण



चर्चा में क्यों?

- भारत सरकार ने पीएम विश्वकर्मा (PMV) योजना और 'वन स्टेशन वन प्रोडक्ट' (OSOP) पहल का एकीकरण किया है, ताकि दिव्यांगजन कारीगरों को समावेशी विकास और आर्थिक आत्मनिर्भरता प्रदान की जा सके।

पीएम विश्वकर्मा योजना (PMV):

- **लक्ष्य:** पारंपरिक कारीगरों (जैसे बढ़ई, लोहार, कुम्हार, मूर्तिकार आदि) की कौशल क्षमता का विकास।
- **प्रबंधन:** कौशल विकास मंत्रालय और वित्त मंत्रालय का संयुक्त प्रयास।

प्रमुख घटक:

- **कौशल उन्नयन:** बुनियादी और उन्नत प्रशिक्षण के साथ दैनिक भत्ता।
- **टूलकिट:** आधुनिक औजारों के लिए ₹15,000 की सहायता।
- **ऋण:** बिना गारंटी के ₹1 लाख (प्रथम चरण) और ₹2 लाख (द्वितीय चरण) का रियायती ऋण।
- **योग्यता:** 18 वर्ष से अधिक आयु के असंगठित क्षेत्र के कारीगर।

एक जिला एक उत्पाद (ODOP):

- **लक्ष्य:** हर जिले की अनूठी पहचान और उत्पाद को वैश्विक ब्रांड बनाना।
- **प्रबंधन:** वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय (DPIIT)।
- **प्रमुख घटक:** डिजिटल गिफ्ट कैटलॉग, ई-कॉमर्स प्लेटफार्म, उत्पाद-विशिष्ट 'हब' का विकास और हर जिले को 'एक्सपोर्ट हब' में बदलना।

7. NCERT Dispute



चर्चा में क्यों?

- 1975 के आपातकाल के 50 वर्ष पूर्ण होने पर, एनसीईआरटी ने कक्षा 9 की पाठ्यपुस्तक में एक विशेष खंड जोड़ा है। इसका उद्देश्य छात्रों को भारतीय संवैधानिक इतिहास की जटिलताओं और लोकतंत्र की चुनौतियों के प्रति जागरूक करना है।

आपातकाल का पाठ्यपुस्तक में संदर्भः

- **कारणः** आर्थिक अस्थिरता (मुद्रास्फीति, बेरोजगारी) और तत्कालीन सरकार के विरुद्ध बढ़ता जन-असंतोष।
- **दमनकारी प्रभावः** मौलिक अधिकारों का निलंबन, प्रेस सेंसरशिप और राजनीतिक विरोधियों की व्यापक गिरफ्तारियां।
- **जन-आंदोलनः** 'लोक नायक' जयप्रकाश नारायण (JP) का नेतृत्व, जिन्होंने छात्रों और नागरिकों को लामबंद किया।
- **लोकतंत्र की परिपक्वताः** 1977 का चुनाव और सत्ता परिवर्तन, जो भारतीय मतदाता की शक्ति का प्रमाण बना।

आपातकालः एक संवैधानिक एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

- **अवधिः** 25 जून 1975 - 21 मार्च 1977।
- **आधारः** संविधान के अनुच्छेद 352 के अंतर्गत 'आंतरिक अशांति' (Internal Disturbance)।
- **संस्थागत प्रभावः** 44वां संविधान संशोधन (1978) एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआः
- 'आंतरिक अशांति' को हटाकर 'सशस्त्र विद्रोह' (Armed Rebellion) शब्द जोड़ा गया।
- आपातकाल के दुरुपयोग को रोकने हेतु न्यायिक और सुरक्षात्मक प्रावधानों को सुदृढ़ किया गया।

लोकतंत्र के व्यापक आयाम (NCERT का नया दृष्टिकोण):

- **लोकतंत्र की चुनौतियां:** फर्जी समाचार (Fake News), क्षेत्रवाद, और सामाजिक-आर्थिक असमानता।
- **नागरिक भागीदारी:** छात्रों को 'लोकतंत्र और आप' के माध्यम से सक्रिय नागरिकता (Active Citizenship) के लिए प्रेरित करना।
- **संस्थागत भूमिका:** मीडिया (चौथा स्तंभ) की जवाबदेही और जमीनी स्तर पर स्थानीय सुशासन (पंचायती राज) की भूमिका।

शैक्षणिक विवादः


NCERT Mathematics
NCERT Mathematics
NCERT Mathentis Science
NCERT Mathematics
NCERT Science
NCERT

चर्चा में क्यों? -

- Dancing Girl लगभग 4,000–4,500 वर्ष पुरानी कांस्य प्रतिमा है, जो Mohenjo-daro से मिली थी और Indus Valley Civilization की सबसे प्रसिद्ध कलाकृतियों में गिनी जाती है।
- नई NCERT पुस्तक में प्रतिमा के ऊपरी हिस्से (torso) को शेडिंग/कवर करके ऐसा दिखाया गया मानो उसने वस्त्र पहन रखे हों।
- कई इतिहासकारों, पुरातत्वविदों और कला विशेषज्ञों ने इसे ऐतिहासिक साक्ष्यों से छेड़छाड़ और मूल कलाकृति का गलत प्रतिनिधित्व बताया।

NCERT का पक्ष

- बताया गया कि चित्र को "age-appropriate" (स्कूली छात्रों के लिए उपयुक्त) बनाने के उद्देश्य से संशोधित किया गया था। हालांकि इस तर्क पर भी व्यापक बहस हुई।

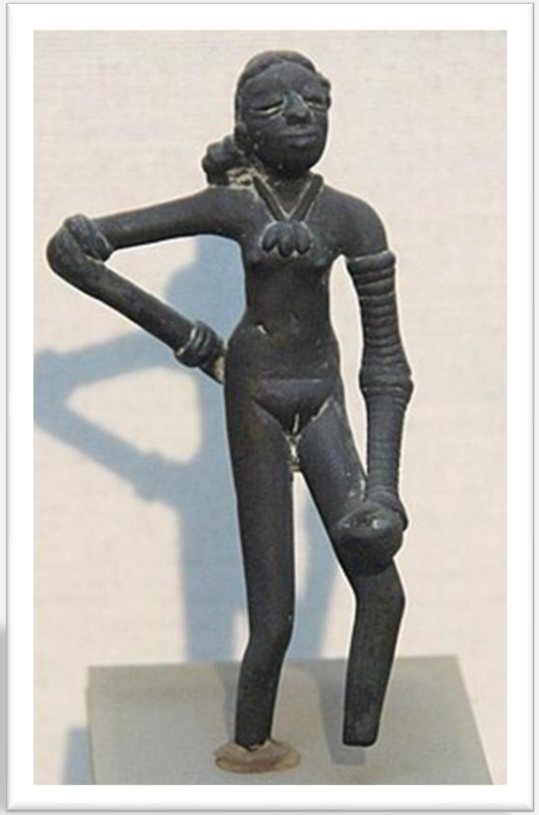
फिर क्या हुआ?

- लगातार आलोचना के बाद NCERT ने निर्णय लिया कि:
- संशोधित चित्र हटाया जाएगा।
- मूल (Original) Dancing Girl की तस्वीर को डिजिटल और आगामी प्रिंट संस्करणों में वापस शामिल किया जाएगा।

- Dancing Girl (नृत्यांगना) Dancing Girl सिंधु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilization) की सबसे प्रसिद्ध कांस्य प्रतिमाओं में से एक है। इसे भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीन धातुकला का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है।

मुख्य तथ्य

- खोज (Discovery): वर्ष 1926 में।
- स्थान: Mohenjo-daro
- काल: लगभग 2500–2300 ईसा पूर्व (BCE)
- सामग्री: कांस्य (Bronze)
- ऊँचाई: लगभग 10.5 सेमी
- निर्माण तकनीक: Lost-Wax Casting (Cire Perdue)



प्रतिमा की विशेषताएँ

- एक युवा लड़की को आत्मविश्वासपूर्ण मुद्रा में दर्शाया गया है।
- दायाँ हाथ कमर पर तथा बायाँ हाथ नीचे की ओर है।
- बाएँ हाथ में कई चूड़ियाँ बनी हुई हैं।
- गले में हार और बाल पीछे की ओर जूड़े में बंधे हुए दिखाए गए हैं।
- प्रतिमा वस्त्रहीन है, जो उस समय की कलात्मक शैली और सामाजिक प्रस्तुति को दर्शाती है।

महत्व

- सिंधु सभ्यता की उन्नत धातुकर्म तकनीक का प्रमाण।
- उस समय के कला कौशल, शिल्पकला और सौंदर्यबोध को दर्शाती है।
- यह साबित करती है कि सिंधु सभ्यता के कारीगर Lost-Wax Casting जैसी जटिल तकनीक में दक्ष थे।
- इसे विश्व की सबसे प्रसिद्ध प्राचीन कांस्य प्रतिमाओं में गिना जाता है।

चर्चा में क्यों?

- एनसीईआरटी (NCERT) द्वारा कक्षा 6 की कन्नड़ आर3 (R3) पाठ्यपुस्तक के नामकरण और उसमें दी गई खाद्य-संबंधी सामग्री के चित्रण पर कर्नाटक के शिक्षाविदों और कन्नड़ विकास प्राधिकरण (KDA) ने वैचारिक पूर्वाग्रह का आरोप लगाया है।

प्रमुख बिंदुः

- **नामकरण विवादः** पाठ्यपुस्तक का नाम "कृष्ण" रखे जाने को आलोचकों ने एक विशिष्ट धार्मिक-सांस्कृतिक पूर्वाग्रह माना है।
- **एनसीईआरटी का तर्क (नामकरण):** आर3 (R3) श्रृंखला की सभी भाषाओं की पुस्तकों का नाम भारतीय नदियों पर है; जैसे—हिंदी (गंगा), अंग्रेजी (कावेरी), उर्दू (यमुना) और कन्नड़ (कृष्णा नदी/कृष्ण)।
- **आहार संबंधी विवादः** अध्याय 6, 'स्वास्थ्य ही धन है' में शामिल चित्र में केवल फल, सब्जियां, दालें और अंडे दिखाए गए हैं, लेकिन मांस या मछली का अभाव है।

- ***आलोचकों का तर्क (KDA):*** *मांसाहारी भोजन का पूर्ण अभाव भारत की विविधतापूर्ण खान-पान संस्कृति और क्षेत्रीय खाद्य आदतों के प्रति असंवेदनशीलता को दर्शाता है।*
- ***एनसीईआरटी का स्पष्टीकरण (सामग्री):*** *अध्याय का उद्देश्य केवल "स्वस्थ खान-पान की आदतों" (संतुलित आहार, व्यायाम) के प्रति जागरूकता लाना है; इसमें कहीं भी शाकाहार का औचित्य या मांसाहार का विरोध नहीं किया गया है।*
- ***वैधानिक और नीतिगत परिप्रेक्ष्य:*** *यह विवाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के तहत 'स्थानीय ज्ञान और संस्कृति' के समावेश और 'पाठ्यक्रम की तटस्थता' के बीच संतुलन को चुनौती देता है।*

4. लिंग चयन निषेध और भारत की 'अधूरी' सामाजिक यात्रा



चर्चा में क्यों?

- सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में महाराष्ट्र के एक डॉक्टर की याचिका खारिज करते हुए PCPNDT अधिनियम, 1994 की कठोरता को पुनः स्पष्ट किया है। न्यायालय ने बल दिया कि तकनीक के दुरुपयोग को रोकने हेतु कड़े कानूनों के साथ-साथ एक गहरी मानसिक क्रांति अनिवार्य है।

PCPNDT अधिनियम, 1994 के मुख्य तथ्यः

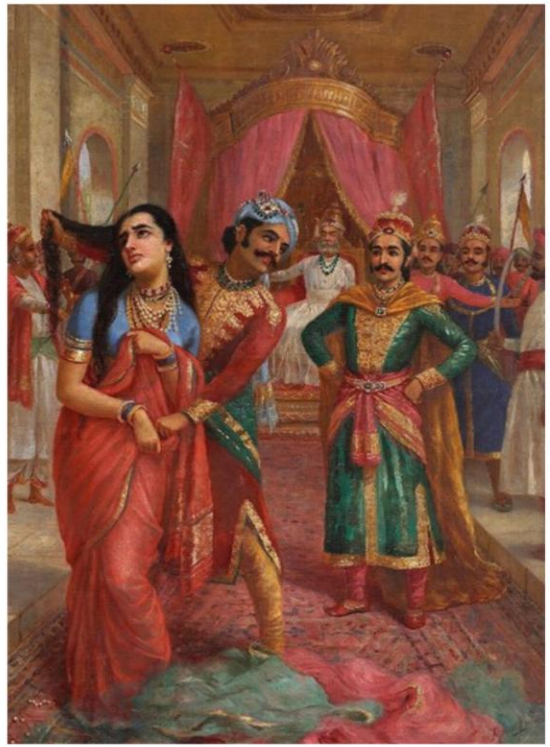
- **पूरा नामः** गर्भधारण पूर्व और प्रसव पूर्व निदान तकनीक (लिंग चयन निषेध) अधिनियम।
- **उद्देश्यः** कन्या भ्रूण हत्या रोकना और लिंग चयन की कुप्रथा को समाप्त करना।
- **विशिष्टताः** यह विश्व के सबसे कठोर कानूनों में से एक है क्योंकि यह केवल 'लिंग-चयनित गर्भपात' ही नहीं, बल्कि 'लिंग निर्धारण' को ही अपराध मानता है।
- **अनिवार्यताः** आनुवंशिक केंद्रों/लैब का पंजीकरण अनिवार्य है; 'F' फॉर्म का रखरखाव न करना कानून का गंभीर उल्लंघन है।

ऐतिहासिक और न्यायिक पृष्ठभूमिः

- **उत्पत्तिः** 1981-1991 के बीच बाल लिंगानुपात (962 से 945) में गिरावट और अल्ट्रासाउंड तकनीक के प्रसार के कारण 1994 में इसे लागू किया गया।
- **न्यायालय की चिंताः** 1991-2011 के दौरान लिंगानुपात 945 से गिरकर 919 हो गया। यद्यपि वर्तमान में यह 929 है, लेकिन यह पूर्ण समानता से दूर है।

- **शून्य सहिष्णुता:** न्यायालय ने स्पष्ट किया कि 'F' फॉर्म में त्रुटि को 'प्रशासनिक भूल' नहीं माना जा सकता, क्योंकि यह कानून के मूल उद्देश्य को कमजोर करता है।
- **सरकारी प्रयास:** 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' और 'प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना' जैसी 10 प्रमुख योजनाओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरण पर जोर दिया जा रहा है।

09. भारतीय कला बाजार का उदय और राजा रवि वर्मा की विरासत



चर्चा में क्यों?

- अस्तागुरु (Astaguru) द्वारा आयोजित 'कलेक्टर्स चॉइस' नीलामी भारतीय कला बाजार की बढ़ती वैश्विक प्रतिस्पर्धा और परिपक्वता का प्रतीक है। कला अब केवल सजावट नहीं, बल्कि एक 'निवेश' (Investment) और 'सांस्कृतिक ऐतिहासिक' धरोहर के रूप में स्थापित हो रही है।

नीलामी के मुख्य आकर्षणः

- **लिटिल प्रिंस ऑफ करेजः** राजा रवि वर्मा की कृति, जो त्याग और साहस की गाथा है।
- **आधुनिकता का सफरः** एम.एफ. हुसैन (सावनी देश), गणेश पायने (द कन्वर्सेशन), और धनराज भगत (खड़ी आकृति - 1955) की कृतियों का समावेश।
- **विविधताः** एम.वी. धुरंधर के 22 रेखाचित्र (औपनिवेशिक समाज के अध्ययन हेतु महत्वपूर्ण)।

- **राजा रवि वर्मा:** भारतीय आधुनिक कला के जनक

परिचय:

- **जन्म:** 29 अप्रैल 1848, किलीमनूर, केरल।
- **शैली:** पश्चिमी तैलचित्र (Oil Painting) तकनीक और भारतीय पौराणिक विषयों का अनूठा संगम।
- **योगदान:** देवताओं और पौराणिक कथाओं को 'दृश्य छवि' (Visual Image) प्रदान की, जिससे वे आम भारतीय जनमानस का हिस्सा बने।

प्रमुख कार्य और उपलब्धियां:

- **कृतियाँ:** हंस दमयंती, शकुंतला, नायर महिला, जटायु वध, और लिटिल प्रिंस ऑफ करेज।
- **कला का लोकतंत्रीकरण:** मुंबई में 'रवि वर्मा फाइन आर्ट लिथोग्राफिक प्रेस' की स्थापना की। इसके माध्यम से चित्रों के सस्ते प्रिंट्स (Lithographs) आम घरों तक पहुँचे।
- **ऐतिहासिक रिकॉर्ड:** अप्रैल 2026 में उनकी पेंटिंग "यशोदा और कृष्ण" ₹167.2 करोड़ में बिकी, जो किसी भी भारतीय कलाकृति के लिए अब तक की सर्वाधिक नीलामी कीमत है (खरीदार: सायरस एस. पूनावाला)।

10. विकसित भारत गारंटी रोजगार और आजीविका मिशन (VB-G RAM G)



चर्चा में क्यों?

- भारत सरकार ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA) को प्रतिस्थापित करते हुए । जुलाई 2026 से पूरे देश में VB-G RAM G लागू करने का निर्णय लिया है।

MGNREGA बनाम VB-G RAM G

तुलनात्मक आधार	MGNREGA (पुराना)	VB-G RAM G (नया)
प्रकृति	मांग-आधारित (कानूनी अधिकार)	आपूर्ति-आधारित (बजट पर आधारित)
कार्य दिवस	100 दिन	125 दिन
लागत साझेदारी	90:10 (केंद्र-राज्य)	60:40 (केंद्र-राज्य)
कार्यक्षेत्र	सार्वभौमिक (पूरा भारत)	केंद्र द्वारा अधिसूचित क्षेत्र
कृषि मौसम	निरंतर रोजगार	60 दिन की 'ब्लैकआउट अवधि

प्रमुख बिंदुः

- **अधिसूचनाः** नियमों का मसौदा 22 मई 2026 को जारी किया गया।
- **प्रभावी तिथिः** । जुलाई 2026।
- **वित्तीय मॉडलः** निधि वितरण ।6वें वित्त आयोग के 'प्रदर्शन मानदंडों' (समय पर भुगतान, सोशल ऑडिट, कार्य पूर्णता) से संबद्ध।

राज्यों का विरोधः

- **वित्तीय बोझः** लागत साझेदारी 10% से बढ़कर 40% होने पर मध्य प्रदेश, बिहार, झारखंड की चिंता।
- **मजदूरी दरः** वर्तमान ₹255 को बढ़ाकर ₹513 (बिहार का प्रस्ताव) करने की मांग।
- **ब्लैकआउट अवधिः** कृषि के चरम मौसम में काम रोकने (धारा 5) के प्रावधान का कर्नाटक, तेलंगाना और पंजाब द्वारा विरोध।
- **प्रशासनिक चिंताः** केंद्र का 'नियंत्रण-आधारित संघवाद' की ओर झुकाव, जिससे राज्यों की स्वायत्तता कम होने की आशंका।

Result Mitra

II. NCB वार्षिक रिपोर्ट 2026: भारत में मादक पदार्थों की तस्करी की चुनौतियां



चर्चा में क्यों?

- केंद्रीय गृह मंत्री द्वारा जारी NCB की 2026 वार्षिक रिपोर्ट में म्यांमार के 'गोल्डन ट्रायंगल' से पूर्वोत्तर राज्यों में और पाकिस्तान से पंजाब में ड्रोन आधारित मादक पदार्थों की तस्करी में हुई चिंताजनक वृद्धि को रेखांकित किया गया है।

पूर्वी सीमा: म्यांमार से बढ़ता खतरा

- **पृष्ठभूमि:** 2022 में तालिबान द्वारा अफगानिस्तान में अफीम पर प्रतिबंध के बाद, म्यांमार वैश्विक अफीम आपूर्ति का प्रमुख विकल्प बन गया है।

- **उत्पादन में वृद्धिः** 2021-2023 के बीच म्यांमार में अफीम की अवैध खेती में 56% की वृद्धि हुई (कुल क्षेत्रफल 45,200 हेक्टेयर)।
- **प्रभावित राज्यः** मुख्य रूप से मणिपुर, मिजोरम और नागालैंड।

प्रमुख गलियारेः

- **मणिपुर कॉरिडोरः** राष्ट्रीय राजमार्ग 102 हेरोइन और मेथम्फेटामाइन (याबा) के लिए मुख्य प्रवेश बिंदु।
- **मिजोरम गलियाराः** चम्फाई से ऐजोल होते हुए असम की बराक घाटी (सिलचर)।
- **आंकड़े (2025):** मिजोरम में 1,477 किग्रा एम्फ़ैटेमिन-प्रकार के उत्तेजक पदार्थ जब्त (देशभर की कुल बरामदगी का एक बड़ा हिस्सा)।

पश्चिमी सीमा: ड्रोन और पारंपरिक तस्करी

- **ड्रोन तस्करी:** पिछले 5 वर्षों में 100 गुना वृद्धि (2021 में 3 घटनाएं बनाम 2025 में 305 घटनाएं)।
- **पंजाब की स्थिति:** 2025 में दर्ज कुल 305 ड्रोन मामलों में से 298 मामले अकेले पंजाब में दर्ज हुए।
- **प्रमुख पदार्थ:** हेरोइन और मेथम्फेटामाइन।
- **समुद्री मार्ग:** गुजरात और महाराष्ट्र तटों का उपयोग, मछली पकड़ने वाली नौकाओं के माध्यम से निगरानी से बचाव।

निष्कर्ष और सुरक्षा चिंताएं:

- **सीमा प्रबंधन:** भारत-म्यांमार सीमा पर 'मुक्त आवागमन व्यवस्था' (FMR) और बिना बाड़ वाली छिद्रपूर्ण सीमाएं तस्करी के लिए सुगम मार्ग प्रदान करती हैं।
- **अफ़ग़ानिस्तान कारक:** तालिबान के प्रतिबंध के बावजूद, पुराने तस्करी नेटवर्क और स्टॉक अफगानिस्तान-पाकिस्तान-ईरान गलियारे के माध्यम से सक्रिय हैं।
- **तकनीकी विकास:** तस्करी नेटवर्क का यूएवी (UAV/ड्रोन) के उपयोग की ओर बढ़ना उनकी परिचालन परिपक्वता को दर्शाता है।

मंजिले उन्ही को मिलती है जिनके सपनों
में जान होती है पंखों से कुछ नहीं होता

हौसलों से उड़ान होती है



1. पैदल चलने का अधिकार: संवैधानिक और न्यायिक आयाम



चर्चा में क्यों?

- सर्वोच्च न्यायालय ने एक मोटर दुर्घटना मामले में यह स्पष्ट किया है कि 'सुरक्षित फुटपाथों पर चलने का अधिकार' संविधान के अनुच्छेद 19 और 21 के अंतर्गत एक मौलिक अधिकार है।

निर्णय के प्रमुख संवैधानिक आधार:

- अनुच्छेद 19(1)(घ): स्वतंत्र रूप से आवागमन का अधिकार।
- अनुच्छेद 21: 'जीवन के अधिकार' का अभिन्न अंग (गरिमापूर्ण जीवन हेतु सुरक्षित पैदल आवाजाही अनिवार्य है)।

- **अन्यः** अभिव्यक्ति, सभा और संगठन के अधिकारों (अनुच्छेद 19(1)(क), (ख), (ग)) से भी संबद्ध।

न्यायालय की मुख्य टिप्पणियाँ:

- **अधिकारों का प्राथमिकता क्रमः** 'पैदल चलने का अधिकार' (Right to Walk) को 'मोटर वाहनों के चलने के अधिकार' (Right to Drive) से वरीयता दी जानी चाहिए।
- **शहरी नियोजन में सुधारः** दशकों से भारतीय शहरों का नियोजन केवल कारों/वाहनों को केंद्रित कर किया गया, जो कि एक 'अभिजात्यवादी' दृष्टिकोण है।
- **प्रशासनिक जिम्मेदारीः** शहरी विकास प्राधिकरणों और नगर निकायों का कानूनी दायित्व है कि वे फुटपाथों का सीमांकन, निर्माण और रखरखाव करें।

निर्देश और भविष्य की राह:

1. **वैधानिक ढांचा:** सरकार को पैदल यात्रियों के अधिकारों हेतु एक विशिष्ट कानून बनाना चाहिए।
2. **नियामक (Regulator):** पैदल यात्री बुनियादी ढांचे के कार्यान्वयन हेतु एक पूर्णकालिक नियामक निकाय की आवश्यकता।
3. **अंतर-मंत्रालयी समन्वय:** आवास एवं शहरी मामलों, सड़क परिवहन और विधि आयोग को सम्मिलित प्रयासों की आवश्यकता।
5. **क्षतिपूर्ति का अधिकार:** फुटपाथों के अभाव या उल्लंघन से होने वाली दुर्घटनाओं के लिए नागरिक मोटर वाहन अधिनियम से परे, सीधे संवैधानिक उपायों/मुआवजे के हकदार होंगे।

- ***अनुच्छेद 21:*** *न्यायपालिका द्वारा विकसित 'विस्तृत अधिकार क्षेत्र'*
- *न्यायालय ने 'जीवन' की व्याख्या 'पशुवत अस्तित्व' से बदलकर 'गरिमापूर्ण जीवन' के रूप में की है। इसमें शामिल प्रमुख अधिकार हैं:*
  - ❑ *निजता का अधिकार (पुट्टस्वामी मामला)।*
  - ❑ *स्वच्छ पर्यावरण व स्वास्थ्य का अधिकार।*
  - ❑ *आजीविका का अधिकार (ओल्गा टेलिस मामला)।*
  - ❑ *गरिमापूर्ण मृत्यु व विवाह की स्वतंत्रता (हादिया मामला)।*
  - ❑ *पैदल चलने का अधिकार (नवीनतम न्यायिक विस्तार)।*

Result Mitra

2. जीवन का अधिकार और आघात संबंधी देखभाल (Trauma Care): न्यायिक निर्देश



चर्चा में क्यों?

- सर्वोच्च न्यायालय (मई 2026) ने 'सेवलाइफ फाउंडेशन' मामले में 'आघात संबंधी देखभाल के अधिकार' को अनुच्छेद 21 (जीवन का अधिकार) के तहत एक अभिन्न अंग घोषित किया है।

न्यायालय के प्रमुख निर्देश:

- **हेल्पलाइन एकीकरण:** 3 महीने के भीतर '112' हेल्पलाइन को आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रणाली (Emergency Response System) से एकीकृत करना।

- **एम्बुलेंस मानक (AIS-125):** सार्वजनिक और निजी सभी एम्बुलेंस में AIS-125 मानक, GPS/VLTD की फिटिंग और '112' के साथ रीयल-टाइम डेटा एकीकरण अनिवार्य।
- **ट्रॉमा रजिस्ट्री:** केंद्र द्वारा 8 सप्ताह में डेटा प्रारूप जारी और राज्यों द्वारा 5 महीने में 'राज्य स्तरीय ट्रॉमा रजिस्ट्री' की स्थापना।
- **कैशलेस उपचार:** 'सड़क दुर्घटना पीड़ितों के लिए नकद रहित उपचार योजना, 2025' (PM-RAHAT) को 3 महीने के भीतर सभी राज्यों द्वारा अनिवार्य रूप से लागू करना।

'नेक व्यक्ति' (Good Samaritan) सुरक्षा:

- **धारा 134A का प्रभावी अनुपालन:** दुर्घटना पीड़ितों की सहायता करने वालों को कानूनी पूछताछ/पुलिस कार्यवाही से सुरक्षा।
- **जन जागरूकता:** केंद्र और राज्यों द्वारा । महीने के भीतर '112' हेल्पलाइन, सद्भावना कानूनों और कैशलेस योजनाओं पर बहुभाषी जनसंचार अभियान।

दृष्टिकोण: 'नीचे से ऊपर' (Bottom-up Approach)

- ट्रॉमा देखभाल केवल अस्पताल तक सीमित नहीं, बल्कि प्राथमिक चिकित्सा कौशल, समान ढांचा और पोर्टल पर नियमित अनुपालन रिपोर्टिंग का एक एकीकृत पारिस्थितिकी तंत्र है।

3. महाराष्ट्र RTI नियम, 2026: एक विवेचनात्मक विश्लेषण



चर्चा में क्यों?

- महाराष्ट्र सरकार द्वारा अधिसूचित नए नियम (5 जुलाई, 2026 से प्रभावी) प्रशासनिक सुगमता के नाम पर नागरिक अधिकारों को सीमित करने के आरोपों के कारण विवादों में हैं।

मुख्य विवादास्पद बदलाव:

- **लागत में वृद्धि:** आवेदन शुल्क ₹10 से ₹30 और फोटोकॉपी शुल्क ₹2 से ₹5, साथ ही डिजिटल प्रतियों पर शुल्क।
- **दस्तावेजी अनिवार्यता:** स्व-सत्यापित फोटो आईडी अनिवार्य (आवेदकों की गोपनीयता और सुरक्षा हेतु खतरा)।

- **प्रक्रियात्मक बाधाएं:** 'एक आवेदन, एक विषय' की सीमा और 150 शब्दों का बंधन।
- **न्यायिक/अपीलीय प्रतिबंध:** सुनवाई में कानूनी प्रतिनिधित्व पर रोक और आवेदक की मृत्यु पर आवेदन का स्वतः समापन (प्राकृतिक न्याय के विरुद्ध)।

सकारात्मक पक्ष:

- आलोचना के बाद, 'सूचना मांगने का उद्देश्य' बताने की अनिवार्यता को वापस ले लिया गया है, जो आरटीआई अधिनियम, 2005 की धारा 6(2) के अनुरूप है।

सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005

- **उद्देश्य:** सरकारी निकायों में पारदर्शिता, भ्रष्टाचार पर अंकुश और नागरिक जवाबदेही सुनिश्चित करना।

महत्वपूर्ण धाराएं:

- **धारा 3:** नागरिकों को सूचना प्राप्त करने का कानूनी अधिकार।
- **धारा 6(2):** आवेदक को कारण बताने की आवश्यकता नहीं।
- **धारा 8 (छूट):** राष्ट्रीय सुरक्षा, विदेशी संबंधों, व्यक्तिगत गोपनीयता और न्यायालय द्वारा वर्जित मामलों में सूचना देने से छूट।

प्रशासनिक प्रक्रिया:

- **लोक सूचना अधिकारी (PIO):** 30 दिनों के भीतर सूचना प्रदान करने के लिए उत्तरदायी।
- **अपील प्रक्रिया:** प्रथम अपीलीय अधिकारी (FAA) → राज्य/केंद्रीय सूचना आयोग।
- **समय सीमा:** सामान्य सूचना हेतु 30 दिन; जीवन/स्वतंत्रता से जुड़ी सूचना हेतु 48 घंटे।

५. चुनाव चिन्ह आवंटन और निर्वाचन आयोग के नियम



- **कानूनी आधार:** चुनाव चिन्हों का आवंटन 'चुनाव चिन्ह (आरक्षण और आवंटन) आदेश, 1968' के तहत निर्वाचन आयोग (ECI) द्वारा विनियमित होता है।

मुख्य प्रावधान:

- **मान्यता प्राप्त दल:** राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय दलों के लिए 'आरक्षित चिन्ह' (Reserved Symbols) निर्धारित होते हैं।
- **पंजीकृत (गैर-मान्यता प्राप्त) दल और निर्दलीय:** इन्हें आयोग द्वारा जारी 'मुक्त चिन्हों' (Free Symbols) की सूची से चिन्ह आवंटित किए जाते हैं।

- **पशु-पक्षी प्रतिबंध (1990 के बाद):** निर्वाचन आयोग ने पशु कल्याण को ध्यान में रखते हुए जीवित प्राणियों को चुनाव चिन्ह के रूप में आवंटित करना बंद कर दिया है।
- **अपवाद:** बसपा का 'हाथी', जो इस नियम के लागू होने से पहले ही आवंटित था।
- **मुक्त चिन्हों की स्थिति:** 23 मई, 2025 तक अद्यतन सूची में 184 चिन्ह (घरेलू उपकरण, खाद्य पदार्थ, कृषि/खेल उपकरण) शामिल हैं।

Cockroach Janta Party (CJP)

- **परिचय:** CJP वर्तमान में भारत में एक वायरल 'व्यंग्यात्मक युवा राजनीतिक आंदोलन' है, जो एक पंजीकृत राजनीतिक दल न होकर एक "युवा दबाव समूह" (Youth Pressure Group) के रूप में कार्य कर रहा है।

पृष्ठभूमि:

- **संस्थापक:** अभिजीत दिपके (राजनीतिक संचार रणनीतिकार)।
- **नाम की उत्पत्ति:** मुख्य न्यायाधीश (CJI) द्वारा युवाओं के संदर्भ में की गई एक विवादास्पद 'कॉकरोच' टिप्पणी के विरोध में व्यंग्यात्मक रूप से यह नाम चुना गया।

प्रमुख विशेषताएं:

- **विचारधारा:** खुद को "धर्मनिरपेक्ष, समाजवादी, लोकतांत्रिक और आलसी" परिभाषित करना।

- **उद्देश्यः** बेरोजगारी, परीक्षा अनियमितताओं (जैसे NEET/CBSE), और राजनीतिक जवाबदेही जैसे गंभीर मुद्दों को memes और सोशल मीडिया के माध्यम से उठाना।
- **मांगें:** न्यायपालिका की स्वतंत्रता, RTI में पारदर्शिता और परीक्षा प्रणाली में सुधार।
- **सक्रियताः** 6 जून, 2026 को जंतर-मंतर पर प्रथम सार्वजनिक विरोध प्रदर्शन।

5. दलबदल विरोधी कानून और 'विलय अपवाद' की संवैधानिक पहेली



चर्चा में क्यों?

- टीएमसी (TMC) के 20 सांसदों के एक अन्य दल (NCPI) में विलय के दावे ने अनुच्छेद 4 (विलय अपवाद) की व्याख्या और राजनीतिक दल बनाम विधायी दल के अधिकारों पर एक नई संवैधानिक बहस छेड़ दी है।

संवैधानिक प्रावधान (दसवीं अनुसूची):

- **उद्भव:** 1985 का 52वां संविधान संशोधन; स्थिरता हेतु 'आया राम-गया राम' राजनीति पर रोक।
- **अयोग्यता के आधार:** सदस्यता त्यागना, व्हिप का उल्लंघन, निर्दलीय द्वारा दल में शामिल होना, या नामित सदस्य का 6 महीने बाद दल में जाना।
- **विलय अपवाद (अनुच्छेद 4):** यदि किसी दल के विधायी समूह के 2/3 सदस्य किसी अन्य दल में विलय करते हैं, तो वे अयोग्यता से मुक्त होंगे।

कानूनी विवाद: दो दृष्टिकोण

- **पक्ष A (विधायी बहुमत/गोवा मॉडल):** केवल 2/3 संख्या बल को विलय के लिए पर्याप्त मानता है, मूल पार्टी की अनुमति अनिवार्य नहीं।
- **पक्ष B (राजनीतिक संप्रभुता/महाराष्ट्र संकट):** सुभाष देसाई बनाम प्रधान सचिव (2023) मामले में सुप्रीम कोर्ट ने माना कि 'विधायी दल' स्वयं को 'राजनीतिक दल' से स्वतंत्र नहीं मान सकता। संगठनात्मक निर्णय और विधायी निर्णय अविभाज्य हैं।

प्रमुख चुनौतियां:

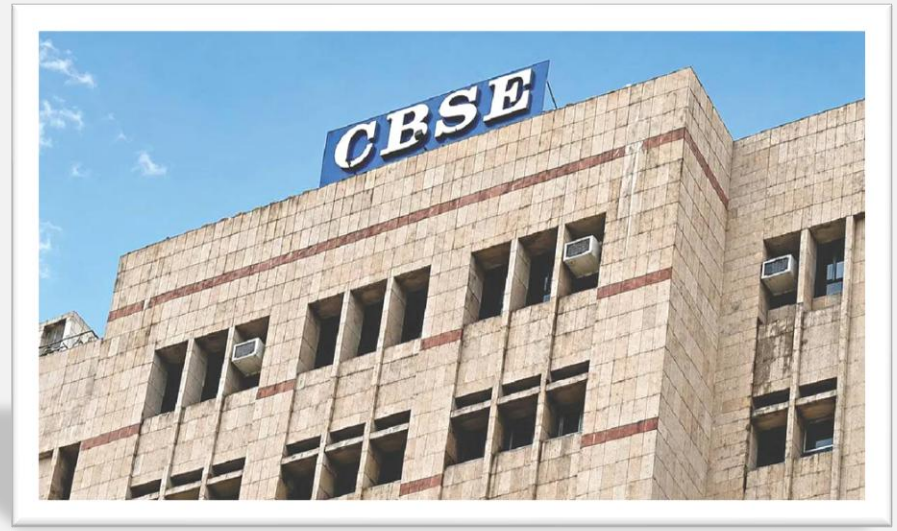
- **अध्यक्ष (Speaker) की भूमिका:** निर्णय हेतु कोई 'समय-सीमा' न होना; बागी विधायकों को दलबदल को 'वैध' बनाने का अतिरिक्त समय मिल जाता है।
- **कानून का दुरुपयोग:** 'विलय अपवाद' का उपयोग संगठित दलबदल के लिए 'लाइसेंस' की तरह किया जाना।
- **व्हिप का बंधन:** जब तक विलय स्वीकार न हो, बागी विधायक मूल पार्टी के व्हिप के प्रति बाध्य रहते हैं।
- यह संवैधानिक पहेली 'गिरीश चोडंकर बनाम गोवा विधानसभा' मामले में सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के बाद ही सुलझ सकेगी।

भावी सुधार हेतुः

1. **निश्चित समय-सीमाः** अध्यक्ष के निर्णय हेतु एक कानूनी समय-सीमा निर्धारित करना।
2. **विलय की स्पष्ट परिभाषाः** विलय का अर्थ केवल विधायी संख्या नहीं, बल्कि 'संगठनात्मक मिलन' होना चाहिए।
3. **निष्पक्षताः** दलगत राजनीति से ऊपर उठकर स्पीकर के निर्णय की प्रक्रिया को पारदर्शी बनाना।

Result Mitra

6. CBSE त्रिभाषा सूत्र विवादः



चर्चा में क्यों?

- 15 मई, 2026 को जारी CBSE के परिपत्र (जो 1 जुलाई, 2026 से प्रभावी है) में कक्षा IX के विद्यार्थियों के लिए त्रिभाषा सूत्र को अनिवार्य करने के निर्णय को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी गई है।

नीति के मुख्य प्रावधान:

- **अनिवार्यता:** कक्षा IX से 3 भाषाओं का अध्ययन अनिवार्य।
- **भाषा चयन:** संविधान की 8वीं अनुसूची से 2 भारतीय भाषाएँ + 1 अतिरिक्त (विदेशी भाषा जैसे फ्रेंच/जर्मन का विकल्प केवल भारतीय भाषाओं की अनिवार्यता के बाद)।

- **मूल्यांकन:** तीसरी भाषा के लिए कक्षा X की बोर्ड परीक्षा नहीं होगी; इसका मूल्यांकन आंतरिक होगा।

ऐतिहासिक और नीतिगत आधार:

- **कोठारी आयोग (1964-66):** पहली बार त्रिभाषा सूत्र की सिफारिश।
- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), 1968:** औपचारिक रूप से अपनाया गया।
- **NEP-2020 एवं NCF-2023:** बहुभाषावाद और समग्र विकास पर बल; किंतु "भाषा थोपने" के विरुद्ध।

विवाद के प्रमुख कारण:

- **संवैधानिक चिंताएं:** आलोचकों का तर्क है कि यह अनुच्छेद 29 और 30 (सांस्कृतिक और अल्पसंख्यक अधिकारों) के विरुद्ध हो सकता है।
- **स्वायत्तता का अभाव:** NEP-2020 का मूल सिद्धांत 'लचीलापन' है, जबकि अनिवार्य अनिवार्यता इसे सीमित करती है।
- **प्रशासनिक बाधाएं:** भाषाई शिक्षकों की कमी, अपर्याप्त शिक्षण संसाधन और छात्रों पर बढ़ता शैक्षणिक बोझ।
- **विधिक समर्थन का अभाव:** CBSE एक कार्यकारी निकाय है, अतः इस प्रकार के वृहद नीतिगत परिवर्तन के लिए संसदीय कानून का अभाव।

न्यायालय की भूमिकाः

- सुप्रीम कोर्ट ने तत्काल रोक से इनकार किया, लेकिन CBSE, एनसीईआरटी और सरकार से शिक्षकों की उपलब्धता, अवसंरचना और लॉजिस्टिक्स पर विस्तृत रिपोर्ट मांगी है।

आगे की राहः

- **बहुभाषी लाभः** संज्ञानात्मक लचीलापन, समस्या-समाधान कौशल और राष्ट्रीय एकीकरण।
- **संतुलन की आवश्यकताः** राष्ट्रीय एकता और भाषाई विविधता को बढ़ावा देने के लिए 'बहुभाषावाद' का लक्ष्य सराहनीय है, लेकिन इसे स्वैच्छिक और सुलभ बनाया जाना चाहिए, न कि अनिवार्य थोपा हुआ।

7. अयोध्या राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामला:



चर्चा में क्यों?

- अयोध्या राम मंदिर परिसर में दान-पात्रों से नकदी और मूल्यवान वस्तुओं की कथित चोरी और हेराफेरी के आरोपों की जांच के लिए SIT (विशेष जांच दल) का गठन किया गया है।

प्रमुख घटनाक्रमः

- **खुलासाः** जून 2026 में स्टीन ऑडिट के दौरान दान की राशि में विसंगति पाई गई; CCTV फुटेज से कर्मचारियों की संदिग्ध भूमिका का पता चला।

- **प्रशासनिक कार्रवाई:** मुख्यमंत्री के निर्देश पर 13 जून, 2026 को 3-सदस्यीय SIT का गठन।

SIT की संरचना:

- **विजय विश्वास पंत (IAS):** डिविजनल कमिश्नर, लखनऊ।
- **किरण एस (IPS):** पुलिस महानिरीक्षक।
- **नील रतन:** विशेष सचिव, वित्त विभाग।
- **साक्ष्य और बरामदगी:** कर्मचारी लवकुश मिश्रा के घर से ₹10 लाख नकद बरामद। जांच में कर्मचारियों द्वारा करोड़ों की संपत्ति (जमीन/प्लॉट) खरीदने का खुलासा।

- **वर्तमान स्थिति:** 16 जून, 2026 तक SIT ने मंदिर परिसर में 11 घंटे की जांच की और 100 से अधिक लोगों से पूछताछ की।
- **समय-सीमा:** SIT को 7 दिनों में प्रारंभिक रिपोर्ट और 15 दिनों में फाइनल रिपोर्ट सौंपने का निर्देश।

Result Mitra

४. आरएसएस (RSS) की कानूनी स्थिति और जवाबदेही का प्रश्न



चर्चा में क्यों?

- कर्नाटक सरकार द्वारा आरएसएस के सरसंघचालक को पत्र लिखकर संगठन की कानूनी पंजीकरण स्थिति, वित्तीय पारदर्शिता और कार्रवाई के आधार पर स्पष्टीकरण मांगे जाने के बाद से यह मुद्दा चर्चा में है।

सरकार द्वारा उठाए गए प्रमुख बिंदुः

- **वित्तीय पारदर्शिताः** आय, दान और व्यय के स्रोतों का सार्वजनिक खुलासा न होना।
- **संवैधानिक समानताः** अनुच्छेद 14 के तहत, छोटे एनजीओ/ट्रस्ट की तरह आरएसएस पर भी पंजीकरण और ऑडिट के मानक लागू होने चाहिए।
- **सार्वजनिक जवाबदेहीः** सार्वजनिक स्थानों पर आयोजनों के लिए वैधानिक प्राधिकरण और अनुमतियों का विवरण।

आरएसएस: एक संक्षिप्त परिचय:

- **स्थापना:** 1925, विजयदशमी, नागपुर; संस्थापक: डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार।
- **संरचना:** शीर्ष पद 'सरसंघचालक' (वर्तमान: डॉ. मोहन भागवत)।
- **कार्यप्रणाली:** 'शाखा' पद्धति पर आधारित।
- **विचारधारा:** सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और हिंदू संस्कृति का संरक्षण।
- **संघ परिवार:** विभिन्न क्षेत्रों में अनुषंगी संगठन, जैसे—बीजेपी (राजनीति), एबीवीपी (छात्र), भारतीय मजदूर संघ (श्रमिक)।

मुख्य विवाद और कानूनी तर्कः

- **आरएसएस का रुखः** स्वयं को एक 'स्वैच्छिक संगठन' मानता है जो वैचारिक और सामाजिक आधार पर कार्य करता है।
- **आलोचकों का तर्कः** संगठन का विशाल नेटवर्क और आय के स्रोत होने के बावजूद वैधानिक पंजीकरण न होना पारदर्शिता के मानकों पर प्रश्न उठाता है।

१. आधार (Aadhaar) और चुनावी शुचिता: न्यायिक विमर्श और वैधानिक सीमाएं



चर्चा में क्यों?

- सर्वोच्च न्यायालय ने मतदाता पंजीकरण (फॉर्म-6) में आधार के उपयोग और इसके 'नागरिकता/निवास' के प्रमाण के रूप में इस्तेमाल होने पर केंद्र और राज्यों से जवाब मांगा है।
  याचिका में आधार अधिनियम, 2016 की धारा 9 के संभावित उल्लंघन पर चिंता जताई गई है।

प्रमुख बिंदुः

- **आधार का वैधानिक स्वरूपः** आधार अधिनियम, 2016 की धारा 9 और UIDAI (अगस्त 2023) की अधिसूचना के अनुसार, आधार केवल 'पहचान का प्रमाण' (Proof of Identity) है, न कि नागरिकता, अधिवास (Domicile) या जन्मतिथि का प्रमाण।
- **याचिका का मुख्य तर्कः** मतदाता सूची में आधार के माध्यम से अवैध प्रवासियों द्वारा नाम दर्ज कराने का जोखिम, विशेष रूप से सीमावर्ती राज्यों (असम, पश्चिम बंगाल, पूर्वोत्तर) में राष्ट्रीय सुरक्षा और चुनावी निष्पक्षता के लिए खतरा है।

- **प्रस्तावित समाधान:** साइबर सुरक्षा और फोरेंसिक विशेषज्ञों के साथ एक उच्च-स्तरीय निगरानी समिति का गठन, ताकि चुनावी डेटाबेस की पवित्रता बनी रहे।

आधार (Aadhaar)

- **जारीकर्ता:** भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (UIDAI)।
- **वर्तमान अध्यक्ष:** नीलकंठ मिश्रा।
- **संरचना:** 12 अंकों की विशिष्ट पहचान संख्या (बायोमेट्रिक और जनसांख्यिकीय डेटा पर आधारित)।

मुख्य विशेषताएं:

- **डिजिटल सत्यापन:** OTP या बायोमेट्रिक आधारित।
- **वैधानिक स्थिति:** सरकारी सब्सिडी (DBT) और वित्तीय लेनदेन हेतु अनिवार्य, लेकिन नागरिकता का प्रमाण नहीं।
- **सुरक्षा उपाय:** 'मास्क्ड आधार' का उपयोग (पहले 8 अंक छिपे हुए), बायोमेट्रिक लॉक, और व्यक्तिगत जानकारी साझा न करना।

Result Mitra

10. वक्फ प्रशासन और शासन की चुनौतियां:



चर्चा में क्यों?

- केरल का मुनंबम भूमि विवाद वक्फ बोर्ड की कार्यप्रणाली, संपत्तियों के पंजीकरण और 'वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025' के कार्यान्वयन में पारदर्शिता एवं सामाजिक संवेदनशीलता के बीच के द्वंद्व को उजागर करता है।

वक्फ बोर्ड: संरचना और कार्य:

- **अधिनियम:** 'वक्फ अधिनियम, 1995' द्वारा शासित।
- **संरचना:** राज्य सरकार द्वारा नामित सदस्य (सांसद, विधायक, शरिया विद्वान और कानून/वित्त विशेषज्ञ)।

- **प्रमुख कार्यः** संपत्तियों का पंजीकरण, मुतवल्लियों की निगरानी, अतिक्रमण को रोकना और आय का वितरण।
- **प्रमुख चुनौतीः** नियुक्तियों में 'राजनीतिक तटस्थता' का अभाव और प्रशासनिक जवाबदेही की कमी।

मुनंबम विवाद और डिजिटल शासनः

- **विवाद का आधारः** वक्फ बोर्ड का 'यूएमईईडी' (UMEED) पोर्टल पर विवादित भूमि का डेटा अपलोड करना।

- ***प्रशासनिक द्वंद्वः*** *स्थानीय निवासियों का दावा है कि भूमि वक्फ की नहीं है। कानूनी स्वामित्व विचाराधीन होने के बावजूद डेटा अपलोड करना 'प्रशासनिक अतिरेक' (Administrative Overreach) माना जा रहा है।*
- ***डिजिटल शासनः*** *पोर्टल के माध्यम से डेटा पंजीकरण सराहनीय है, लेकिन यह 'कानूनी सटीकता' और 'सामाजिक विश्वास' की शर्तों पर आधारित होना चाहिए।*

Result Mitra

II. नागरिकता प्रमाण के रूप में आधार का उपयोगः न्यायिक संज्ञान



चर्चा में क्यों?

- सर्वोच्च न्यायालय की पीठ (सीजेआई सूर्यकांत और न्यायमूर्ति वी. मोहना) ने अधिवक्ता अश्विनी कुमार उपाध्याय द्वारा दायर एक रिट याचिका पर नोटिस जारी किया है। याचिका में आधार को नागरिकता, निवास, पता और जन्मतिथि के प्रमाण के रूप में उपयोग करने पर प्रतिबंध लगाने और इसे केवल 'पहचान के प्रमाण' तक सीमित रखने की मांग की गई है।

मामले के प्रमुख आधार (याचिकाकर्ता के तर्क):

- **आधार अधिनियम, 2016 (धारा 9):** स्पष्ट करता है कि आधार न तो नागरिकता देता है और न ही इसका प्रमाण है।
- **यूआईडीएआई अधिसूचना (22 अगस्त, 2023):** आधार केवल पहचान का प्रमाण है।
- **प्रक्रियात्मक खामी:** फॉर्म-6 (मतदाता पंजीकरण) में आधार का उपयोग जन्मतिथि/निवास के प्रमाण के रूप में करना अवैध है।
- **पात्रता:** आधार प्राप्त करने हेतु भारत में '182 दिन का निवास' पर्याप्त है, जिससे अवैध अप्रवासियों द्वारा अन्य आधिकारिक दस्तावेज प्राप्त करने का जोखिम बढ़ता है।

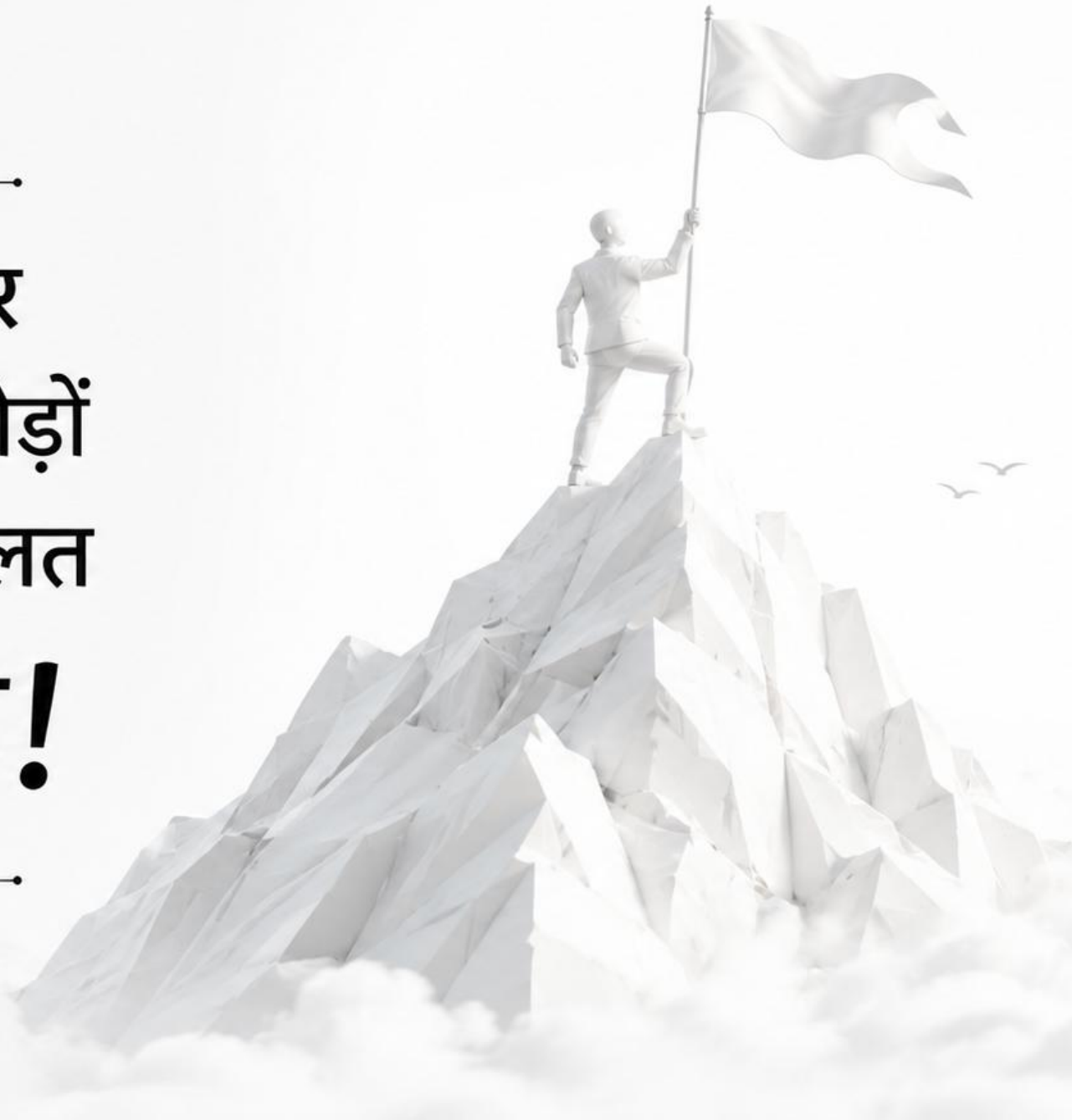
- विधिक उल्लंघनः यह लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम (1950) की धारा 23(4) और अनुच्छेद 14 (समानता का अधिकार) के विपरीत है।

आधारः

- **संस्थाः** भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (UIDAI)।
- **स्वरूपः** 12 अंकों का व्यक्तिगत बायोमेट्रिक पहचान नंबर।
- **पात्रताः** नामांकन से पहले के 12 महीनों में भारत में 182 दिन या अधिक रहने वाला कोई भी व्यक्ति (विदेशी सहित)।

- **न्यायिक आधार:** न्यायमूर्ति के.एस. पुट्टास्वामी बनाम भारत संघ (2017) मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने आधार की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखते हुए इसकी सीमित प्रकृति (नॉन-सिटीजनशिप प्रूफ) को स्पष्ट किया था।
- **नवीनतम पहल:** 'उदय' (UDAY) - जनवरी 2026 में लॉन्च किया गया निवासी-अनुकूल शुभंकर (आधार सेवाओं को सुलभ बनाने हेतु)।

जो मजा अपने दम पर
सफल बनने में है वो करोड़ों
अरबों की खानदानी दौलत
में भी नही है!



अर्थव्यवस्था (ECONOMY)

1. UPI लेनदेन: मई 2026 के रिकॉर्ड आंकड़े



चर्चा में क्यों?

- मई 2026 में UPI ने लेनदेन की मात्रा और मूल्य दोनों में अब तक का सर्वोच्च स्तर हासिल किया है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था के तीव्र डिजिटलीकरण को दर्शाता है।

प्रमुख बिंदु:

- **लेनदेन डेटा:** कुल लेनदेन मूल्य ₹21.90 लाख करोड़ (रिकॉर्ड स्तर) और कुल लेनदेन मात्रा 23.2 बिलियन दर्ज की गई।

- **वृद्धि दरः** पिछले वर्ष के समान माह की तुलना में लेनदेन मात्रा में 24% की वृद्धि हुई है।
- **मासिक तुलनाः** अप्रैल 2026 (₹29.03 लाख करोड़) के मुकाबले मई में लेनदेन मूल्य में वृद्धि देखी गई।
- **वैश्विक विस्तारः** UPI अब 7 से अधिक देशों (जैसे संयुक्त अरब अमीरात, सिंगापुर, भूटान, नेपाल, और मॉरीशस) में सक्रिय है।

UPI: परिचय और तकनीकी संरचना

- **विकासः** भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (NPCI) द्वारा विकसित।

- **प्रकृतिः** एक तत्काल भुगतान प्रणाली जो कई बैंक खातों को एक मोबाइल ऐप में एकीकृत करती है।
- **सिद्धांतः** 'इंटरऑपरेबिलिटी' (Interoperability)— विभिन्न ऐप्स के बीच सहज लेनदेन।
- **तकनीकी विशेषताएँः** 24/7 उपलब्धता, वर्चुअल पेमेंट एड्रेस (VPA), टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन (MPIN), और तत्काल निपटान।

हालिया नवाचार

- **UPI पर क्रेडिटः** क्रेडिट कार्ड की भांति उधार पर भुगतान की सुविधा।
- **ऑटो-पे (AutoPay):** आवर्ती बिलों (बिजली, OTT आदि) का एक-क्लिक भुगतान।
- **सीमा पार लेनदेनः** अंतर्राष्ट्रीय लिंकेज के माध्यम से वैश्विक उपस्थिति।

2. बचत खातों से सावधि जमा (FD) की ओर बदलाव



चर्चा में क्यों?

- भारतीय निवेशकों ने बचत खातों की तुलना में सावधि जमा (FD) को अधिक प्राथमिकता देना शुरू कर दिया है, जिससे बैंकिंग क्षेत्र में जमा संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है।

प्रमुख आंकड़े (RBI):

- **बचत खातों में गिरावट:** बैंक जमा में इनका हिस्सा मार्च 2022 के 34.6% से घटकर मार्च 2026 तक 28.7% रह गया है।

- **FD में वृद्धिः** इसी अवधि में FD का हिस्सा 55.2% से बढ़कर 61.6% हो गया है।
- **बाजार का स्तरः** 15 मई, 2026 तक FD का आंकड़ा ₹225.23 लाख करोड़ के ऐतिहासिक स्तर पर पहुंच गया है।

निवेशकों के रुझान के कारणः

- **ब्याज दरों का अंतरः** बचत खातों पर कम ब्याज (2.5%) की तुलना में FD पर उच्च ब्याज (6.25% - 6.50%) प्राप्त हो रहा है।
- **महंगाई से सुरक्षाः** बचत खातों में मिलने वाला ब्याज महंगाई दर (3.48%) से कम होने पर 'नकारात्मक प्रतिफल' (Negative Return) मिलता है, जिससे बचने के लिए FD सुरक्षित विकल्प है।

- **ब्याज दर स्थिरीकरण:** निवेशक भविष्य में ब्याज दरें गिरने की स्थिति से बचने के लिए वर्तमान फिक्स्ड ब्याज दरों को 'लॉक' कर रहे हैं।

तुलनात्मक विश्लेषण: बचत खाता बनाम सावधि जमा (FD)

आधार	बचत खाता (Savings Account)	सावधि जमा (Fixed Deposit)
मुख्य उद्देश्य	दैनिक खर्च/आपातकालीन निधि	निवेश और उच्च रिटर्न
ब्याज दर	कम (2.5% - 3.5%)	अधिक (6% - 7.5%)
तरलता (Liquidity)	बहुत अधिक	कम (अवधि समाप्ति तक सीमित)
समय सीमा	कोई नहीं	निश्चित (7 दिन से 10 वर्ष)
निकासी पर जुर्माना	नहीं	हाँ (समय से पहले निकासी पर)

बैंकिंग प्रणाली और अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

- **बैंकों को लाभ:** FD के माध्यम से बैंकों को 'स्थिर पैसा' (Stable Funding) प्राप्त होता है, जिससे दीर्घकालिक ऋण देना आसान हो जाता है।
- **वित्तीय परिपक्वता:** यह बदलाव भारतीय बचतकर्ताओं में बढ़ती वित्तीय साक्षरता को दर्शाता है, जहाँ अब 'आसान पहुंच' के बजाय 'बेहतर लाभप्रदता' को महत्व दिया जा रहा है।
- **अर्थव्यवस्था का औपचारिकीकरण:** यह अर्थव्यवस्था के अधिक औपचारिक और संगठित होने का एक सकारात्मक संकेत है।

3. अमेरिका का 12.5% टैरिफ प्रस्ताव और भारत



चर्चा में क्यों?

- अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि कार्यालय (USTR) ने '1974 के अमेरिकी व्यापार अधिनियम की धारा 301' के तहत जांच शुरू की है, जिसमें भारत सहित 54 देशों पर 'जबरन श्रम' (Forced Labor) के उपयोग का आरोप लगाया गया है।

प्रमुख बिंदुः

- **रणनीतिक मंशाः** विशेषज्ञों के अनुसार, 'जबरन श्रम' का मुद्दा व्यापार समझौते (BTA) के लिए दबाव बनाने और 'पारस्परिक शुल्क' (Reciprocal Tariffs) के कानूनी आधार के समाप्त होने के बाद टैरिफ बरकरार रखने का एक 'कानूनी आवरण' है।
- **आर्थिक प्रभावः** कपड़ा, परिधान, कालीन, चमड़ा और पीतल जैसे श्रम-प्रधान उद्योगों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा, जिससे वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता घटेगी।

- **GTRI का दृष्टिकोण:** भारत को BTA वार्ता और धारा 301 जांच को अलग-अलग देखना चाहिए। भारत को एकतरफा समझौतों के बजाय मलेशिया के उदाहरण से सीख लेते हुए सतर्क रहना चाहिए।
- **कानूनी चुनौतियां:** अमेरिकी व्यापार अधिनियम की 'धारा 122' विफल होने के बाद, प्रशासन 'जबरन श्रम' के तर्क का उपयोग 'कानूनी शून्यता' (Legal Vacuum) को भरने के लिए कर रहा है।

भारत का कूटनीतिक रुख

- **औपचारिक मंच:** भारत 6 जुलाई तक लिखित टिप्पणियां जमा करेगा और 7 जुलाई को सार्वजनिक सुनवाई में अपना पक्ष रखेगा।

रणनीतिक संतुलन (Way Forward):

- **आर्थिक संप्रभुता:** द्विपक्षीय वार्ता में व्यापार संतुलन को प्राथमिकता देना।
- **बाजार विविधता (Market Diversification):** निर्यात हेतु केवल अमेरिकी बाजार पर निर्भर न रहकर नए बाजारों की खोज करना।
- **तकनीकी चुनौती:** अमेरिका के एकतरफा दावों को WTO मानदंडों के आधार पर तकनीकी रूप से चुनौती देना।

टैरिफ (Tariff)

- **परिभाषा:** आयातित वस्तुओं पर लगाया जाने वाला कर (Tax)।
- **उद्देश्य:** घरेलू उद्योगों का संरक्षण करना।

प्रमुख प्रकार:

- **एड वैलोरम (Ad Valorem):** वस्तु के मूल्य (Value) के प्रतिशत के आधार पर।
- **विशिष्ट टैरिफ (Specific Tariff):** वस्तु की मात्रा या वजन के आधार पर।
- **व्यापार युद्ध (Trade War):** जब दो देश परस्पर एक-दूसरे के सामानों पर टैरिफ बढ़ाते हैं, तो उसे 'टैरिफ वॉर' कहा जाता है।

५. ब्लैक मनी एक्ट और पूर्वव्यापी कानून की चुनौतियाँ



चर्चा में क्यों?

- हाल ही में बॉम्बे हाईकोर्ट द्वारा उद्योगपति अनिल अंबानी को 'ब्लैक मनी (अघोषित विदेशी आय और संपत्ति) और कर अधिरोपण अधिनियम, 2015' के तहत दंडात्मक कार्रवाई से अंतरिम राहत दी गई है। यह निर्णय अधिनियम की संवैधानिक वैधता और इसके 'भूतलक्षी प्रभाव' (Retrospective effect) को चुनौती देने वाली याचिका के बाद आया है।

ब्लैक मनी एक्ट, 2015: मुख्य प्रावधान

- विदेशी अघोषित संपत्ति पर 30% कर और 90% जुर्माना, जिससे कुल देयता संपत्ति के मूल्य का 120% तक हो सकती है।
- अधिनियम की धारा 50 और 51 के तहत जानबूझकर जानकारी छिपाने पर 3 से 10 वर्ष तक के कठोर कारावास का प्रावधान।
- इसके अंतर्गत अपराधों को 'अनुसूचित अपराध' माना जाता है, जिससे प्रवर्तन निदेशालय (ED) को जांच का अधिकार मिलता है।

पूर्वव्यापी कानून से जुड़ी चुनौतियाँ

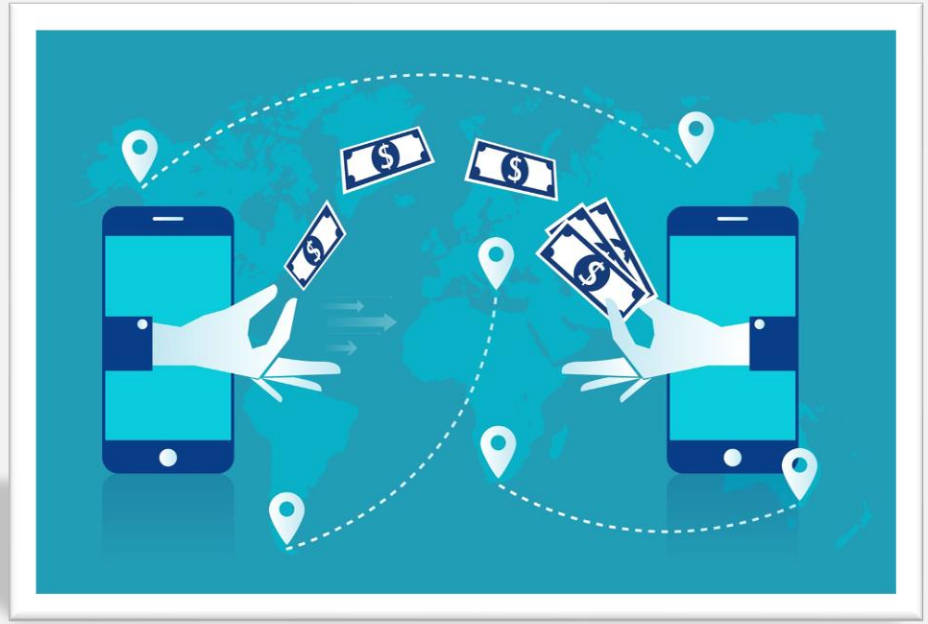
- **अनुच्छेद 20(1) का उल्लंघन:** संविधान का अनुच्छेद 20(1) 'कार्योत्तर विधियों' से सुरक्षा प्रदान करता है। याचिकाकर्ता का तर्क है कि 2015 से पूर्व की संपत्तियों पर इस कानून का लागू होना मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है।
- **'डीमिंग' प्रावधान:** धारा 72(c) के तहत सरकार किसी पुरानी संपत्ति को उस वर्ष की आय मान लेती है जब वह अधिकारियों की जानकारी में आती है। कानूनी रूप से, किसी व्यक्ति को दंडित करने के लिए अपराध के समय 'मेन्स रिया' (आपराधिक इरादा) का होना आवश्यक है, जिसे पूर्वव्यापी प्रभाव से सिद्ध करना कठिन है।

- ***निवेश और नीतिगत अनिश्चितता:*** *इस तरह के प्रावधान 'टैक्स टेररिज्म' का भय पैदा करते हैं, जो निवेश स्थिरता और 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' की छवि को प्रभावित कर सकते हैं।*
- ***प्रशासनिक जटिलता:*** *पुराने मामलों में साक्ष्य जुटाने की कठिनाई के कारण राजस्व दावों और वास्तविक कर वसूली के बीच बड़ा अंतर होता है, जिससे न्यायिक मुकदमों की संख्या बढ़ती है।*

Result Mitra

5. भारतीय प्रेषण (Remittance):

ऐतिहासिक उछाल



चर्चा में क्यों?

- 2025-26 के दौरान भारत ने 110.47 बिलियन डॉलर का रिकॉर्ड प्रेषण प्राप्त किया है, जो देश के बाह्य क्षेत्र (External Sector) की मजबूती का आधार बना है।

मुख्य सांख्यिकी:

- वृद्धि: 2024-25 के 87.55 बिलियन डॉलर से 26% की वृद्धि।
- **ऐतिहासिक मील का पत्थर:** भारत द्वारा पहली बार 100 बिलियन डॉलर का आंकड़ा पार करना।
- **त्रैमासिक उछाल:** जनवरी-मार्च 2026 में 31.07 बिलियन डॉलर की प्राप्ति (13 वर्षों में सर्वाधिक)।

प्रेषण की संरचना और कारक

घटक:

1. **श्रमिकों द्वारा प्रेषण:** विदेशों में कार्यरत कामगारों द्वारा सीधे परिवारों को भेजा गया धन।
2. **निजी हस्तांतरण (Private Transfers):** उपहार, दान (धर्मार्थ संस्थाओं को) और NRI जमा राशि से निकासी।

वृद्धि के पीछे प्रमुख कारक:

- **एहतियाती प्रेषण (Precautionary Remittances):** पश्चिम एशिया में संघर्ष और वैश्विक अनिश्चितता के कारण प्रवासियों द्वारा अधिक धन भेजना।

- ***मुद्रा विनिमय दर का लाभः*** *रुपये के अवमूल्यन से डॉलर में भेजी गई राशि का अधिक मूल्य मिलना (Arbitrage Opportunity)।*
- ***भूगोल में बदलावः*** *खाड़ी देशों (GCC) का योगदान 47% से घटकर 38% हुआ, जबकि अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा जैसे विकसित बाजारों की हिस्सेदारी बढ़ी है। (इसका अर्थ है 'कुशल प्रतिभा' का उच्च आय वाला प्रवासन)।*

अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

- **बैलेंस ऑफ पेमेंट्स (BoP):** FDI और FPI निवेश में कमी के दौर में प्रेषण ने 'जीवनरक्षक' (Lifeline) की भूमिका निभाई है।
- **चालू खाता घाटा (CAD):** व्यापार घाटे को कम करने में 'बफर' का कार्य।
- **स्थिरता:** यह FPI की तरह 'अस्थिर' नहीं, बल्कि एक ऋण-मुक्त (Debt-free) और स्थिर पूंजी स्रोत है।
- **ग्रामीण अर्थव्यवस्था:** केरल, पंजाब, यूपी और तमिलनाडु जैसे राज्यों में स्वास्थ्य, शिक्षा और आवास का प्रमुख आधार।

6. वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल (WGC) सर्वेक्षण 2026



चर्चा में क्यों?

- वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता और भू-राजनीतिक तनावों के बीच, केंद्रीय बैंकों द्वारा अपने विदेशी मुद्रा भंडार (Forex Reserves) में स्वर्ण (Gold) का संचय ऐतिहासिक स्तर पर बढ़ा है।

सर्वेक्षण की मुख्य विशेषताएं:

- **सर्वेक्षणकर्ता:** वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल (WGC) और YouGov का वार्षिक संयुक्त प्रयास (2018 से जारी)।

- **स्वर्ण संचयः** पिछले ५ वर्षों में केंद्रीय बैंकों का स्वर्ण क्रय दोगुना होकर लगभग 1,000 टन प्रति वर्ष तक पहुँच गया है।
- **मुख्य उद्देश्यः** स्वर्ण को 'संकट से सुरक्षा' (Safe Haven), 'मुद्रास्फीति से बचाव' (Hedge against inflation) और 'भू-राजनीतिक जोखिम शमन' (Mitigation of geopolitical risk) के साधन के रूप में प्राथमिकता दी जा रही है।
- **डॉलर का प्रभुत्वः** अनेक केंद्रीय बैंकों ने अपने विदेशी मुद्रा भंडार में अमेरिकी डॉलर की हिस्सेदारी कम करने के संकेत दिए हैं।

वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल (WGC) का परिचय:

- **प्रकृति:** वैश्विक स्वर्ण उद्योग हेतु एक बाज़ार विकास संगठन (गैर-लाभकारी)।
- **स्थापना:** 1987।
- **मुख्यालय:** लंदन, यूके।
- **सदस्य:** विश्व की प्रमुख स्वर्ण खनन कंपनियाँ।

प्रमुख योगदान:

- शंघाई गोल्ड एक्सचेंज का समर्थन (विश्व का सबसे बड़ा भौतिक स्वर्ण एक्सचेंज)।
- भारत गोल्ड स्पॉट एक्सचेंज (2022 में लॉन्च) के माध्यम से पारदर्शिता और तरलता में सुधार।

7. RBI स्वर्ण भंडार: स्पष्टीकरण और स्थिति



चर्चा में क्यों?

- भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने उन मीडिया रिपोर्टों को आधिकारिक रूप से खारिज कर दिया है, जिनमें दावा किया गया था कि पश्चिम एशिया में जारी भू-राजनीतिक तनाव के बीच आरबीआई ने अपना सोना (लगभग $1.2 बिलियन मूल्य का) बेचा है।

प्रमुख बिंदु:

- **आधिकारिक स्थिति:** आरबीआई का भौतिक स्वर्ण भंडार 880.52 टन पर पूरी तरह स्थिर है।

विदेशी मुद्रा भंडार में स्वर्ण की हिस्सेदारी (प्रवृत्ति):

- सितंबर 2025 के अंत में: **13.92%**
- 31 मार्च 2026 तक: **16.70%**
- 22 मई 2026 तक: **16.85% (निरंतर वृद्धि)**।
- **प्रशासनिक निर्देश:** आरबीआई ने जनता को सलाह दी है कि वे केवल केंद्रीय बैंक द्वारा जारी आधिकारिक आंकड़ों पर ही भरोसा करें; प्रेस सूचना ब्यूरो (PIB) ने भी इसे 'फैक्ट-चेक' के माध्यम से असत्य करार दिया है।

महत्वः

- ***विदेशी मुद्रा भंडार प्रबंधनः*** *आरबीआई द्वारा सोने का संचय 'रणनीतिक विविधीकरण' (Strategic Diversification) को दर्शाता है। विदेशी मुद्रा भंडार में सोने की बढ़ती हिस्सेदारी का उद्देश्य डॉलर की अस्थिरता से बचाव और आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करना है।*
- ***आर्थिक स्थिरताः*** *भू-राजनीतिक तनावों (जैसे पश्चिम एशिया संकट) के दौरान स्वर्ण एक सुरक्षित संपत्ति (Safe Haven Asset) माना जाता है, इसलिए भंडार में कमी के दावे अक्सर बाजार में अनावश्यक अनिश्चितता पैदा करते हैं।*
- ***पारदर्शिताः*** *केंद्रीय बैंक द्वारा समय पर स्पष्टीकरण देना 'बाजार विश्वास' (Market Confidence) बनाए रखने के लिए आवश्यक है।*

4. भारत में मुद्रास्फीतिः मई 2026 का आर्थिक विश्लेषण



मुख्य आंकड़े (मई 2026):

- **खुदरा मुद्रास्फीति (CPI):** 3.93% (मौजूदा श्रृंखला में उच्चतम, 15 महीनों का उच्चतम स्तर)।
- **खाद्य मुद्रास्फीति:** 4.78% (अप्रैल के 4.20% से वृद्धि)।
- **परिवहन मुद्रास्फीति:** 1.75% की वृद्धि (पेट्रोल/डीजल कीमतों में वृद्धि के कारण)।
- **माल परिवहन सेवाएं (Sub-sector):** 7.63% की भारी वृद्धि।
- **रेस्तरां और आवास सेवाएं:** 5.75% (व्यावसायिक एलपीजी कीमतों में फरवरी से 75% से अधिक वृद्धि का प्रभाव)।

- **विविध वस्तुएं और सेवाएं:** 18.46% (कीमती धातुओं की कीमतों में उछाल के कारण)।
- **मूल मुद्रास्फीति (Core Inflation):** 3.8%-3.9% (अपेक्षाकृत नियंत्रित)।

महत्वपूर्ण कारक:

- **ईंधन दबाव:** पेट्रोल, डीजल और व्यावसायिक एलपीजी की कीमतों में बढ़ोतरी का सीधा प्रभाव। घरेलू एलपीजी में ₹29 की वृद्धि का प्रभाव जून के आंकड़ों में दिखने की संभावना।

- **भू-राजनीतिक प्रभावः** अमेरिका-ईरान-इजरायल संघर्ष ने वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला को प्रभावित किया, जिससे रुपये की गिरावट (₹97 तक) देखी गई, हालांकि आरबीआई के हस्तक्षेप से अब यह ₹95-₹96 के दायरे में है।
- **मौद्रिक नीतिः** आरबीआई ने 'तटस्थ' (Neutral) रुख बरकरार रखा है।

चुनौतियां:

- **आरबीआई का लक्ष्य:** मुद्रास्फीति अभी भी 4% के लक्ष्य के नीचे और 2%-6% की सहनशीलता सीमा के भीतर है।
- **अनिश्चितता:** तेल विपणन कंपनियां कीमतों में नरमी के बावजूद खुदरा दरों में तत्काल कटौती नहीं कर रही हैं। होर्मुज जलमार्ग (Strait of Hormuz) को लेकर भू-राजनीतिक चिंताएं ईंधन की कीमतों को ऊंचा बनाए रख सकती हैं, जिससे मुद्रास्फीति में तत्काल गिरावट की संभावना कम है।

१. ड्रॉप शिपिंग: एक डिजिटल मध्यस्थता मॉडल



ड्रॉप शिपिंग क्या है?

- यह एक व्यावसायिक मॉडल है जहाँ विक्रेता (ड्रॉप शिपर) के पास अपना कोई स्टॉक (इन्वेंट्री) नहीं होता। वह ग्राहकों से ऑर्डर लेता है और उसे सीधे निर्माता या थोक विक्रेता को भेज देता है, जो उत्पाद को ग्राहक तक पहुँचाता है।

मुख्य जोखिम और चुनौतियाँ:

- **पारदर्शिता का अभाव:** कई 'कंपनियां' मात्र एआई-जनरेटेड वेबपेज हैं। खरीदारों को अक्सर यह पता नहीं होता कि उत्पाद का वास्तविक स्रोत कौन है या उनके डेटा की सुरक्षा कैसे की जा रही है।
- **कीमतों में हेराफेरी:** एक ही उत्पाद को कई बिचौलियों (आयातक, री-सेलर, इन्फ्लुएंसर) के माध्यम से गुजारकर उसकी कीमत कई गुना बढ़ा दी जाती है।
- **गुणवत्ता और धोखाधड़ी:** ड्रॉप शिपिंग में खराब या नकली उत्पाद मिलने, डिलीवरी में देरी होने या उत्पाद के कभी न पहुँचने का जोखिम अधिक रहता है।

- **ग्राहक सेवा:** शिकायत या रिफंड के मामले में जवाबदेही तय करना मुश्किल होता है क्योंकि ड्रॉप शिपर स्वयं केवल एक मध्यस्थ है।

एक जागरूक ऑनलाइन खरीदार बनने के लिए चेकलिस्ट:

1. **रिवर्स इमेज सर्च:** किसी आकर्षक उत्पाद की फोटो को Google Lens या TinEye पर सर्च करें। इससे आपको पता चल जाएगा कि वही उत्पाद अन्य प्लेटफॉर्म्स पर कितनी कम कीमत में उपलब्ध है।
2. **समीक्षाओं (Reviews) की जाँच:** केवल साइट पर दी गई समीक्षाओं पर निर्भर न रहें। गूगल पर 'कंपनी का नाम + scam/reviews' सर्च करें।

3. **संपर्क विवरण:** यदि कोई स्टोर केवल व्हाट्सएप के माध्यम से संपर्क करने के लिए कहता है और कोई आधिकारिक पता या ईमेल नहीं है, तो सतर्क हो जाएं।

4. **अवास्तविक ऑफर:** 'भारी डिस्काउंट' या 'सीमित स्टॉक' जैसे दावों का उपयोग अक्सर ग्राहकों को उकसाने (Urgency Tactic) के लिए किया जाता है।

5. **डेटा सुरक्षा:** अनजान वेबसाइटों पर अपने कार्ड या यूपीआई पिन के विवरण साझा करने से बचें।

कानूनी और प्रशासनिक पहलू:

- **वैधता:** ड्रॉप शिपिंग स्वयं में कानूनी है, बशर्ते विक्रेता पारदर्शिता बनाए रखे और कर कानूनों (Tax Laws) का पालन करे।
- **कानूनी संदिग्धता:** जब आपूर्ति श्रृंखला में पारदर्शिता खत्म हो जाती है और विक्रेता स्वयं को असली निर्माता के रूप में पेश करते हैं, तो ये गतिविधियाँ कानूनी रूप से संदिग्ध या आपराधिक हो सकती हैं।

10. FCRA संशोधन 2026 – विनियमन, नियंत्रण और संवैधानिक संतुलन



चर्चा में क्यों?

- 22 जून, 2026 को अधिसूचित 'विदेशी अंशदान (विनियमन) संशोधन नियम, 2026' ने भारत में विदेशी फंडिंग के विनियमन और नागरिक समाज की स्वायत्तता के बीच एक संवैधानिक बहस को जन्म दिया है।

प्रमुख बिंदुः

- **नोडल मंत्रालयः** गृह मंत्रालय (MHA)।
- **उद्देश्यः** राष्ट्र की संप्रभुता, आंतरिक सुरक्षा और लोकतांत्रिक कामकाज की रक्षा।

संशोधन के प्रमुख प्रावधानः

- **संपत्ति अधिग्रहणः** एनजीओ का लाइसेंस रद्द या नवीनीकरण न होने पर, विदेशी फंड से निर्मित संपत्तियों (अचल संपत्ति/उपकरण) को सरकार द्वारा नियुक्त 'नामित प्राधिकरण' द्वारा अधिग्रहित किया जा सकेगा।
- **परिचालन संबंधी सख्तीः** फंड का उपयोग अब 'गतिविधि-विशिष्ट', 'भूगोल-विशिष्ट' और 'उद्देश्य-विशिष्ट' होगा।
- **दायरे का विस्तारः** 'प्रमुख पदाधिकारी' की परिभाषा में अब न्यासियों (Trustees) और शासी निकाय के सदस्यों को शामिल किया गया है।

संवैधानिक और लोकतांत्रिक चिंताएं:

- **लोकतांत्रिक स्पेस:** प्रशासनिक 'अनियंत्रित विवेक' और 'धर्म-परिवर्तन' (Proselytisation) जैसे अस्पष्ट शब्दों का उपयोग।
- **पारदर्शिता का विरोधाभास:** एनजीओ से पारदर्शिता की अपेक्षा, लेकिन FCRA पोर्टल से संगठनात्मक डेटा को हटाना और संसदीय प्रश्नों को 'गोपनीय' बताना।
- **निजता का हनन:** पुटस्वामी निर्णय (2017) के सिद्धांतों के आलोक में सूचनात्मक स्वायत्तता का उल्लंघन।

संवैधानिक एवं न्यायिक आधार:

- **अनुच्छेद 19(1)(c):** संगम या संघ बनाने का मौलिक अधिकार।
- **अनुच्छेद 19(4):** संप्रभुता, अखंडता और सार्वजनिक व्यवस्था के हित में 'उचित प्रतिबंध'।
- **नोएल हार्पर बनाम भारत संघ (2022):** सुप्रीम कोर्ट का निर्णय—विदेशी चंदा प्राप्त करना पूर्ण अधिकार नहीं, बल्कि विनियमित किया जा सकने वाला विषय है।

II. ADR रिपोर्ट 2026: राज्यसभा सांसदों की पृष्ठभूमि



चर्चा में क्यों?

- एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (ADR) और नेशनल इलेक्शन वॉच (NEW) ने राज्यसभा सांसदों की आपराधिक और वित्तीय पृष्ठभूमि का अद्यतन विश्लेषण जारी किया है, जो 'राजनीति के अपराधीकरण' के बढ़ते रुझान को दर्शाता है।

रिपोर्ट के मुख्य बिंदुः

- **आपराधिक मामलेः** कुल 226 में से 69 (31%) सांसदों पर आपराधिक मामले दर्ज हैं।
- **गंभीर मामलेः** 36 (16%) सांसदों ने गंभीर आपराधिक मामलों (हत्या, महिलाओं के खिलाफ अपराध आदि) की घोषणा की है।
- **वित्तीय शक्तिः** राज्यसभा सांसदों की औसत संपत्ति ₹11.25 करोड़ है, जिसमें 14% (31) अरबपति हैं।
- भारत के विभिन्न राज्यों के विधायकों में से लगभग 45% (1,861) आपराधिक मामलों का सामना कर रहे हैं।

राजनीति के अपराधीकरण के प्रमुख कारण:

- **राजनीतिक-आपराधिक गठजोड़:** अभियान वित्तपोषण (NN वोहरा समिति, 1993) के लिए पारस्परिक निर्भरता।
- **जीतने की क्षमता (Winnability):** दलों द्वारा स्वच्छ रिकॉर्ड के बजाय धन और प्रभाव को प्राथमिकता देना।
- **न्यायिक विलंब:** मुकदमेबाजी की धीमी गति के कारण अपराधियों पर प्रभावहीन नियंत्रण।

सुधारात्मक उपाय और न्यायिक हस्तक्षेपः

- **विधायी प्रावधानः** लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम (RPA), 1951:
- **धारा 8:** दोषी पाए जाने पर अयोग्यता।
- **धारा 33A:** लंबित मामलों का अनिवार्य हलफनामा।
- **प्रमुख समितियाँ/आयोगः** गोस्वामी समिति (1990), विधि आयोग की रिपोर्ट (170वीं/244वीं), और दूसरा एआरसी (2008)।

न्यायिक घोषणाएँ:

- **ADR मामला (2002):** आपराधिक पृष्ठभूमि और संपत्ति का खुलासा अनिवार्य।
- **लिली थॉमस (2013):** आरपीए की धारा 8(4) को निरस्त कर 'तत्काल अयोग्यता' का प्रावधान।
- **पब्लिक इंटरेस्ट फाउंडेशन (2019):** आपराधिक रिकॉर्ड का व्यापक प्रकाशन अनिवार्य।

Result Mitra

12. थोक मूल्य सूचकांक का आधार वर्ष 2011-12 में संशोधन, अब आधार वर्ष 2022-23 होगा



चर्चा में क्यों?

- संशोधित थोक मूल्य सूचकांक और नए उत्पादक मूल्य सूचकांक 15 जून को जारी किए जाएंगे
- संशोधित उत्पादक मूल्य सूचकांक श्रृंखला में विस्तारित कवरेज, नवीकरणीय ऊर्जा का समावेश और बेहतर कार्यप्रणाली के साथ मूल्य मापन को सुदृढ़ किया जाएगा

- थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) के आधार वर्ष को 2011-12 से संशोधित करके 2022-23 करने और उत्पादक मूल्य सूचकांक (पीपीआई) के संकलन को सक्षम प्राधिकारी ने 25.05.2026 को आयोजित अपनी बैठक में अनुमोदित कर दिया है। इससे पहले, अनुशंसित संकलन पद्धति को मूल्य और जीवन यापन लागत सांख्यिकी पर तकनीकी सलाहकार समिति (टीएसी) (एसपीसीएल) द्वारा अनुमोदित किया गया था। बाद में, इस पद्धति को राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग (एनएससी) के समक्ष भी प्रस्तुत किया गया था।

- आर्थिक सलाहकार कार्यालय, डीपीआईआईटी तदनुसार 15.06.2026 को दोपहर 12:00 बजे आधार वर्ष 2022-23 के साथ संशोधित उत्पादक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) श्रृंखला जारी करेगा। यह आधार वर्ष 2011-12 के साथ मौजूदा डब्ल्यूपीआई श्रृंखला का स्थान लेगी। इसके अतिरिक्त, कार्यालय सात सेवाओं, जैसे बैंकिंग, प्रतिभूति लेनदेन, बीमा, पेंशन निधि प्रबंधन, रेलवे, हवाई (यात्री) और दूरसंचार के लिए उत्पादन उत्पादक मूल्य सूचकांक (ओपीपीआई), परीक्षण इनपुट उत्पादक मूल्य सूचकांक (आईपीपीआई) और सेवा उत्पादक मूल्य सूचकांक (सर्विस पीपीआई) की नई श्रृंखला भी आधार वर्ष 2022-23 के साथ जारी करेगा।

- मूल्य वृद्धि सम्बंधी प्रावधानों में उत्पादन सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) के व्यापक उपयोग को देखते हुए, संशोधित श्रृंखला के जारी होने की तिथि से पांच वर्षों तक पीपीआई के साथ यह सूचकांक जारी किया जाएगा और उसके बाद इसे बंद कर दिया जाएगा। इससे उपयोगकर्ताओं को डब्ल्यूपीआई से पीपीआई पर स्विच करने के लिए पर्याप्त समय मिलेगा। डब्ल्यूपीआई से पीपीआई में यह परिवर्तन उन्नत अर्थव्यवस्थाओं द्वारा अपनाई गई वैश्विक सर्वोत्तम तौर-तरीकों और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की सिफारिशों के अनुरूप है।

- आउटपुट पीपीआई और इनपुट पीपीआई दोनों की उपलब्धता से किसी उद्योग में उपयोग होने वाली इनपुट वस्तुओं की तुलना में आउटपुट वस्तुओं के मूल्य आंदोलनों की बेहतर समझ मिलती है इससे यह भी स्पष्ट होता है कि उत्पादकों द्वारा इनपुट वस्तुओं पर अनुभव की गई मुद्रास्फीति उत्पादित आउटपुट में कैसे स्थानांतरित होती है। सात सेवाओं के लिए सेवा पीपीआई को पहले चरण में प्रशासनिक स्रोतों/एजेंसियों से उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर संकलित किया गया है। बाद के चरण में उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर सेवा पीपीआई के दायरे में और अधिक सेवाएं जोड़ने की योजना है।

- उत्पादन सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) और आउटपुट पीपीआई मासिक आधार पर संकलित किए जा रहे हैं और मई 2026 (अस्थायी) के लिए अप्रैल 2023 से अप्रैल 2026 (37 महीने) तक की पिछली श्रृंखला के साथ 15.06.2026 को उपलब्ध होंगे। मासिक परीक्षण इनपुट पीपीआई (केवल विनिर्माण क्षेत्र के लिए) मार्च 2026 से प्रायोगिक आधार पर प्रकाशित किया जाएगा। इससे विभाग को डेटा की गुणवत्ता की जांच करने और हितधारकों और उपयोगकर्ताओं से प्रतिक्रिया प्राप्त करने में सहायता मिलेगी। सेवा पीपीआई, 2025-26 की चौथी तिमाही (अस्थायी) के लिए 2023-24 की पहली तिमाही से 2025-26 की तीसरी तिमाही तक की पिछली श्रृंखला के साथ जारी किया जाएगा। यह त्रैमासिक आधार पर संकलित किया जाता है।

WPI (2022-23) की नई श्रृंखला की मुख्य विशेषताएं:

1. **वस्तुओं की संख्या में वृद्धि:** वस्तुओं की कुल संख्या 697 से बढ़कर 957 हो गई है;
2. **विद्युत के अंतर्गत नई और नवीकरणीय ऊर्जा का समावेश:** सौर और पवन जैसे ऊर्जा के नए स्रोतों को 'विद्युत' समूह के अंतर्गत जोड़ा गया है। इसके अतिरिक्त, परमाणु बिजली को भी इसमें शामिल किया गया है;

3. **ऊर्जा कीमतों पर नज़र रखने के लिए सुसंगत और एकीकृत संरचना:** कच्चे पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस को 'प्राथमिक वस्तुओं' से 'ईंधन और बिजली' में स्थानांतरित कर दिया गया है। इस समूह में पहले से ही कोयला, बिजली और पेट्रोलियम उत्पाद जैसे अन्य प्रमुख ईंधन शामिल हैं। यह पुनर्गठन बेहतर तालमेल स्थापित करने में सहायक होगा;

५. **भार निर्धारण हेतु बेहतर कार्यप्रणाली:** डब्ल्यूपीआई (2022-23) के लिए भार तैयार करने हेतु सकल उत्पादन मूल्य (जीवीओ) का उपयोग किया गया है। वहीं दूसरी ओर डब्ल्यूपीआई 2011-12 श्रृंखला में शुद्ध व्यापार मूल्य यानी जीवीओ + आयात - निर्यात का उपयोग किया गया था, क्योंकि जीवीओ पर आधारित भार उत्पादक के दृष्टिकोण से वस्तुओं के आर्थिक महत्व को बेहतर ढंग से दर्शाते हैं और वे घरेलू उत्पादन का प्रतिनिधित्व करते हैं;

5. **बेहतर गणना पद्धतिः** *प्राथमिक सूचकांकों को दीर्घकालिक सूत्रीकरण विधि के स्थान पर श्रृंखला-आधारित विधि का उपयोग करके अल्पकालिक सूत्रीकरण द्वारा संकलित किया जा रहा है (जैसा कि वर्तमान श्रृंखला में प्रचलित है);*

6. **मूल्य डेटा में कमी को पूरा करने की बेहतर विधिः** *डब्ल्यूपीआई की मौजूदा श्रृंखला में उपयोग की जा रही 'कैरी-फॉरवर्ड' विधि के स्थान पर 'लक्षित माध्य इम्पुटेशन' विधि का उपयोग किया गया है;*

7. **सम्बंधित तथ्यः** सम्बंधित तथ्य की गणना वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए डब्ल्यूपीआई की पुरानी और नई श्रृंखला के बारह महीने के सूचकांकों के ज्यामितीय माध्य के अनुपात के रूप में की गई है। यह सभी वस्तुओं और प्रमुख समूहों के लिए उपलब्ध होगा।

- **आउटपुट पीपीआई और इनपुट पीपीआई के भार क्रमशः** वर्ष 2022-23 के राष्ट्रीय लेखा के आपूर्ति और उपयोग तालिका की आपूर्ति तालिका और उपयोग तालिका का उपयोग करके प्राप्त किए गए हैं।

7. डब्ल्यूपीआई, आउटपुट पीपीआई और सर्विस पीपीआई को मूल मूल्य (इसमें शुद्ध कर और व्यापार एवं परिवहन मार्जिन शामिल नहीं हैं) के आधार पर संकलित किया जा रहा है। उद्योग, बाजार से इनपुट खरीदते हैं, इसलिए इनपुट पीपीआई को क्रेता मूल्य का उपयोग करके संकलित किया जा रहा है।

विज्ञान और तकनीक (Science & tech)

1. एआई (AI) सुरक्षा और वैश्विक शासन: 'मायथोस' मॉडल का नया प्रतिमान



चर्चा में क्यों?

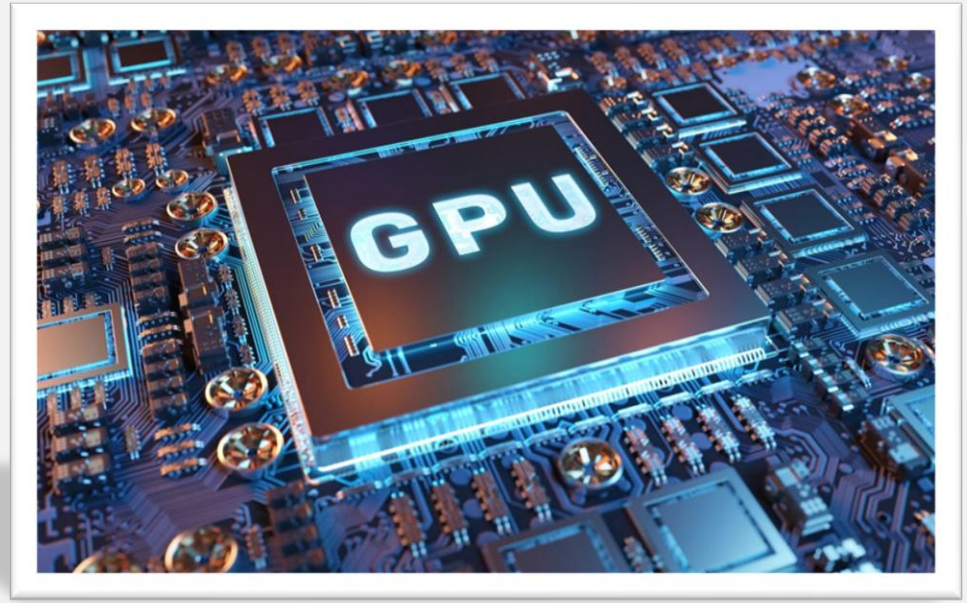
- अमेरिकी एआई कंपनी एंथ्रोपिक ने अपने अत्यंत शक्तिशाली एआई मॉडल 'मायथोस' की सुरक्षित पहुँच यूरोपीय संघ की साइबर सुरक्षा एजेंसी (ENISA) को प्रदान करने का प्रस्ताव रखा है।

'मायथोस' (Mythos) मॉडल

- विकास: एंथ्रोपिक द्वारा विकसित, 'प्रोजेक्ट ग्लासविंग' का हिस्सा।

- ***विशेषता:*** *यह एक उच्च-क्षमता वाला एआई मॉडल है, जिसे विशेष रूप से सॉफ्टवेयर सिस्टम की संरचनाओं और सुरक्षा प्रोटोकॉल के विश्लेषण हेतु डिज़ाइन किया गया है।*
- ***वर्तमान स्थिति:*** *इसे सार्वजनिक रिलीज से दूर रखा गया है। वर्तमान में यह केवल ५० वैश्विक संस्थाओं (जैसे अमेज़न, गूगल, एप्पल और ब्रिटेन का एआई सुरक्षा संस्थान) तक सीमित है।*
- ***महत्व:*** *जटिल सिस्टम की कमजोरियों को पहचानने और उनका गहन विश्लेषण करने में अभूतपूर्व दक्षता।*

2. भारत का सेमीकंडक्टर उद्योग



चर्चा में क्यों?

- नीति आयोग की 'Frontier Tech Hub' रिपोर्ट के अनुसार, भारत का सेमीकंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र अभी घरेलू मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं है। वैश्विक निर्भरता और भू-राजनीतिक अस्थिरता को देखते हुए, स्वदेशी विनिर्माण क्षमता विकसित करना 'राष्ट्रीय सुरक्षा' की अनिवार्यता बन गया है।

सेमीकंडक्टर के बारे में

- **परिभाषा:** ऐसे पदार्थ जिनकी विद्युत चालकता चालकों और कुचालकों के बीच होती है। सबसे आम सेमीकंडक्टर सामग्री सिलिकॉन (Si) और जर्मेनियम (Ge) है ।
- **उपयोग:** स्मार्टफोन, कंप्यूटर, एयरोस्पेस, रक्षा उपकरण और AI। इन्हें 'आधुनिक युग का कच्चा तेल' कहा जाता है।

भारत के सेमीकंडक्टर उद्योग का महत्व

- **रणनीतिक स्वायत्तता:** भारत वर्तमान में अपनी 90% से अधिक चिप आवश्यकताएं आयात करता है, जिसे घरेलू उत्पादन से कम कर आपूर्ति श्रृंखला की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है।

- ***आर्थिक विकास:*** *2024-25 में भारतीय सेमीकंडक्टर बाजार का आकार लगभग $45-50 बिलियन था, जो 2030 तक $100-110 बिलियन तक पहुंचने का अनुमान है।*
- ***विदेशी मुद्रा की बचत:*** *भारत ने 2017 और 2025 के बीच चिप्स के आयात पर लगभग $150 बिलियन खर्च किए हैं। घरेलू निर्माण से इस विदेशी मुद्रा की बचत होगी।*

सरकारी पहलें

- **सेमीकॉन इंडिया कार्यक्रमः** ₹76,000 करोड़ का निवेश।
- **PLI योजनाः** विनिर्माण के लिए 4-6% का प्रोत्साहन।
- **भारत सेमीकंडक्टर मिशन 2.0 :** स्थानीय उपकरणों, सामग्री उत्पादन और R&D पर केंद्रित।
- **FDI नियमः** इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में 100% FDI स्वचालित मार्ग से मान्य।
- **वैश्विक गठबंधनः** अमेरिका, जापान, EU और दक्षिण कोरिया के साथ तकनीकी सहयोग।

प्रमुख चुनौतियाँ:

- **उच्च लागत:** फैब्रिकेशन प्लांट अत्यंत पूंजी-गहन होते हैं, जिनमें अरबों डॉलर का निवेश आवश्यक है।
- **कच्चे माल की निर्भरता:** सेमीकंडक्टर निर्माण हेतु आवश्यक दुर्लभ खनिजों के लिए विदेशी निर्भरता।
- **कौशल की कमी:** हार्डवेयर इंजीनियरिंग, चिप डिज़ाइन और विनिर्माण में कुशल कार्यबल की उपलब्धता में अंतराल।

प्रमुख चुनौतियाँ:

- **उच्च लागत:** फैब्रिकेशन प्लांट अत्यंत पूंजी-गहन होते हैं, जिनमें अरबों डॉलर का निवेश आवश्यक है।
- **कच्चे माल की निर्भरता:** सेमीकंडक्टर निर्माण हेतु आवश्यक दुर्लभ खनिजों के लिए विदेशी निर्भरता।
- **कौशल की कमी:** हार्डवेयर इंजीनियरिंग, चिप डिज़ाइन और विनिर्माण में कुशल कार्यबल की उपलब्धता में अंतराल।

3. अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड (UPF) और स्वास्थ्य:



चर्चा में क्यों?

- 'साइंस' पत्रिका में प्रकाशित एक नए शोध ने मोटापे और मधुमेह के कारणों को लेकर प्रचलित धारणाओं को चुनौती दी है। शोध के अनुसार, समस्या का कारण केवल औद्योगिक 'प्रसंस्करण' नहीं, बल्कि उत्पाद की 'रेसिपी' (सामग्री और भौतिक गुण) है।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष (मोटापे के कारक):

- **उच्च कैलोरी घनत्व:** प्रति ग्राम ऊर्जा की अधिक मात्रा, जिससे पेट जल्दी नहीं भरता।

- ***फाइबर की कमी:*** *पाचन को धीमा करने वाले फाइबर का अभाव, जिससे रक्त शर्करा तेजी से बढ़ती है।*
- ***कोमल बनावट:*** *खाद्य पदार्थों का अधिक नरम होना, जिससे 'खाने की गति' तेज हो जाती है और मस्तिष्क को तृप्ति का संकेत मिलने से पहले ही अधिक कैलोरी ग्रहण कर ली जाती है।*
- ***अत्यधिक पैलेटेबिलिटी:*** *चीनी, नमक और सैचुरेटेड फैट का संयोजन, जो भूख मिटने के बाद भी भोजन जारी रखने के लिए प्रेरित करता है।*

UPF का वर्गीकरण:

- **NOVA प्रणाली:** भोजन को औद्योगिक प्रसंस्करण के आधार पर 4 श्रेणियों में बांटती है। समूह 4 (UPF) में रसायनों, इमल्सीफायर्स और सिंथेटिक फ्लेवर्स का उपयोग होता है।
- **नीतिगत चुनौती:** UPF लेबल का व्यापक होना भ्रम पैदा करता है, क्योंकि इसमें पोषण-शून्य 'सॉफ्ट ड्रिंक्स' और 'फोर्टिफाइड अनाज' दोनों शामिल हैं।
- **अध्ययन का महत्व:** यह शोध 'प्रसंस्करण' और 'पोषण मूल्य' के बीच अंतर स्पष्ट करता है। पाश्चुरीकरण, किण्वन और फोर्टिफिकेशन जैसी प्रक्रियाओं को पोषण के लिए अनिवार्य माना गया है, इन्हें हानिकारक नहीं माना जाना चाहिए। सरकारी नीतियों को केवल 'प्रोसेस्ड' लेबल के बजाय कैलोरी, फाइबर और फैट जैसे पोषण प्रोफाइल पर केंद्रित होना चाहिए।

5. E85 ईंधन और भारत का इथेनॉल मिश्रण कार्यक्रम:



चर्चा में क्यों?:

- भारत सरकार ने 'नेट-जीरो 2070' लक्ष्यों को प्राप्त करने और कच्चे तेल के आयात पर निर्भरता कम करने के उद्देश्य से E85 ईंधन (85% इथेनॉल और 15% पेट्रोल) का शुभारंभ किया है। यह पहल फ्लेक्स-फ्यूल वाहनों (FFVs) के लिए एक रणनीतिक कदम है।

E85 ईंधन क्या है?

- E85 एक नवीकरणीय जैव-ईंधन (Biofuel) है जिसमें 80-85% एथेनॉल और 15-19% पेट्रोल का मिश्रण होता है।
- एथेनॉल का उत्पादन भारत में ही कृषि आधारित उत्पादों (गन्ना, मक्का और क्षतिग्रस्त अनाज) से किया जाता है।
- यह विशेष रूप से फ्लेक्स-फ्यूल वाहनों के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- 2015 में भारत ने E20 (20% इथेनॉल और 80% पेट्रोल) लक्ष्य निर्धारित किया था, जिसे समय से पहले हासिल कर लिया गया है।
- अब 2030-31 तक 26% इथेनॉल मिश्रण का लक्ष्य निर्धारित है।

E20 और E85: तुलनात्मक विवरण

विशेषता	E20 ईंधन	E85 ईंधन
मिश्रण अनुपात	20% इथेनॉल + 80% पेट्रोल	85% इथेनॉल + 15% पेट्रोल
वाहन अनुकूलता	भारत स्टेज VI (फेज-II) के सभी मानक वाहन	केवल विशेष 'फ्लेक्स-फ्यूल वाहन' (FFVs)
इंजन आवश्यकता	सामान्य इंजन	विशेष सेंसर, बड़े इंजेक्टर और इथेनॉल-प्रतिरोधी सामग्री
उपलब्धता	वर्तमान में देश भर में व्यापक	वर्तमान में सीमित (लक्ष्य: 2027 तक 5,000 स्टेशन)

इथेनॉल मिश्रण कार्यक्रम (EBP) का महत्वः

- **ऊर्जा सुरक्षाः** भारत अपनी कच्चे तेल की जरूरतों का लगभग 85% आयात करता है। इथेनॉल के उपयोग से आयात बिल में भारी कमी आती है।
- **पर्यावरणीय लाभः** पारंपरिक पेट्रोल की तुलना में E85 के उपयोग से जीवन-चक्र ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन में लगभग 61% तक की कमी आती है।
- **कृषि अर्थव्यवस्थाः** यह किसानों को 'अन्नदाता' से 'ऊर्जादाता' में बदलकर अधिशेष अनाज (गन्ना, मक्का, चावल) के लिए एक नया बाजार तैयार करता है।

प्रमुख चुनौतियाँ:

- **दक्षता का विरोधाभास:** इथेनॉल का ऊर्जा घनत्व कम होने के कारण E85 प्रति किलोमीटर अधिक खर्चीला हो सकता है।
- **बुनियादी ढांचा:** भारत में FFV वाहनों की सीमित संख्या और ईंधन वितरण नेटवर्क का विस्तार एक बड़ी बाधा है।
- **खाद्य सुरक्षा:** इथेनॉल उत्पादन हेतु कृषि उत्पादों के व्यापक उपयोग से खाद्य कीमतों (मुद्रास्फीति) पर दबाव पड़ने का जोखिम।
- **आगे की राह:** भारत को ब्राजील के सफल 'फ्लेक्स-फ्यूल मॉडल' का अनुसरण करते हुए विद्युतीकरण (EV) और बायो-इथेनॉल मिश्रण में संतुलन बनाना चाहिए ताकि ऊर्जा स्वतंत्रता और आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त की जा सके।

Result Mitra

5. भारत का पवन ऊर्जा संकल्प – 'एम्बिशन टू एक्सेलरेशन' की ओर



चर्चा में क्यों?

- विश्व वायु दिवस 2026 (15 जून) पर गोवा में आयोजित "विंड एनर्जी: एम्बिशन टू एक्सेलरेशन" सम्मेलन में भारत ने 2030 तक 100 GW और 2036 तक 156 GW पवन क्षमता का लक्ष्य निर्धारित किया है।

प्रमुख बिंदुः

- **वैश्विक स्थितिः** चीन, अमेरिका और जर्मनी के बाद भारत पवन ऊर्जा में चौथे नंबर पर है।
- **राज्यवार क्षमताः** शीर्ष उत्पादक राज्यों में तमिलनाडु (सबसे बड़ा) के बाद गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक और राजस्थान शामिल हैं।
- **भविष्य की क्षमताः** 150 मीटर की ऊँचाई पर भारत की पवन ऊर्जा क्षमता लगभग 1164 GW आँकी गई है।
- **घरेलू निर्माणः** भारत में 24 GW से अधिक का घरेलू विनिर्माण आधार है, जो आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है।

- **विकास गतिः** मार्च 2014 के 21.04 GW से बढ़कर मार्च 2026 में 56.09 GW तक पहुंचना।
- **स्वदेशीकरणः** विंड टर्बाइन घटकों में 70-80% स्वदेशीकरण, उत्पादन क्षमता 10 GW से 24 GW हुई।

प्रमुख सरकारी पहलः

- **वायबिलिटी गैप फंडिंग(VGF):** ऑफशोर विंड हेतु ₹6,853 करोड़ की मंजूरी (गुजरात और तमिलनाडु में 500-500 MW प्रोजेक्ट)।

- **राष्ट्रीय ऑफशोर पवन ऊर्जा नीतिः** समुद्र तटीय क्षेत्रों में बिजली उत्पादन के लिए विशेष नीतिगत ढांचा।
- **पवन-सौर हाइब्रिड नीतिः** एक ही भूमि और ट्रांसमिशन इंफ्रास्ट्रक्चर पर पवन और सौर दोनों परियोजनाओं को एक साथ लगाकर जमीन का अधिकतम उपयोग।

वैश्विक भागीदारीः

- **यूके (UK):** विजन 2035 के तहत ऑफशोर विंड टास्कफोर्स।
- **डेनमार्कः** पावर सिस्टम मॉडलिंग और एक्सपर्ट ट्रेनिंग।
- **बेल्जियमः** ग्रीन टैक्सोनॉमी और R&D में सहयोग।

विश्व वायु दिवस के बारे में:

- प्रतिवर्ष 15 जून को आयोजित।
- 2007 में यूरोपीय पवन ऊर्जा संघ द्वारा शुरुआत, 2009 से ग्लोबल विंड एनर्जी काउंसिल के नेतृत्व में अंतरराष्ट्रीय मान्यता।

6. C-295 विमान कार्यक्रम



चर्चा में क्यों?

- हाल ही में भारतीय वायु सेना (IAF) ने पुष्टि की है कि भारत में निर्मित पहले C-295 सैन्य परिवहन विमान ने अपनी पहली सफल उड़ान पूरी कर ली है। यह उपलब्धि 'आत्मनिर्भर भारत' के तहत रक्षा विनिर्माण में निजी क्षेत्र की भागीदारी की एक बड़ी सफलता है।

कार्यक्रम का अवलोकन और समझौता:

- समझौता: सितंबर 2021 में रक्षा मंत्रालय ने स्पेन की 'एयरबस डिफेंस एंड स्पेस' के साथ ₹21,935 करोड़ के सौदे पर हस्ताक्षर किए।

- **उद्देश्य:** भारतीय वायु सेना के पुराने और सेवा-निवृत्त हो रहे 'एवरो-748' (Avro-748) विमानों को बदलना।
- **संख्या:** कुल 56 विमानों की खरीद की जाएगी।

उत्पादन और असेंबली मॉडल:

- **स्पेन से आपूर्ति:** पहले 16 विमान 'उड़ने के लिए तैयार' स्थिति में स्पेन से सीधे भारतीय वायु सेना को सौंपे जाएंगे।
- **भारत में निर्माण (मेक इन इंडिया):** शेष 40 विमानों का निर्माण भारत में टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स लिमिटेड (TASL) द्वारा किया जाएगा।
- **विनिर्माण केंद्र:** इसके लिए वडोदरा (गुजरात) में भारत की पहली निजी विमान निर्माण 'फाइनल असेंबली लाइन' (FAL) स्थापित की गई है।

- **स्थानीयकरण:** 85% से अधिक संरचनात्मक घटकों का निर्माण और असेंबली भारत में ही की जाएगी, जिससे एक विशाल एयरोस्पेस इकोसिस्टम (13,000+ पुर्जों के साथ) विकसित हो रहा है।

विमान की सामरिक विशेषताएं:

- **बहुमुखी क्षमता:** यह दो इंजन वाला टर्बोप्रॉप विमान है, जो सैनिकों/माल की ढुलाई, चिकित्सा निकासी, समुद्री गश्ती और आपदा राहत जैसे विविध मिशनों में सक्षम है।
- **पेलोड और गति:** यह 9 टन पेलोड या 71 सैनिकों को ले जा सकता है; इसकी अधिकतम क्रूज गति 260 समुद्री मील प्रति घंटा और उड़ान क्षमता 11 घंटे है।

- **शॉर्ट टेक-ऑफ एंड लैंडिंग (STOL):** इसमें कम दूरी की हवाई पट्टियों और बिना तैयार स्ट्रिप्स से उड़ान भरने और उतरने की क्षमता है, जो LAC/LoC जैसे दुर्गम क्षेत्रों में परिचालन के लिए इसे अत्यंत महत्वपूर्ण बनाती है।

सामरिक महत्व:

- **रक्षा में निजी क्षेत्र:** यह पहला सैन्य विमान कार्यक्रम है जिसे पूरी तरह से भारतीय निजी क्षेत्र द्वारा निर्मित किया जा रहा है, जो वैश्विक रक्षा आपूर्ति श्रृंखला में भारत की स्थिति को मजबूत करता है।
- **रणनीतिक स्वायत्तता:** सैन्य परिवहन के लिए विदेशी आयात पर निर्भरता को कम करना और घरेलू रक्षा उद्योग को तकनीकी रूप से उन्नत बनाना।

7. भारतीय नौसेना में INS दुनागिरी, INS संशोधक, और INS अग्रेय हुए शामिलः



चर्चा में क्यों?

- हाल ही में कोलकाता में भारतीय नौसेना ने तीन स्वदेशी युद्धपोतों—आईएनएस दुनागिरी, आईएनएस संशोधक, और आईएनएस अग्रेय को एक साथ सेवा में शामिल किया। यह 'ट्रिपल-कमीशनिंग' भारत की बढ़ती समुद्री क्षमता और रक्षा विनिर्माण में आत्मनिर्भरता का प्रतीक है।

तीनों के बारे मे महत्वपूर्ण विवरण

युद्धपोत	श्रेणी	प्रमुख भूमिका
आईएनएस दुनागिरी	प्रोजेक्ट 17A (स्टील्थ फ्रिगेट)	'ब्लू-वॉटर' कॉम्बैट; लंबी दूरी के आक्रामक और रक्षात्मक मिशन।
आईएनएस संशोधक	सर्वे वेसल लार्ज	हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण; समुद्र तल का मानचित्रण और डेटा संग्रह।
आईएनएस अग्रेय	अर्नाला-क्लास	तटीय/उथले जल में पनडुब्बी-रोधी युद्ध (Anti-Submarine Warfare)।

जहाजों की प्रमुख तकनीकी विशेषताएं:

- **आईएनएस दुनागिरी:** यह नीलगिरी-क्लास का पांचवां स्टील्थ फ्रिगेट है, जो ब्रह्मोस मिसाइल, MRSAM प्रणाली और उन्नत रडार से लैस है। यह रडार दृश्यता को कम करने में सक्षम है।
- **आईएनएस संशोधक:** यह संधायक-क्लास का चौथा और अंतिम जहाज है। यह AUV (स्वायत्त जलमग्न वाहन) और मल्टी-बीम इको साउंडर्स से सुसज्जित है, जो सुरक्षित नौवहन मार्गों के लिए अनिवार्य है।
- **आईएनएस अग्रेय:** यह तटीय जलक्षेत्र में दुश्मन की पनडुब्बियों का पता लगाने हेतु हल्के टॉरपीडो और स्वदेशी रॉकेट लॉन्चर से लैस है।

महत्व

- **स्तरित नौसैनिक क्षमता:** एक ही समारोह में स्ट्राइक पावर (फ्रिगेट), निगरानी (सर्वेक्षण पोत) और रक्षा (ASW क्राफ्ट) का समामेलन भारत के बहुस्तरीय नौसैनिक दृष्टिकोण को दर्शाता है।
- **रक्षा में आत्मनिर्भरता:** इन तीनों जहाजों का निर्माण गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स, कोलकाता द्वारा किया गया है, जिसमें 75% से अधिक घटक स्वदेशी हैं। इसमें 200 से अधिक MSMEs की भागीदारी है।

- ***भू-राजनीतिक संदर्भः*** *हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के बीच, यह तैनाती अरब सागर से लेकर बंगाल की खाड़ी तक भारत की समुद्री सुरक्षा को सुदृढ़ करती है।*
- ***नीली अर्थव्यवस्थाः*** *संशोधक जैसे जहाज समुद्री संसाधनों के दोहन और सतत विकास के लिए आवश्यक डेटा प्रदान कर भारत की 'MAHASAGAR' दृष्टि को गति देते हैं।*

4. स्वदेशी 'नेत्र' एयरबोर्न अर्ली वार्निंग एंड कंट्रोल सिस्टमः



चर्चा में क्यों?

- रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) ने भारतीय वायु सेना (IAF) को स्वदेशी 'नेत्र' (Netra) एयरबोर्न अर्ली वार्निंग एंड कंट्रोल सिस्टम के लिए 'फाइनल ऑपरेशनल क्लियरेंस' (FOC) प्रमाणपत्र सौंप दिया है। यह भारत की रक्षा तकनीक में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक प्रमुख मील का पत्थर है।

एयरबोर्न अर्ली वार्निंग एंड कंट्रोल (AEW&C) सिस्टम क्या है?

- यह एक 'आसमान में आँख' के रूप में कार्य करता है।
- इसमें विमान पर उन्नत सेंसर लगे होते हैं, जो लंबी दूरी से हवाई और समुद्री सतह के लक्ष्यों का पता लगाने, उनकी निगरानी करने और दुश्मन के खतरों की पूर्व चेतावनी देने में सक्षम हैं।
- यह युद्ध प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

'नेत्र' (Netra) प्रणाली की मुख्य विशेषताएँ:

- **विकास:** DRDO के 'सेंटर फॉर एयरबोर्न सिस्टम्स' (CABS) द्वारा IAF और भारतीय उद्योग के सहयोग से स्वदेशी रूप से विकसित।

- **विकास क्रमः** 'नेत्र' को 2017 में वायु सेना में शामिल किया गया था। यह 2019 के बालाकोट हवाई हमलों और 2025 के 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान अपनी परिचालन विश्वसनीयता और प्रभावशीलता सिद्ध कर चुका है।
- **प्लेटफॉर्मः** यह ब्राजीलियाई 'एम्ब्रेयर EMB-145I' (Embraer EMB-145I) विमान पर आधारित है।

तकनीकी क्षमताएँः

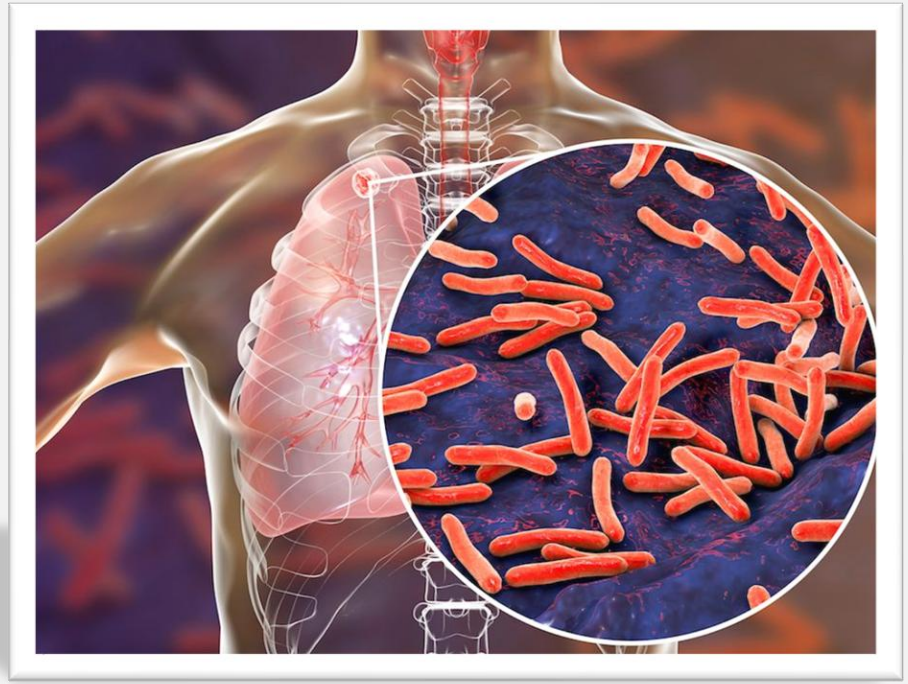
- 'एक्टिव इलेक्ट्रॉनिकली स्कैन्ड एरे' (AESA) रडार।
- 'आइडेंटिफिकेशन फ्रेंड ऑर फो' (IFF) तकनीक।
- सुरक्षित इलेक्ट्रॉनिक और संचार सहायता प्रणाली।
- कम ऊंचाई पर उड़ने वाले लक्ष्यों का सटीक पता लगाने में सक्षम।

- **उपलब्धिः** इसके साथ भारत स्वदेशी AEW&C क्षमता रखने वाला दुनिया का 5वाँ देश बन गया है। यह सिस्टम 'नेटवर्क-सेंट्रिक वारफेयर' की दिशा में भारत की क्षमता को सुदृढ़ करता है।

महत्वः

- **सामरिक श्रेष्ठताः** यह प्रणाली भारतीय वायु सेना को आधुनिक युद्ध परिदृश्य में बेहतर 'सिचुएशनल अवेयरनेस' प्रदान करती है।
- **आत्मनिर्भर भारतः** 'नेत्र' का विकास रक्षा क्षेत्र में DRDO, IAF और निजी उद्योग के बीच तालमेल का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो भविष्य में 'विकसित भारत' के रक्षा लक्ष्यों को गति प्रदान करेगा।
- **संशोधन की लचीलापनः** स्वदेशी होने के कारण, भारतीय सशस्त्र बलों को युद्ध की बदलती परिस्थितियों के अनुसार इसमें संशोधनों की पूरी स्वतंत्रता और लचीलापन प्राप्त है।

१. प्री-वेंटीबी ट्रायल और टीबी उन्मूलन



चर्चा में क्यों?

- हाल ही में ICMR के 'प्री-वेंटीबी' (PreVenTB) फेज़-III क्लिनिकल ट्रायल के परिणाम सामने आए हैं। यह ट्रायल टीबी (Tuberculosis) के खिलाफ भारत की लड़ाई में एक ऐतिहासिक कदम है, विशेष रूप से एक्स्ट्रा-पल्मोनरी टीबी के मामलों को रोकने में।

प्री-वेंटीबी ट्रायल के बारे में

- यह ICMR द्वारा संचालित दुनिया का पहला फेज़-III 'वास्तविक-दुनिया' वैक्सीन ट्रायल है।
- **प्रतिभागी:** 18 स्थलों पर कुल 12,700 घरेलू संपर्क शामिल किए गए।

वैक्सीन उम्मीदवार:

- **VPM1002:** सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया द्वारा विकसित।
- **Immuvac:** जाइडस कैडिला द्वारा विकसित।

प्रमुख निष्कर्ष:

- **VPM1002:** एक्स्ट्रा-पल्मोनरी टीबी (EPTB) के खिलाफ 50.4% और 6-14 वर्ष के बच्चों में सभी प्रकार के टीबी के खिलाफ 64.6% प्रभावकारिता।
- **Immuvac:** 6-10 वर्ष के बच्चों में 60% से अधिक प्रभावकारिता।

टीबी (Tuberculosis) के बारे में

- **कारक:** माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस नामक जीवाणु।
- **प्रसार:** वायु के माध्यम से (खांसने/छींकने से)।

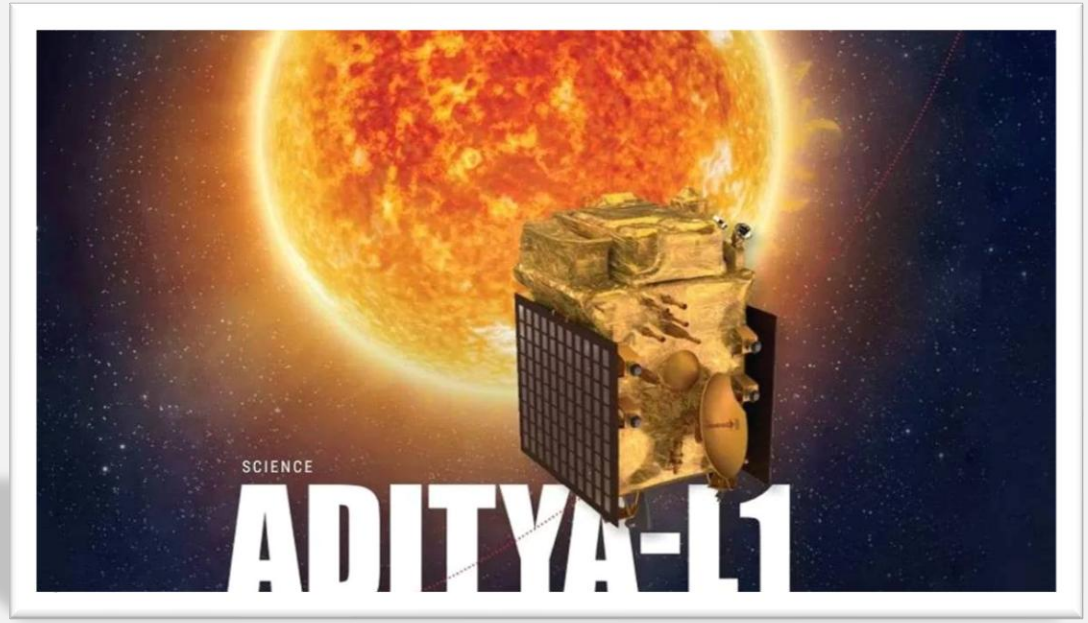
प्रकार:

- **पल्मोनरी टीबी (PTB):** फेफड़ों को प्रभावित करने वाला सबसे आम और संक्रामक रूप।
- **एक्स्ट्रा-पल्मोनरी टीबी (EPTB):** फेफड़ों के बाहर के अंगों (जैसे लिम्फ नोड्स, रीढ़, मस्तिष्क) को प्रभावित करना। यह अधिक घातक और निदान में कठिन होता है।

भारत की प्रमुख पहलें:

- **राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम:** इसका लक्ष्य DTPB (Detect-Treat-Prevent-Build) रणनीति के माध्यम से टीबी का उन्मूलन करना है।
- **स्वदेशी निदान:** TrueNat और CBNAAT जैसे आणविक परीक्षणों का बड़े पैमाने पर रोल-आउट।
- **निक्षय पोषण योजना:** मरीजों को पोषण संबंधी सहायता प्रदान करना।
- **निक्षय मित्र:** सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से मरीजों को सहायता।

10. आदित्य-L1 सौर मिशन: वैज्ञानिक डेटा का दूसरा सेट जारी



चर्चा में क्यों?

- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने आदित्य-L1 सौर मिशन के वैज्ञानिक डेटा का दूसरा सेट जारी किया है। यह डेटा सूर्य के वायुमंडल, सौर ज्वालाओं और अंतरिक्ष के मौसम को समझने के लिए वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।

डेटा का विवरण और पहुँच:

- **स्रोत:** यह डेटा 'भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान डेटा केंद्र' की वेबसाइट पर PRADAN पोर्टल के माध्यम से सार्वजनिक रूप से उपलब्ध है।

पेलोड का वर्गीकरण:

- **रिमोट सेंसिंग पेलोड (जैसे VELC, SUIT):** सूर्य की फोटोस्फीयर, क्रोमोस्फीयर और कोरोना की उच्च-स्तरीय तस्वीरें प्रदान करते हैं।
- **इन-सिटू पेलोड (जैसे ASPEX, MAG):** लैग्रेंज पॉइंट L1 पर चुंबकीय क्षेत्र और सौर हवा के कणों का सटीक मापन करते हैं।

आदित्य-L1 सौर मिशन के बारे में

- **लॉन्च:** 2 सितंबर, 2023 को PSLV-C57 (XL संस्करण) द्वारा।
- **स्थिति:** पृथ्वी से 15 लाख किलोमीटर दूर, सूर्य-पृथ्वी प्रणाली के लैग्रेंज बिंदु 1 (L1) के चारों ओर 'हेलो ऑर्बिट' में स्थापित।
- **महत्व:** लैग्रेंज पॉइंट L1 सूर्य का निरंतर अवलोकन करने की सुविधा प्रदान करता है।
- **लैग्रेंज बिंदु (L1):** अंतरिक्ष में वह बिंदु जहाँ दो बड़े पिंडों (सूर्य और पृथ्वी) का गुरुत्वाकर्षण बल एक-दूसरे को संतुलित करता है, जिससे उपग्रह को स्थिर रहने के लिए न्यूनतम ईंधन की आवश्यकता होती है।

Result Mitra

II. सॉवरेन AI: भारत की वैश्विक AI निर्माता बनने की यात्रा



चर्चा में क्यों?

- 'इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026' में भारत के 'सॉवरेन एआई' लक्ष्यों पर चर्चा की गई। भारत का लक्ष्य एआई के केवल उपभोक्ता से बदलकर इसे एक वैश्विक निर्माता के रूप में स्थापित करना है, जो भाषाई विविधता और सामाजिक-आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

सॉवरेन एआई क्या है?

- सॉवरेन एआई का तात्पर्य है—किसी राष्ट्र की अपने स्वयं के बुनियादी ढांचे, एल्गोरिदम, डेटा और कार्यबल का उपयोग करके स्वतंत्र रूप से एआई विकसित करने, तैनात करने और नियंत्रित करने की क्षमता। यह 'तकनीकी आत्मनिर्भरता' और 'राष्ट्रीय सुरक्षा' के लिए एक रणनीतिक आवश्यकता है।

सॉवरेन एआई के मुख्य स्तंभः

- **कंप्यूट संप्रभुताः** घरेलू डेटा सेंटर, GPU और सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन पर नियंत्रण।

- **डेटा संप्रभुता:** नागरिकों के संवेदनशील डेटा को राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर रखना (DPDP अधिनियम, 2023 के अनुरूप)।
- **एल्गोरिदम स्वायत्तता:** पश्चिमी 'ब्लैक-बॉक्स' मॉडलों पर निर्भरता कम करना और स्थानीय सांस्कृतिक व भाषाई संदर्भों के अनुकूल स्वदेशी 'लार्ज लैंग्वेज मॉडल्स' (LLMs) विकसित करना।

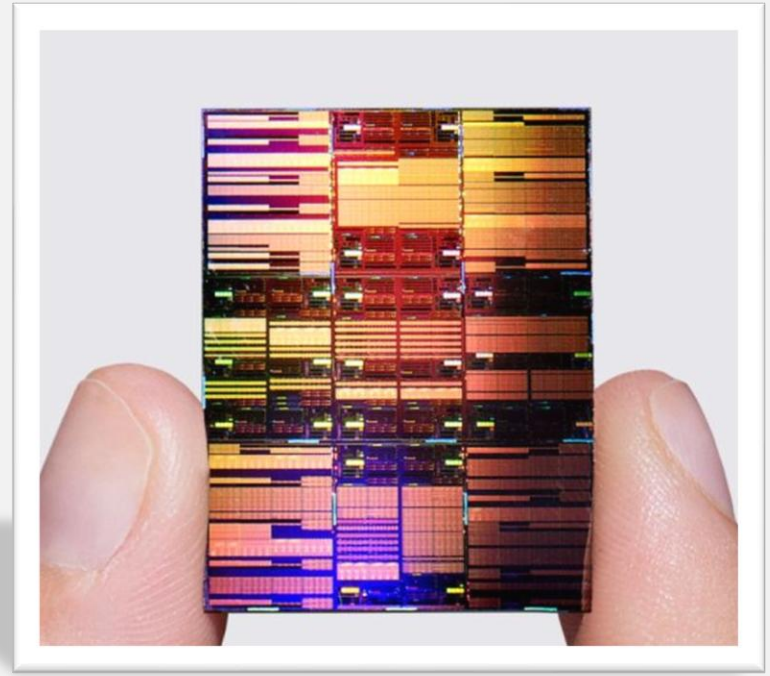
प्रमुख सरकारी पहलें:

- **इंडिया एआई मिशन:** ₹10,300 करोड़ से अधिक का परिव्यय; इसका उद्देश्य कंप्यूटिंग शक्ति बनाना, आधारभूत मॉडल विकसित करना और स्टार्टअप इकोसिस्टम को बढ़ावा देना है।

- **भाषिणी:** एक एआई-आधारित मिशन जो विभिन्न भारतीय भाषाओं में उच्च-गुणवत्तापूर्ण डेटा के साथ 'नेशनल डेटा लेक' बना रहा है।
- **भारत-जेन:** भारत की शासन और उद्यम संबंधी आवश्यकताओं के लिए स्वदेशी, बहुभाषी और मल्टीमॉडल LLMs विकसित करने की सरकारी पहल।
- **सर्वम एआई:** भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के लिए फाउंडेशनल मॉडल विकसित करने वाला एक स्टार्टअप, जिसे इंडिया एआई मिशन का समर्थन प्राप्त है।
- **महत्व:** भारत 'ग्लोबल पार्टनरशिप ऑन एआई' (GPAI) के माध्यम से विकासशील देशों के लिए जिम्मेदार और समावेशी एआई का नेतृत्व कर रहा है।

Result Mitra

12. सब-1 नैनोमीटर चिप तकनीक: सेमीकंडक्टर निर्माण में परमाणु-स्तरीय क्रांति



चर्चा में क्यों?

- हाल ही में आईबीएम (IBM) ने दुनिया की पहली सब-1 नैनोमीटर (0.7 nm) चिप तकनीक का अनावरण किया है। यह नवाचार सेमीकंडक्टर निर्माण में पारंपरिक 'चिप स्केलिंग' की सीमाओं को पार करते हुए 'परमाणु पैमाने' की कंप्यूटिंग की ओर एक ऐतिहासिक कदम है।

मुख्य तकनीकी विशेषताएँ:

- **नैनोस्टैक आर्किटेक्चर:** यह एक उन्नत त्रि-आयामी (3D) नैनोशीट-आधारित डिज़ाइन है।
- **3D अनुक्रमिक एकीकरण:** इसमें ट्रांजिस्टरों को क्षैतिज रूप से बिछाने के बजाय लंबवत रूप से एक-दूसरे के ऊपर 'स्टैक' किया जाता है।
- **ट्रांजिस्टर घनत्व:** नाखून के आकार की चिप में लगभग 100 अरब ट्रांजिस्टर पैक किए जा सकते हैं, जो आईबीएम के 2021 के 2 nm चिप की तुलना में दोगुना घनत्व है।

प्रदर्शन और ऊर्जा दक्षता:

- **प्रदर्शन:** पूर्ववर्ती 2 nm चिप्स की तुलना में 50% अधिक प्रदर्शन।
- **ऊर्जा दक्षता:** 70% अधिक ऊर्जा-कुशल, जो जेनेरेटिव एआई और क्लाउड इन्फ्रास्ट्रक्चर जैसे ऊर्जा-गहन अनुप्रयोगों के लिए गेम-चेंजर है।

चुनौतियाँ:

- **क्वांटम प्रभाव:** इतने छोटे पैमाने (परमाणुओं के आकार) पर क्वांटम प्रभाव जैसे इलेक्ट्रॉन का 'टनलिंग' होना शुरू हो जाता है, जिससे सर्किट में त्रुटियां आने का जोखिम बढ़ता है।

- **उत्पादनः** बड़े पैमाने पर व्यावसायिक उत्पादन शुरू होने में अभी लगभग 5 साल का समय और भारी विनिर्माण लागत की आवश्यकता है।
- **महत्वः** इस तकनीक का उपयोग आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) कार्यों को प्रोसेस करने और स्मार्टफोन व क्लाउड इंफ्रास्ट्रक्चर की बैटरी लाइफ बढ़ाने में किया जाएगा।

13. भारत की 'कूलिंग डॉक्ट्रिन' और हीटवेव रणनीतिः



चर्चा में क्यों?

- हालिया हीटवेव के दौरान यह स्पष्ट हुआ है कि वर्तमान 'हीट एक्शन प्लान' (HAP) और NDMA के अल्पकालिक उपाय पर्याप्त नहीं हैं। विशेषज्ञ अब भारत के लिए एक व्यापक 'राष्ट्रीय कूलिंग डॉक्ट्रिन' की वकालत कर रहे हैं, जो कूलिंग को 'सार्वजनिक स्वास्थ्य के अधिकार' के रूप में देखे।

वर्तमान मुख्य पहल और अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धता:

- **इंडिया कूलिंग एक्शन प्लान (ICAP - 2019):** पर्यावरण मंत्रालय द्वारा शुरू किया गया 20-वर्षीय रोडमैप।
- **लक्ष्य (2037-38 तक):** कूलिंग डिमांड में 20-25%, रेफ्रिजरेंट डिमांड में 25-30% और ऊर्जा खपत में 25-40% की कमी लाना।
- **किगाली संशोधन:** मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल का हिस्सा। भारत ने 2047 तक हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (HFCs) को 80% तक चरणबद्ध तरीके से कम करने की प्रतिबद्धता जताई है।

- **BEE विनियमन:** ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (BEE) द्वारा वाणिज्यिक AC के लिए 24°C का मानक तापमान अनिवार्य करना।

वर्तमान चुनौतियां:

- **'विदेशी मॉडल' की विफलता:** मौजूदा हीट एक्शन प्लान अक्सर यूरोपीय मॉडलों की नकल करते हैं, जो भारत की आर्द्र और उष्ण जलवायु के अनुकूल नहीं हैं।
- **वित्तीय बाधा:** 16वें वित्त आयोग ने हीटवेव को 'राष्ट्रीय आपदा' के रूप में वर्गीकृत करने का सुझाव दिया है ताकि केंद्र सरकार के आपदा राहत कोष (NDRF) से सीधे फंडिंग मिल सके।

- **ऊर्जा संकटः** भारत का पावर ग्रिड अपनी क्षमता का केवल 60% ही सपोर्ट कर सकता है, जिससे पश्चिमी शैली के कूलिंग सिस्टम का व्यापक उपयोग ऊर्जा असुरक्षा पैदा कर सकता है।

'राष्ट्रीय कूलिंग डॉक्ट्रिन' की आवश्यकताः

- **अनिवार्य मानकः** कारखानों, गोदामों और कॉल सेंटरों जैसे इनडोर कार्यस्थलों के लिए न्यूनतम कूलिंग मानक तय करना।
- **पैसिव कूलिंग तकनीकः** रिफ्लेक्टिव रूफिंग, ऊष्मा-रोधी सामग्री और 'डिस्ट्रिक्ट कूलिंग सिस्टम' का बड़े पैमाने पर उपयोग।
- **जलवायु-अनुकूल डिजाइनः** भारत की जलवायु के अनुरूप सस्ते और कम बिजली खपत वाले कूलिंग सिस्टम का विकास।

14. केंद्र सरकार द्वारा 16 निश्चित खुराक संयोजन (FDC) दवाओं पर प्रतिबंध



चर्चा में क्यों?:

- केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने जनहित और रोगी सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए 16 'तर्कहीन' निश्चित खुराक संयोजन (FDC) दवाओं के निर्माण, बिक्री और वितरण पर तत्काल प्रभाव से प्रतिबंध लगा दिया है। यह निर्णय विशेषज्ञ समिति (DTAB) की सिफारिशों पर आधारित है।

मुख्य बिन्दुः

- **FDC(फिक्स्ड-डोज कॉम्बिनेशन) की परिभाषाः** FDC वह दवा है जिसमें दो या दो से अधिक सक्रिय औषधीय तत्व एक निश्चित अनुपात में एक ही खुराक (गोली, कैप्सूल या सिरप) में मिश्रित होते हैं।
- **प्रतिबंध का आधारः** इन दवाओं का कोई चिकित्सीय औचित्य सिद्ध नहीं हुआ और इनका जोखिम-लाभ अनुपात प्रतिकूल पाया गया।
- **शामिल दवाएंः** प्रतिबंध के दायरे में मुख्य रूप से दर्द निवारक, एंटीबायोटिक कॉम्बिनेशन, ऐंठनरोधी दवाएं और त्वचा संबंधी कॉस्मेटिक मिश्रण शामिल हैं।

- **नियामक शक्तिः** यह प्रतिबंध 'औषधि एवं सौंदर्य प्रसाधन अधिनियम, 1940' की धारा 26A के तहत लगाया गया है, जो केंद्र सरकार को जनस्वास्थ्य के लिए हानिकारक दवाओं पर रोक लगाने का अधिकार देती है।
- **महत्वः** यह प्रतिबंध तर्कहीन दवा संयोजनों को हटाकर रोगी सुरक्षा सुनिश्चित करने और आवश्यक एंटीबायोटिक दवाओं की प्रभावशीलता बनाए रखते हुए रोगाणुरोधी प्रतिरोध (AMR) को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण है।

अतिरिक्त जानकारी:

- **DTAB (औषधि तकनीकी सलाहकार बोर्ड):** यह भारत का सर्वोच्च वैधानिक सलाहकार निकाय है जो दवाओं के तकनीकी पहलुओं पर सरकार को सलाह देता है।
- **CDSCO (केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन):** यह भारत का राष्ट्रीय नियामक प्राधिकरण है जो दवाओं के लाइसेंस और सुरक्षा मानकों के लिए जिम्मेदार है।

I. भारत में मानसून का सूखा और जलवायु तैयारी



चर्चा में क्यों?

- जून 2026 में भारत में वर्षा की भारी कमी दर्ज की गई है, जो पिछले 100 वर्षों में तीसरा सबसे सूखा जून होने की कगार पर है। देश भर में 42% तक की वर्षा कमी ने चिंता बढ़ा दी है।

वर्तमान मानसून की स्थिति:

- राष्ट्रीय औसत: जून के लिए सामान्य 157.7 मिमी के मुकाबले केवल 92.2 मिमी वर्षा दर्ज की गई।
- क्षेत्रीय वितरण: मध्य भारत (-54%), पूर्व एवं पूर्वोत्तर (-41%), उत्तर-पश्चिम (-30%) और दक्षिण (-28%) क्षेत्रों में व्यापक कमी देखी गई है।

- **क्षेत्रीय कवरेज:** लगभग 75% भारतीय भूभाग में 20% से अधिक वर्षा की कमी है।

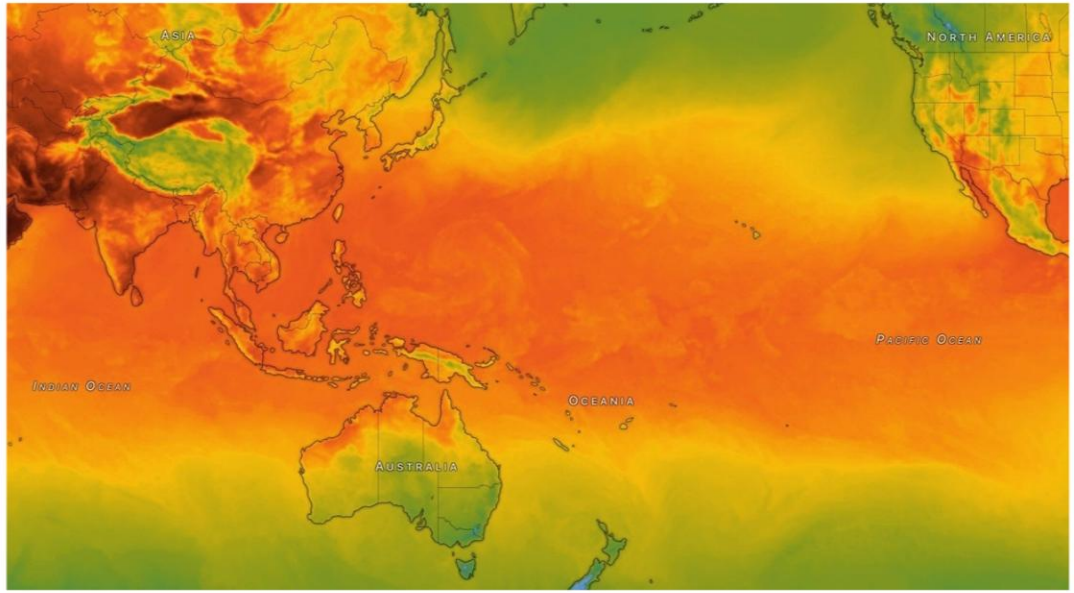
मानसून की विफलता के प्रमुख कारण:

- **एल नीनो:** भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर का असामान्य रूप से गर्म होना, जो भारतीय मानसून को दबा रहा है।
- **मैंडेन जूलियन ऑसिलेशन (MJO):** जून के अधिकांश समय MJO का 'वर्षा-अवरोधक' चरण भारतीय क्षेत्र के ऊपर स्थित था।
- **कमजोर मानसून धाराएं:** समुद्र से आने वाली पवन धाराओं में गति की कमी, जिससे मानसून का विस्तार देश के मध्य भागों तक नहीं हो पाया।

- ***वायुमंडलीय दबावः*** *महासागरों के ऊपर बने 'लो-प्रेशर सिस्टम' में थर्मल और संरचनात्मक मजबूती की कमी।*
- ***मानसून के सूखे का प्रभावः*** *कम वर्षा से खरीफ फसलों का उत्पादन घटेगा जिससे खाद्य मुद्रास्फीति बढ़ेगी और ग्रामीण आय कम होने से जीडीपी पर बुरा असर पड़ेगा। इसके साथ ही, जलाशयों का जलस्तर गिरने से पेयजल का संकट पैदा होगा और जलविद्युत उत्पादन घटने से बिजली आपूर्ति बाधित होगी।*

Result Mitra

2. अल नीनो तंत्र



- अल नीनो मध्य और पूर्वी भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर में समुद्र की सतह के तापमान में असामान्य वृद्धि को कहते हैं। यह एक जटिल जलवायु घटना है जो वैश्विक मौसम को प्रभावित करती है।
- **अर्थः** स्पेनिश भाषा में अल नीनो का अर्थ 'बाल मसीह' होता है।
- **ENSOः** यह अल नीनो-दक्षिणी दोलन (El Nino-Southern Oscillation - ENSO) का उष्ण (गर्म) चरण है।
- **अवधिः** यह आमतौर पर 9 से 12 महीने तक रहता है और अनियमित रूप से हर 2 से 7 साल के अंतराल पर घटित होता है।

कार्य-प्रणाली:

- **सामान्य स्थिति:** पूर्वी व्यापारिक पवनें अमेरिका से एशिया की ओर चलती हैं, जिससे गर्म जल पश्चिम की ओर जमा होता है और पेरू तट पर ठंडा, पोषक तत्वों से भरपूर जल ऊपर (अपवेलिंग) आता है।
- **अल नीनो के दौरान:** व्यापारिक पवनें कमजोर हो जाती हैं या उनकी दिशा बदल जाती है। गर्म जल का पूल पूर्व की ओर (पेरू तट की तरफ) खिसक जाता है, जिससे 'अपवेलिंग' रुक जाती है और वैश्विक वायुमंडलीय परिसंचरण बदल जाता है।

प्रभाव (भारत और विश्व):

भारत पर प्रभाव:

- **मानसून में कमी:** भारतीय मानसून के साथ व्युत्क्रमानुपाती संबंध; उपमहाद्वीप पर शुष्क हवाएँ और उच्च दबाव, जिससे वर्षा में कमी आती है।
- **कृषि एवं अर्थव्यवस्था:** खरीफ फसलों (चावल, गन्ना) पर संकट, खाद्य मुद्रास्फीति में वृद्धि और जीडीपी पर प्रतिकूल प्रभाव।
- **तापमान:** वर्षा की कमी से लू जैसी स्थितियों का बढ़ना।

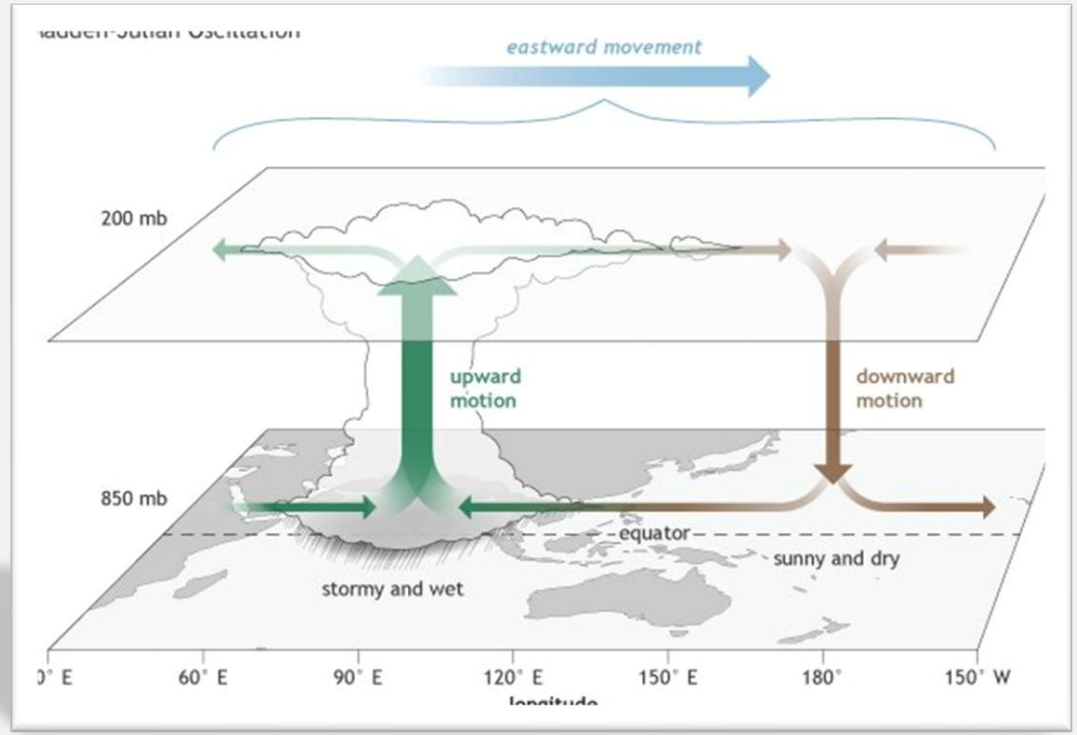
विश्व पर प्रभाव:

- **अमेरिका:** उत्तरी भागों में शुष्क सर्दियाँ, जबकि पेरू/इक्वाडोर में बाढ़।
- **ऑस्ट्रेलिया/इंडोनेशिया:** गंभीर सूखा और जंगल की आग की घटनाएं।
- **समुद्री जीवन:** पेरू तट पर पोषक तत्वों के अभाव से मत्स्य उद्योग प्रभावित।

ला नीना: इसका विपरीत चरण

- ला नीना को ENSO का 'शीत चरण' कहा जाता है। इसमें पूर्वी प्रशांत महासागर का तापमान सामान्य से कम हो जाता है, जो भारतीय मानसून के लिए आमतौर पर अच्छा (भारी वर्षा) माना जाता है।

3. मैंडेन-जूलियन ऑसिलेशन (MJO)



परिचय

- मैडेन-जूलियन ऑसिलेशन भूमध्य रेखा के निकट पूर्व की ओर बढ़ने वाली एक समुद्री-वायुमंडलीय घटना है जो वैश्विक मौसम, विशेष रूप से उष्णकटिबंधीय वर्षा को प्रभावित करती है। यह भारतीय जलवायु और मानसून को नियंत्रित करने वाले प्रमुख कारकों में से एक है।

खोज और नाम

- इस घटना का नामकरण 1971 में अमेरिकी वैज्ञानिक रोलैंड मैडेन और पॉल जूलियन के नाम पर किया गया था, जिन्होंने इसके चक्र और विशेषताओं की खोज की थी। यह उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की आवृत्ति और तीव्रता को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मैडेन-जूलियन ऑसिलेशन (MJO) की मुख्य बातें

- **अवधि और आवृतिः** यह घटना भूमध्य रेखा के चारों ओर पूर्व दिशा में गतिमान होती है और अपना एक चक्र 30 से 60 दिनों में पूरा करती है ।
- **गतिः** यह लगभग 4-8 मीटर प्रति सेकंड की गति से पूर्व दिशा में आगे बढ़ता है।
- **क्षेत्रः** इसका प्रभाव सबसे अधिक हिंद और प्रशांत महासागरों के ऊपर देखा जाता है।

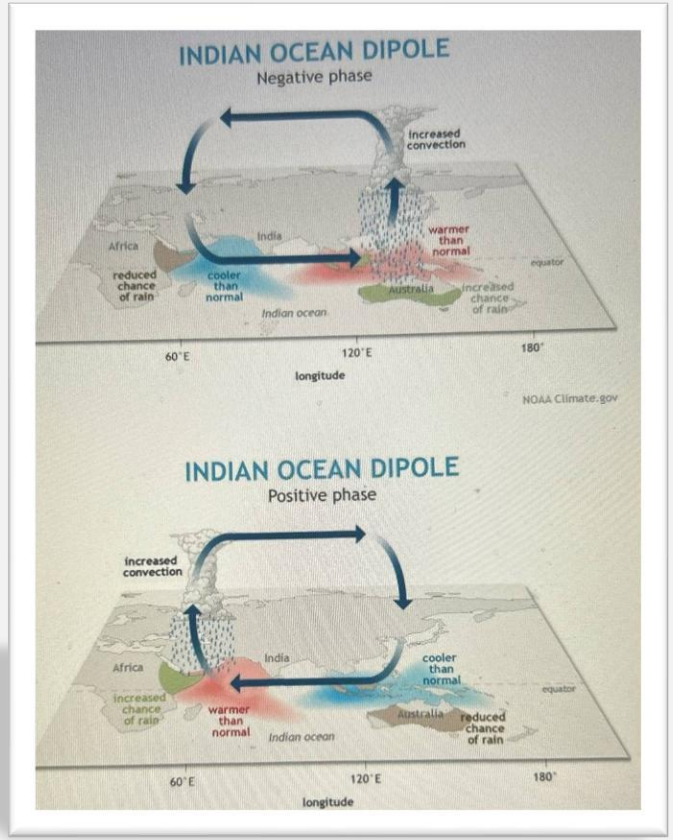
MJO की दो अवस्थाएं:

- **संवहनीय चरण:** इसमें सतह पर हवाएं मिलती हैं (अभिसरण) और ऊपर उठती हैं, जिससे भारी वर्षा और तूफानी स्थिति उत्पन्न होती है।
- **दबाव चरण:** इसमें हवा ऊपर से नीचे बैठती है, जिससे मौसम गर्म, शुष्क और बादल-रहित हो जाता है।

भारतीय मानसून पर प्रभाव:

- जब MJO अपने सक्रिय चरण में हिंद महासागर के ऊपर होता है, तो भारत में मानसून को मजबूती मिलती है और अच्छी वर्षा होती है।
- इसके विपरीत, जब यह चक्र लंबा होता है और MJO प्रशांत महासागर की ओर बढ़ता है, तो भारत में मानसून कमजोर पड़ सकता है ।

5. हिंद महासागर द्विध्रुव (IOD)



क्या है?

- हिंद महासागर द्विध्रुव (IOD) हिंद महासागर के पश्चिमी और पूर्वी हिस्सों के बीच समुद्री सतह के तापमान में अंतर को दर्शाता है। इसे 'भारतीय नीनो' भी कहा जाता है, जो भारतीय मानसून की तीव्रता और वर्षा के वितरण को नियंत्रित करने वाला एक प्रमुख वायुमंडल-महासागर संयुक्त कारक है।

IOD की कार्यप्रणाली और विकास:

- **विकास:** यह घटना आमतौर पर अप्रैल से मई के बीच विकसित होती है और अक्टूबर में अपने चरम पर पहुंचती है।
- **तापमान अंतर:** हिंद महासागर के पश्चिमी (अरब सागर/अफ्रीका तट) और पूर्वी (बंगाल की खाड़ी/इंडोनेशिया तट) हिस्सों के समुद्री सतह के तापमान में भिन्नता से वायुमंडलीय दबाव में अंतर उत्पन्न होता है, जो हवाओं के प्रवाह को निर्देशित करता है।

IOD के तीन चरण:

- **तटस्थ चरण:** प्रशांत महासागर का जल इंडोनेशिया के द्वीपों के बीच से हिंद महासागर में प्रवेश करता है, जिससे सामान्य स्थिति बनी रहती है।

- **सकारात्मक IOD:** पश्चिमी हिंद महासागर पूर्वी हिस्से की तुलना में अधिक गर्म हो जाता है। पूर्वी हिस्से में गहरे महासागर से ठंडा पानी ऊपर उठता है। यह मानसून के लिए लाभकारी है।
- **नकारात्मक IOD:** पूर्वी हिंद महासागर सामान्य से अधिक गर्म और पश्चिमी हिंद महासागर ठंडा हो जाता है। यह मानसून के प्रवाह में बाधा डालता है।

भारतीय मानसून पर प्रभाव:

- **सकारात्मक IOD का प्रभाव:** यह मध्य भारत में सामान्य से अधिक वर्षा को बढ़ावा देता है। विशेष रूप से, यह अल नीनो (ENSO) के प्रतिकूल प्रभावों को बेअसर करने की क्षमता रखता है (जैसे 1983, 1994, और 1997 में देखा गया)।
- **नकारात्मक IOD का प्रभाव:** यह अल नीनो के प्रभाव का पूरक बनकर भारत में सूखे की स्थिति उत्पन्न कर सकता है।

चक्रवातों पर प्रभावः

- **सकारात्मक IOD:** अरब सागर में सामान्य से अधिक चक्रवातों का निर्माण।
- **नकारात्मक IOD:** बंगाल की खाड़ी में उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की तीव्रता और आवृत्ति में वृद्धि।
- **महत्वः** भारतीय मानसून केवल अल नीनो पर निर्भर नहीं है, बल्कि IOD और अल नीनो का संयुक्त प्रभाव मानसून की गुणवत्ता तय करता है। यदि किसी वर्ष अल नीनो हो, तो सकारात्मक IOD भारत में सामान्य वर्षा सुनिश्चित कर सकता है।

5. ग्रेट निकोबार मेगा-प्रोजेक्ट: विकास और पर्यावरण का संतुलन



चर्चा में क्यों?

- पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने ग्रेट निकोबार द्वीप (GNI) परियोजना की पर्यावरणीय मंजूरी पर उठे सवालों का खंडन किया है। यह परियोजना विकास प्राथमिकताओं और पारिस्थितिक संरक्षण के बीच एक गंभीर बहस का विषय बनी हुई है।

परियोजना का अवलोकन

- कुल विस्तार: यह 166 वर्ग किमी क्षेत्र में फैली एक मेगा-परियोजना है।

- **कुल लागत:** अनुमानित निवेश ₹72,000 करोड़ से ₹81,000 करोड़ के बीच है।
- **समय-सीमा:** परियोजना को तीन चरणों में 2025 से 2047 तक पूरा किया जाएगा।
- **निष्पादन:** इसे नीति आयोग द्वारा परिकल्पित और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह एकीकृत विकास निगम द्वारा निष्पादित किया जा रहा है।

परियोजना के मुख्य घटक

- **ICTT:** गैलाथिया खाड़ी में अंतर्राष्ट्रीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट टर्मिनल (क्षमता: 16 मिलियन TEUs)।

- **हवाई अड्डा:** सैन्य और नागरिक उपयोग के लिए ग्रीनफील्ड अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा।
- **ऊर्जा:** 450 MVA का गैस और सौर हाइब्रिड पावर प्लांट।
- **शहरी विकास:** एक आधुनिक और टिकाऊ ग्रीनफील्ड तटीय शहर (टाउनशिप)।

रणनीतिक और आर्थिक महत्व

- **मैरीटाइम विजन:** यह भारत के 'मैरीटाइम विजन 2030' और 'अमृत काल विजन 2047' का अभिन्न अंग है।
- **भू-राजनीतिक लाभ:** मलक्का जलडमरूमध्य (वैश्विक व्यापार का 25%) पर निगरानी और क्वाड रणनीति के तहत हिंद-पैसिफिक में सुरक्षा संतुलन।

- **रक्षा क्षमता:** चीन की गतिविधियों को संतुलित करने हेतु 'अचल विमानवाहक पोत' के रूप में स्थायी रक्षा आधार।
- **आर्थिक आत्मनिर्भरता:** 75% विदेशी ट्रांसशिपमेंट निर्भरता (कोलंबो, सिंगापुर, पोर्ट क्लांग) को कम करना और लैंडलॉर्ड मॉडल के तहत PPP निवेश आकर्षित करना।

ग्रेट निकोबार द्वीप के बारे में

- ग्रेट निकोबार अंडमान और निकोबार का सबसे दक्षिणी एवं बड़ा द्वीप है।

- दस डिग्री चैनल अंडमान को निकोबार से अलग करता है।
- ग्रेट निकोबार के दक्षिणी सिरे पर स्थित इंदिरा पॉइंट भारत का सबसे दक्षिणी बिंदु है।
- यहाँ उष्णकटिबंधीय वर्षावन, पहाड़ी क्षेत्र और मैंग्रोव पाए जाते हैं। माउंट थुलियर यहाँ की सबसे ऊंची चोटी है।

Result Mitra

6. भारत में अरोरा (अरोरा बोरेलिस) का दृश्य



चर्चा में क्यों?

- हाल ही में एक तीव्र सौर तूफान के कारण लद्दाख और कश्मीर जैसे उच्च अक्षांश वाले भारतीय क्षेत्रों में दुर्लभ 'अरोरा' की घटना देखी गई।

अरोरा क्या है?

- ध्रुवीय क्षेत्रों में रात के समय दिखाई देने वाला प्रकाश का प्रदर्शन, जिसमें मुख्य रूप से हरा, लाल और नीला रंग होता है।
- **उत्पत्ति:** सूर्य की सतह से उत्सर्जित आवेशित कणों (सौर पवन) का पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश।

- **प्रक्रिया:** सौर पवन के कारण पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र (मैग्नेटोस्फीयर) में 'अरोरल सबस्टॉर्म' उत्पन्न होता है, जिससे 'कोरस तरंगें' (प्लाज्मा तरंगें) सक्रिय होकर इलेक्ट्रॉनों की वर्षा प्रेरित करती हैं। ये इलेक्ट्रॉन वायुमंडलीय गैसों (ऑक्सीजन और नाइट्रोजन) से टकराकर प्रकाश ऊर्जा मुक्त करते हैं।
- **मैग्नेटोस्फीयर की भूमिका:** पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र एक ढाल की तरह कार्य करता है जो सूर्य के चुंबकीय क्षेत्र को विक्षेपित करता है। ध्रुवों के निकट, जहाँ चुंबकीय क्षेत्र रेखाएं पृथ्वी में प्रवेश करती हैं, वहाँ यह ऊर्जा प्लाज्मा तरंगों के माध्यम से प्रकाश किरणों (अरोरा) को जन्म देती है।

वर्गीकरण

- ***अरोरा बोरेलिसः*** *उत्तरी अक्षांश (अलास्का, कनाडा, आइसलैंड, नॉर्वे, स्वीडन, फिनलैंड)।*
- ***अरोरा ऑस्ट्रेलिसः*** *दक्षिणी अक्षांश (अंटार्कटिका, चिली, अर्जेंटीना, न्यूज़ीलैंड, ऑस्ट्रेलिया)।*

Result Mitra

7. अरावली संरक्षण: उच्च-स्तरीय विशेषज्ञ पैनल का गठन



चर्चा में क्यों?

- सर्वोच्च न्यायालय ने अरावली पर्वतमाला के सीमांकन और वैज्ञानिक परिभाषा पर पिछली रिपोर्ट (अक्टूबर 2025) की अस्पष्टताओं को दूर करने के लिए एक उच्च-स्तरीय विशेषज्ञ समिति का गठन किया है। यह अरावली पारिस्थितिकी तंत्र के स्वतंत्र और वैज्ञानिक मूल्यांकन पर केंद्रित है।

उच्च-स्तरीय विशेषज्ञ समिति: मुख्य बिंदु

- **अध्यक्ष:** कंचन देवी (महानिदेशक, ICFRE)
- **संरचना:** 5 सदस्यीय समिति
- **अधिदेश (Mandate):** अरावली का 'सतत पारिस्थितिक संरचना' के रूप में नया वैज्ञानिक मूल्यांकन करना।
- **समय-सीमा:** 31 अगस्त, 2026 तक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
- **विवाद की जड़:** पिछली रिपोर्ट में 100 मीटर से कम ऊंचाई वाली पहाड़ियों और 500 मीटर से अधिक अंतराल वाली श्रेणियों को अरावली की परिभाषा से बाहर रखा गया था, जिससे अवैध खनन का कानूनी मार्ग प्रशस्त होने का खतरा था।

अरावली पर्वतमाला: भौगोलिक और पारिस्थितिक महत्व

- **भौगोलिक परिचय:** प्री-कैम्ब्रियन युग की दुनिया की सबसे पुरानी अवशिष्ट (Residual) वलित पर्वतमाला।
- **विस्तार:** गुजरात (पालनपुर) से दिल्ली (रायसीना हिल्स) तक लगभग 692 किमी।
- **सर्वोच्च शिखर:** गुरु शिखर (माउंट आबू, राजस्थान), ऊंचाई ~1,722 मीटर।

पारिस्थितिक महत्वः

- **ग्रीन वॉलः** थार मरुस्थल के पूर्व की ओर विस्तार को रोकने वाली प्राकृतिक अवरोधक।
- **जल पुनर्भरणः** राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली के लिए प्रमुख जलभृत (Aquifer) पुनर्भरण क्षेत्र।
- **पर्यावरणीय फेफड़ेः** दिल्ली-NCR के प्रदूषित क्षेत्रों के लिए वायु शुद्धिकरण का कार्य।

प्रमुख नदियाँ

- **पश्चिम की ओरः** लूनी और साबरमती।
- **पूर्व की ओरः** बनास।
- **उत्तर की ओरः** साहिबी।

अरावली संरक्षण हेतु प्रमुख पहलें

- **अरावली ग्रीन वॉल परियोजना:** अरावली के चारों ओर 5 किमी का हरित बफर ज़ोन विकसित करने की पहल (शुरुआत: 2023)।
- **मातृ वन पहल (गुरुग्राम):** 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत 750 एकड़ में शहरी वन विकास।

न्यायिक सक्रियता:

- **एम.सी. मेहता बनाम भारत संघ (2002):** अरावली के महत्व को कानूनी मान्यता।
- **अरावली बचाओ आंदोलन:** राजेंद्र सिंह ('भारत के वाटरमैन') के नेतृत्व में खनन विरोधी जन-आंदोलन।

- **वैधानिक ढांचा:** केंद्रीय अधिकार प्राप्त समिति (CEC) पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 के तहत कार्य करती है, जो पर्यावरण संबंधी मामलों पर सुप्रीम कोर्ट को सलाह देती है।
- अरावली का भविष्य 'पारदर्शी डेटा' और 'वैज्ञानिक सीमांकन' पर निर्भर है। समिति की रिपोर्ट न केवल खनन नियमों को तय करेगी, बल्कि मरुस्थलीकरण के विरुद्ध भारत की जलवायु सुरक्षा रणनीति की आधारशिला भी बनेगी।

4. विश्व पर्यावरण दिवस 2026



चर्चा में क्यों?

- पर्यावरण संरक्षण के प्रति वैश्विक प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करने हेतु हर वर्ष 5 जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाया जाता है। वर्ष 2026 का आयोजन अज़रबैजान (बाकू) की मेजबानी में संपन्न हुआ, जो जलवायु परिवर्तन (COP29) के प्रति अपनी वैश्विक भूमिका के लिए भी जाना जाता है।

विश्व पर्यावरण दिवस 2026: मुख्य बिन्दु

- **थीम:** "प्रकृति से प्रेरित। जलवायु के लिए। हमारे भविष्य के लिए।" (Inspired by Nature. For Climate. For Our Future.)
- **अभियान संदेश:** #NowForClimate
- **नोडल एजेंसी:** संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP)।
- **मेजबान:** अज़रबैजान (बाकू)।

मुख्य फोकस क्षेत्र (एजेंडा 2026)

- **प्रकृति-आधारित समाधान:** जलवायु लचीलापन बढ़ाने हेतु वनीकरण, आर्द्रभूमि के संरक्षण और जैव विविधता बहाली पर जोर।
- **जलवायु कार्रवाई:** पेरिस समझौते के लक्ष्यों के अनुरूप ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कटौती।

- **स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण:** नवीकरणीय ऊर्जा (सौर/पवन) और 'हरित हाइड्रोजन' के उपयोग को प्रोत्साहन।
- **पारिस्थितिकीय अर्थव्यवस्था:** प्रकृति का दोहन किए बिना सतत विकास के प्रतिमान स्थापित करना।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और विकास

- **शुरुआत:** इसकी घोषणा 1972 में स्टॉकहोम में आयोजित 'संयुक्त राष्ट्र मानव पर्यावरण सम्मेलन' (UNCHE) के दौरान की गई थी।

- **प्रथम आयोजनः** पहली बार 5 जून 1973 को 'केवल एक पृथ्वी' (Only One Earth) थीम के साथ मनाया गया।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) के बारे में

- **स्थापनाः** 1972 के स्टॉकहोम सम्मेलन के बाद।
- **मुख्यालयः** नैरोबी, केन्या।
- **कार्यः** यह वैश्विक स्तर पर पर्यावरण मानकों को निर्धारित करने, सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को लागू करने और देशों के बीच पर्यावरणीय सहयोग बढ़ाने वाली प्रमुख संस्था है।

Result Mitra

१. भारत में शहरी अग्निकांड



चर्चा में क्यों?

- भारत के शहरी केंद्रों में आग लगने की बढ़ती घटनाएं केवल आकस्मिक दुर्घटनाएं नहीं हैं, बल्कि यह तेजी से होते अनियोजित शहरीकरण, सुरक्षा मानदंडों के प्रति उदासीनता और नियामक प्रवर्तन की विफलता का परिणाम हैं।

शहरी अग्निकांड के प्रमुख कारक

- **राष्ट्रीय भवन संहिता (NBC, 2016) का उल्लंघन:** 15 मीटर से अधिक ऊंची इमारतों के लिए अनिवार्य दो सीढ़ियों और निकास द्वारों का अभाव।

- **अनियोजित शहरीकरण:** पुरानी और संकरी गलियां, जो दमकल वाहनों की पहुंच में बाधा उत्पन्न करती हैं।
- **इलेक्ट्रिकल विफलताएं:** लगभग 70% वाणिज्यिक आग की घटनाएं शॉर्ट सर्किट या पुरानी/अमानक वायरिंग के कारण होती हैं।
- **अवैध संशोधन:** स्वीकृत भवन योजनाओं से इतर व्यावसायिक उपयोग के लिए ढांचों में किए गए अनधिकृत बदलाव।

संवैधानिक और कानूनी ढांचा

- **संवैधानिक स्थिति:** 'अग्नि सेवा' संविधान की 12वीं अनुसूची (अनुच्छेद 243W) के तहत नगर पालिकाओं/नगर निकायों का विषय है।

- **मौलिक अधिकार:** सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार, अग्नि सुरक्षा से संबंधित निवारक उपाय अनुच्छेद 21 (जीवन का अधिकार) का एक अनिवार्य हिस्सा हैं।
- **नियमन:** भारतीय मानक ब्यूरो अग्नि सुरक्षा उपकरणों के मानक तय करता है, जबकि स्थानीय नगर निकाय NBC 2016 के आधार पर अग्नि अनापत्ति प्रमाण पत्र (NOC) जारी करते हैं।

आपदा प्रबंधन तंत्र और समाधान

- **निवारक ऑडिट:** जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (DDMA) द्वारा सभी सार्वजनिक/वाणिज्यिक भवनों का नियमित 'फायर सेफ्टी ऑडिट' अनिवार्य करना।

- **तकनीकी एकीकरण:** भविष्य के शहरों में 'स्मार्ट अग्नि सुरक्षा' हेतु IoT उपकरणों और AI-आधारित पूर्व चेतावनी प्रणालियों का उपयोग।
- **बिल्ड बैक बेटर:** सेंडाई फ्रेमवर्क के सिद्धांतों को अपनाते हुए पुराने ढांचों की रेट्रोफिटिंग करना।
- **प्रवर्तन में सख्ती:** नियमों का पालन न करने वाले प्रतिष्ठानों पर 'प्रदूषक द्वारा भुगतान' की तर्ज पर भारी दंड और लाइसेंस रद्दीकरण।
- शहरी अग्निकांड से निपटने के लिए केवल 'प्रतिक्रिया' पर ध्यान देना पर्याप्त नहीं है; इसके लिए 'निवारक शासन' की आवश्यकता है। NBC मानदंडों का कठोर प्रवर्तन, नियमित सुरक्षा अभ्यास और नागरिकों में जागरूकता ही इस 'मानव-जनित आपदा' को रोकने का एकमात्र मार्ग है।

प्रमुख सम्मेलन (Important Summits)

1. 52वां G7 शिखर सम्मेलन, 2026



चर्चा में क्यों?

- 15-17 जून, 2026 तक फ्रांस के एवियन-लेस-बैंस (जिनेवा झील के तट पर) में 52वें G7 शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह सम्मेलन अमेरिका-ईरान के बीच ऐतिहासिक शांति समझौते और बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव के बीच संपन्न हुआ।

G7 सदस्य देश:

- फ्रांस, कनाडा, जर्मनी, इटली, जापान, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका।

आमंत्रित प्रमुख अतिथिः

- भारत (नरेंद्र मोदी), ब्राजील (लुइज़ इनासियो लूला दा सिल्वा), केन्या (विलियम रुटो), दक्षिण कोरिया (यून सुक येओल), यूक्रेन (वलोदिमिर ज़ेलेंस्की), संयुक्त अरब अमीरात, कतर और मिस्र।

शिखर सम्मेलन के प्रमुख एजेंडेः

- अमेरिका-ईरान शांति समझौताः होर्मुज जलडमरूमध्य को खोलना और सैन्य अभियानों की समाप्ति।
- **यूक्रेन युद्धः** संघर्ष समाधान और सुरक्षा पर चर्चा।

- **महत्वपूर्ण खनिज:** चीन पर निर्भरता कम करने के लिए रणनीतिक आपूर्ति श्रृंखला सुरक्षित करना।
- **वैश्विक आर्थिक असंतुलन:** वित्तीय स्थिरता और मैक्रो-अर्थशास्त्र पर विमर्श।

भारत की भूमिका:

- **13वीं उपस्थिति:** यह शिखर सम्मेलन में भारत की 13वीं और पीएम मोदी की लगातार 7वीं भागीदारी है।
- **प्राथमिकता:** भारत को एक "सर्वोत्तम प्राथमिकता" भागीदार के रूप में आमंत्रित किया गया।
- **मुख्य चर्चा:** गहन प्रौद्योगिकी (Deep Tech), वैश्विक वृहद अर्थशास्त्र और पश्चिम एशिया में शांति।

सुरक्षा व्यवस्था:

- स्थल को दो क्षेत्रों (लाल और नीले) में विभाजित किया गया; क्यूआर कोड आधारित प्रवेश प्रणाली का उपयोग।
- G7 शिखर सम्मेलन 2026 का महत्व न केवल पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं के समन्वय में है, बल्कि 'ग्लोबल साउथ' (Global South) के साथ भारत जैसे देशों की बढ़ती रणनीतिक साझेदारी को प्रदर्शित करने में भी है। शांति स्थापना (ईरान-अमेरिका) और तकनीकी सहयोग (नवाचार सम्मेलन) इसके केंद्र में रहे हैं।

Result Mitra

2. शंघाई सहयोग संगठन (SCO) शिखर सम्मेलन 2026



- **मेजबानी:** किर्गिस्तान (बिश्केक)।
- **मुख्य विषय:** "एससीओ के 25 वर्ष: एक स्थिर विश्व, विकास और समृद्धि के लिए एक साथ"।
- **सदस्य:** 10 देश (चीन, रूस, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान, भारत, पाकिस्तान, ईरान और बेलारूस)।
- **भारत का रुख:** रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने आतंकवाद के विरुद्ध "ज़ीरो टॉलरेंस" नीति दोहराई। भारत ने आतंकवादियों को शरण देने वाले देशों के विरुद्ध सामूहिक कार्रवाई का आह्वान किया और क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए RATS की भूमिका को सराहा।

SCO रक्षा मंत्रियों की बैठक (बिश्केक):

- **भारतीय नेतृत्व:** रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह।
- **प्रमुख संदेश:** भारत ने आतंकवाद पर "ज़ीरो टॉलरेंस" नीति दोहराते हुए 'ऑपरेशन सिंदूर' का उल्लेख किया।
- **एजेंडा:** आतंकवाद, अलगाववाद और उग्रवाद के विरुद्ध सामूहिक कार्रवाई; तियानजिन घोषणा (2025) के सिद्धांतों का पालन।
- **रणनीतिक भूमिका:** कट्टरपंथ के विरुद्ध RATS (क्षेत्रीय आतंकवाद-रोधी संरचना) की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया।
- **वैश्विक दृष्टिकोण:** 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के माध्यम से नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था और संवाद पर जोर।

Result Mitra

3. 18वां ब्रिक्स (BRICS) शिखर सम्मेलन, 2026



ब्रिक्स (BRICS) की पृष्ठभूमि:

- **अवधारणा:** 2001 में जिम ओ'नील (अर्थशास्त्री) द्वारा 'BRIC' शब्द का प्रतिपादन।
- **पहला शिखर सम्मेलन:** 2009 (रूस)।
- **विस्तार:** 2010 में दक्षिण अफ्रीका, 2024 में मिस्र, इथियोपिया, ईरान, सऊदी अरब, UAE और 2025 में इंडोनेशिया शामिल हुआ।

मेज़बानी और स्थान:

- **स्थान:** नई दिल्ली, भारत।
- **अध्यक्षता:** भारत (1 जनवरी 2026 से प्रभावी)।
- **थीम:** "मानवता प्रथम" (Humanity First) – लचीलापन, नवाचार, सहयोग और स्थिरता पर केंद्रित।

सदस्य राष्ट्र (11):

- ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका, मिस्र, इथियोपिया, ईरान, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और इंडोनेशिया।

भारत की अध्यक्षता के 4 प्रमुख स्तंभ:

1. **लचीलापन (Resilience):** आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करना और जलवायु चुनौतियों का प्रबंधन।
2. **नवाचार (Innovation):** डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना, एआई (AI) और फिनटेक को बढ़ावा देना।
3. **सहयोग (Cooperation):** सदस्य देशों के मध्य बहुपक्षीय संबंधों को गहरा करना।
4. **स्थिरता (Sustainability):** हरित वित्त, ऊर्जा संक्रमण और जलवायु कार्रवाई में तेजी लाना।

ब्रिक्स (BRICS) कृषि मंत्रियों की 16वीं बैठक

- भारत की अध्यक्षता में इंदौर, मध्य प्रदेश में 12-13 जून, 2026 को बैठक संपन्न हुई।

प्रमुख परिणाम (संयुक्त घोषणापत्र):

1. **उत्कृष्टता केंद्रों का नेटवर्क:** एग्रोइकोलॉजी और पुनर्योजी कृषि पर (समन्वय: ICAR-IIFSR, मोदीपुरम)।
2. **डिजिटल कृषि नेटवर्क:** एआई और डेटा समाधानों के लिए (समन्वय: IIT दिल्ली)।
3. **बीज अधिकारों का वैश्विक मंच:** किसानों के अधिकारों की रक्षा (समन्वय: PPV&FRA, नई दिल्ली)।

4. **ब्रिक्स एग्रिन (BRICS-AGRIN):** कृषि-इनपुट और आनुवंशिक संसाधनों हेतु साझा फ्रेमवर्क।
5. **ज्ञान केंद्र:** 'ब्रिक्स कृषि अनुसंधान मंच' (BARP) को "नॉलेज-टू-एक्शन हब" में बदलना।
6. **व्यापार पहल:** 'ब्रिक्स ग्रेन एक्सचेंज' पर विशेष संवाद।
7. **पर्यावरण पहल:** इंदौर में 'ब्रिक्स वाटिका' का वृक्षारोपण।

ब्रिक्स राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों (NSA) की बैठक

चर्चा में क्यों?

- भारत की अध्यक्षता में नई दिल्ली में ब्रिक्स के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों (NSA) की 16वीं बैठक आयोजित की गई, जिसका मुख्य उद्देश्य वैश्विक और क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों पर सामूहिक रणनीति बनाना था।



बैठक के प्रमुख एजेंडे:

- **गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियां:** ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, आपूर्ति श्रृंखला (Supply Chain) सुरक्षा, साइबर सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न अस्थिरता।
- **उभरती तकनीकें:** आतंकवादी नेटवर्क द्वारा नई तकनीकों (जैसे AI, ड्रोन) के दुरुपयोग को रोकना।
- **कार्य समूहों की समीक्षा:** आतंकवाद-विरोधी (21-22 मई) और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (8-9 जून) के संयुक्त कार्य समूहों के परिणामों पर चर्चा।

प्रमुख प्रतिबद्धताएं:

- **सहयोग का विस्तार:** ब्रिक्स कानून प्रवर्तन एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय और सूचना साझाकरण (Information Sharing) पर जोर।
- **आतंकवाद के विरुद्ध संकल्प:** आतंकवाद के सभी रूपों और अभिव्यक्तियों के खिलाफ सामूहिक लड़ाई की प्रतिबद्धता।
- **भारत की अध्यक्षता का समर्थन:** ब्रिक्स 2026 की थीम—'लचीलापन, नवाचार, सहयोग और स्थिरता के लिए निर्माण' (Building for Resilience, Innovation, Cooperation, and Sustainability) के प्रति पूर्ण समर्थन।

।।वीं ब्रिक्स ऊर्जा मंत्रियों की बैठक

चर्चा में क्यों?

- भारत सरकार के विद्युत मंत्रालय द्वारा हरियाणा के गुरुग्राम में ।।वीं ब्रिक्स ऊर्जा मंत्रियों की बैठक का आयोजन किया गया है।

मुख्य विशेषताएं:

- **ऊर्जा थीम:** "सर्वेषां ऊर्जम्" (सभी के लिए ऊर्जा), जो ब्रिक्स की मुख्य थीम (लचीलापन, नवाचार, सहयोग और स्थिरता) के अनुरूप है।



भारत की ऊर्जा उपलब्धियां:

- **सौर ऊर्जा:** क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि।
- **स्मार्ट मीटर:** 60 मिलियन से अधिक की तैनाती।
- **ऊर्जा भंडारण:** 2032 तक 410 गीगावाट का महत्वाकांक्षी लक्ष्य।
- **प्रमुख पहल:** पुनर्गठित वितरण क्षेत्र योजना (RDSS), हरित ऊर्जा गलियारे और क्षेत्रीय ग्रिड कनेक्टिविटी के लिए 'वन सन वन वर्ल्ड वन ग्रिड' (OSOWOG)।
- **वैश्विक नेतृत्व:** अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) और वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन (GBA) के माध्यम से स्वच्छ ऊर्जा का प्रचार।

प्रथम ब्रिक्स MSME फोरम 2026

चर्चा में क्यों?

- भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSME) मंत्रालय द्वारा आगरा, उत्तर प्रदेश में पहले ब्रिक्स एमएसएमई फोरम 2026 का आयोजन किया गया।



फोरम का मुख्य उद्देश्यः

- ब्रिक्स सदस्य और सहयोगी देशों के बीच एमएसएमई पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करना।
- स्थिरता (Sustainability), नवाचार (Innovation) और वैश्विक प्रतिस्पर्धा क्षमता को बढ़ाना।
- फाइनेंसिंग, टेक्नोलॉजी, और बाजार तक पहुंच जैसी साझा चुनौतियों का सामूहिक समाधान खोजना।

प्रमुख बिंदु और नीतियां:

- **मंत्रिस्तरीय दृष्टिकोण:** केंद्रीय एमएसएमई मंत्री श्री जीतन राम मांझी ने ब्रिक्स देशों के बीच ज्ञान साझाकरण और आर्थिक साझेदारी पर जोर दिया।
- **यूपी का योगदान:** राज्य मंत्री श्री भूपेंद्र चौधरी ने 'इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट', 'पॉलिसी सपोर्ट' और 'डिजिटल सशक्तिकरण' को विकास का इंजन बताया।
- **विकास के इंजन:** सचिव श्री भरत खेड़ा ने एमएसएमई को नवाचार, रोजगार और क्षेत्रीय विकास का आधार स्तंभ माना।

- **नीतिगत समन्वयः** डीपीआईआईटी (DPIIT) की प्रधान आर्थिक सलाहकार सुश्री योगिता स्वरूप ने 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' और वित्त तक पहुंच (Access to Finance) को विकास का अगला चरण बताया।
- **प्रदर्शनी का उद्घाटनः** सचिव भरत खेड़ा ने ब्रिक्स देशों के नवाचारों को प्रदर्शित करने वाली ब्रिक्स एमएसएमई प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

बैठक के मुख्य परिणामः

- **तकनीकी सहयोगः** डिजिटल व्यापार और सतत विनिर्माण (Sustainable Manufacturing) पर जोर।
- **आपूर्ति श्रृंखला एकीकरणः** सदस्य देशों के बीच सप्लाई-चेन को और अधिक एकीकृत बनाना।
- **क्षमता निर्माणः** निजी क्षेत्र के हितधारकों और उद्योग जगत (ASSOCHAM) के साथ परामर्श के आधार पर सिफारिशें लागू करना।
- **सांस्कृतिक व स्वास्थ्य पहलः** अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में योग सत्र और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन।

4. पैक्स सिलिका शिखर सम्मेलन 2026



चर्चा में क्यों?

- वॉशिंगटन डी.सी. में आयोजित दूसरे 'पैक्स सिलिका शिखर सम्मेलन' (25-26 जून, 2026) में भारत सहित 35 देशों ने 'जॉइंट स्टेटमेंट ऑन एआई अपॉर्च्युनिटी' पर हस्ताक्षर किए।

पैक्स सिलिका पहल (Pax Silica Initiative):

- **नेतृत्व:** संयुक्त राज्य अमेरिका (दिसंबर 2025 में शुरुआत)।
- **उद्देश्य:** एआई (AI) प्रौद्योगिकियों के लिए सुरक्षित, विश्वसनीय और लचीली वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला विकसित करना।

- **भारत की स्थितिः** भारत फरवरी 2026 में नई दिल्ली में आयोजित 'एआई इम्पैक्ट समिट' के दौरान इस पहल में शामिल हुआ था।

संयुक्त वक्तव्य की मुख्य बातेंः

- **विकासोन्मुख नियमनः** एआई के लिए नवाचार-अनुकूल नियामक व्यवस्था (Regulatory Framework) का समर्थन।
- **आपूर्ति श्रृंखलाः** एआई हार्डवेयर और उपकरणों की विश्वसनीय आवाजाही सुनिश्चित करना।
- **निजी क्षेत्रः** एआई के वैश्विक विकास में उद्योगों और निजी क्षेत्र की सक्रिय भागीदारी पर जोर।

भारत की नई पहलें एवं घोषणाएँ:

- **पैक्स पास (Pax Pass):** एआई से संबंधित उपकरणों और वस्तुओं की अंतरराष्ट्रीय आवाजाही को सुगम बनाने हेतु नया प्लेटफॉर्म।
- **फाउंड्री स्कूल:** स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के नेतृत्व में उन्नत विनिर्माण (Advanced Manufacturing) प्रशिक्षण हेतु स्थापना।
- **वित्तीय सहायता:** अमेरिका द्वारा फाउंड्री स्कूल के लिए 5 करोड़ डॉलर (50 मिलियन USD) की सहायता।

5. वैश्विक AI कूटनीति संवाद

- जून 2026 में वैश्विक एआई कूटनीति के ये घटनाक्रम न केवल तकनीकी मानकों का निर्धारण कर रहे हैं, बल्कि भविष्य की वैश्विक शासन संरचना (Global Governance Architecture) को भी परिभाषित कर रहे हैं।

एआई कूटनीति 2026

I. संयुक्त राष्ट्र का 'ग्लोबल डायलॉग ऑन एआई गवर्नेंस' (जिनेवा):

- **आधार:** ग्लोबल डिजिटल कॉम्पैक्ट (संकल्प A/RES/79/325)।



- **महत्वः** यह 193 सदस्य देशों को एक मंच पर लाकर 'एआई के लिए वैश्विक मानक' तय करने का प्रयास है।
- **केंद्र बिंदुः** मानवाधिकारों का संरक्षण, सुरक्षा, और एआई के विकास में पारदर्शिता।

2. भारत की वैश्विक उपस्थितिः

- **फ्रांस (भारत इनोवेट्स 2026):** भारत ने यूरोपीय निवेशकों के साथ क्वांटम तकनीक, डीप-टेक और एआई पर अपनी तकनीकी कूटनीति का प्रदर्शन किया है।
- **इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट (फरवरी 2026):** भारत ने डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI) और सॉवरेन एआई (Sovereign AI) के मॉडल को वैश्विक मंच पर एक 'मानवीय और जन-केंद्रित' विकल्प के रूप में स्थापित किया है।

एआई कूटनीति के चार स्तंभ (विश्लेषण)

स्तंभ	प्रमुख चुनौती/उद्देश्य
डिजिटल विभाजन	विकासशील देशों को केवल उपभोक्ता के बजाय 'निर्माता' बनाने हेतु कंप्यूटिंग संसाधनों का साझाकरण।
इंटरऑपरेबिलिटी	विभिन्न देशों के एआई नियमों में सामंजस्य, ताकि अंतरराष्ट्रीय व्यापार और सहयोग बाधित न हो।
जवाबदेही	एआई प्रणालियों में 'ह्यूमन-इन-द-लूप' (Human-in-the-loop) सुनिश्चित करना।
वैज्ञानिक पैनल	साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण हेतु संयुक्त राष्ट्र का वैज्ञानिक सलाहकार तंत्र।

नियुक्तियाँ

1. डॉ. महेश दीक्षित बने इंटेलिजेंस ब्यूरो (IB) के नए निदेशक



चर्चा में क्यों?

- हाल हीं में वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी डॉ. महेश दीक्षित को इंटेलिजेंस ब्यूरो (IB) का नया निदेशक नियुक्त किया गया है। वह 1993 बैच के आईपीएस अधिकारी हैं।

महत्वपूर्ण विवरण:

- उन्होंने पूर्व आईबी प्रमुख तपन कुमार डेका का स्थान लिया है।
- उनका कार्यकाल पदभार ग्रहण करने की तिथि से 2 वर्ष है।
- उन्हें जम्मू-कश्मीर और लेह जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में इंटेलिजेंस ऑपरेशन का व्यापक अनुभव है।

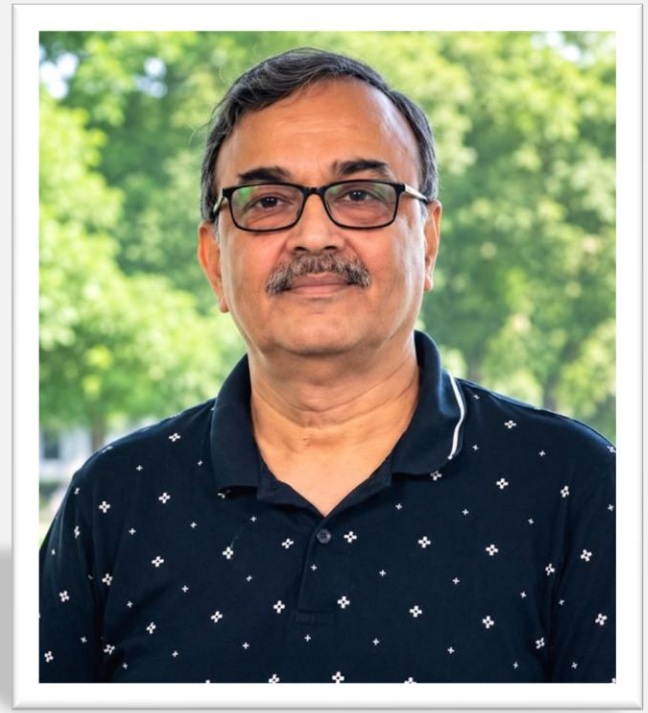
- अनुच्छेद 370 के निरसन के बाद, उन्होंने श्रीनगर में लगभग 5 वर्षों तक आईबी (SIB) प्रमुख के रूप में सुरक्षा व्यवस्था संभालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

इंटेलिजेंस ब्यूरो (IB) का परिचय:

- **स्थापना:** 1887, विश्व के सबसे पुराने खुफिया संगठनों में से एक।
- **नोडल मंत्रालय:** गृह मंत्रालय।
- **प्रमुख कार्य:** देश की आंतरिक सुरक्षा बनाए रखना और प्रति-खुफिया ऑपरेशन्स का संचालन करना।

Result Mitra

2. डॉ. सैबल चट्टोपाध्याय बने राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग के नए अध्यक्ष



चर्चा में क्यों?

- हाल हीं में मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति (ACC) ने डॉ. सैबल चट्टोपाध्याय को राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग (NSC) के अध्यक्ष और 3 नए सदस्यों की नई नियुक्तियों को मंजूरी दी है।

महत्वपूर्ण बिन्दु :

अध्यक्ष:

- डॉ. सैबल चट्टोपाध्याय (IIM कोलकाता के पूर्व निदेशक)।

सदस्य:

- प्रो. शुभब्रता दास (IIM बैंगलोर)
- श्री सत्येंद्र बहादुर सिंह (भारतीय सांख्यिकी सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी)

- डॉ. माधवन मुकुंद (चेन्नई गणित संस्थान के निदेशक)

राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग (NSC) का परिचय:

- **स्थापना:** वर्ष 2005 में।
- **उद्देश्य:** सांख्यिकी प्राथमिकताओं और मानकों का निर्धारण करना, सांख्यिकी गतिविधियों में समन्वय स्थापित करना और आधिकारिक आँकड़ों की गुणवत्ता सुनिश्चित करना।
- **संरचना:** आयोग में एक अंशकालिक अध्यक्ष, सांख्यिकी क्षेत्र के विशेषज्ञ चार अंशकालिक सदस्य और नीति आयोग के सीईओ (पदेन सदस्य) शामिल होते हैं।
- **सचिव:** सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के सचिव, NSC के सचिव के रूप में कार्य करते हैं।

3. CBSE के नए चेयरमैन बने लोखंडे प्रशांत सीताराम



चर्चा में क्यों?

- हाल ही में मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति (ACC) ने लोखंडे प्रशांत सीताराम को केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) का नया अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

मुख्य बिन्दु:

- वरिष्ठ आईएएस अधिकारी लोखंडे प्रशांत सीताराम पूर्व में गृह मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव के पद पर कार्यरत थे और उन्होंने राहुल सिंह का स्थान लिया है।

- वरुण भारद्वाज को CBSE का नया सचिव नियुक्त किया गया है, जिन्होंने हिमांशु गुप्ता का स्थान लिया है।
- CBSE भारत के शिक्षा मंत्रालय के अधीन एक राष्ट्रीय स्तर का शिक्षा बोर्ड है, जो सार्वजनिक और निजी स्कूलों हेतु परीक्षा संचालन और पाठ्यक्रम निर्धारण का कार्य करता है।

Result Mitra

5. प्रभजीत सिंह बने OpenAI भारत के प्रबंध निदेशक



चर्चा में क्यों?

- OpenAI ने भारत में अपने तेजी से बढ़ते परिचालन का नेतृत्व करने के लिए प्रभजीत सिंह को अपना पहला प्रबंध निदेशक (Managing Director) नियुक्त किया है।

महत्वपूर्ण विवरण:

- वे सितंबर 2026 में आधिकारिक रूप से कार्यभार संभालेंगे।
- वे OpenAI के एशिया-प्रशांत प्रमुख किरण मणि को रिपोर्ट करेंगे।

- ध्यातव्य है की कंपनी ने नवंबर 2025 में नई दिल्ली में अपना पहला कार्यालय खोला था; अब मुंबई और बेंगलुरु में विस्तार की योजना है।
- प्रभजीत सिंह पूर्व में Uber के अध्यक्ष रह चुके हैं और वे आईआईटी खड़गपुर एवं आईआईएम अहमदाबाद के पूर्व छात्र हैं।

5. सौरभ विजय बने इंडिया AI मिशन के नए सीईओ



चर्चा में क्यों?

- हाल ही में केंद्र सरकार ने सौरभ विजय को इंडियाएआई मिशन का नया मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) नियुक्त किया गया है।

मुख्य बिन्दु:

- सौरभ विजय जो की महाराष्ट्र कैडर के 1998 बैच के आईएएस अधिकारी हैं, इससे पहले UIDAI में सीईओ के पद पर कार्यरत थे।
- सुदीप श्रीवास्तव को मिशन का मुख्य परिचालन अधिकारी नियुक्त किया गया है।

इंडियाएआई मिशनः

- **लॉन्चः** मार्च 2024
- **मंत्रालयः** इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित।
- **वित्तीय परिव्ययः** ₹10,372 करोड़।
- **उद्देश्यः** भारत में एक व्यापक और सुदृढ़ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना।

6. सर्वोच्च न्यायालय में 5 न्यायाधीशों की नियुक्ति



चर्चा में क्यों?

- भारत सरकार ने हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय में पाँच नए न्यायाधीशों की नियुक्ति को स्वीकृति दी है। इसके साथ ही, शीर्ष न्यायालय में कार्यरत न्यायाधीशों की कुल संख्या 37 हो गई है।

मुख्य विवरण:

- राष्ट्रपति ने भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI) सूर्यकांत की अध्यक्षता वाले कॉलेजियम की सिफारिश पर निम्नलिखित को सर्वोच्च न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त किया है:

चार उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीश:

- न्यायमूर्ति शील नागू (पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय)
- न्यायमूर्ति श्री चंद्रशेखर (बॉम्बे उच्च न्यायालय)
- न्यायमूर्ति संजीव सचदेवा (मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय)
- न्यायमूर्ति अरुण पल्ली (जम्मू-कश्मीर एवं लद्दाख उच्च न्यायालय)
- सीधे बार से पदोन्नति: वरिष्ठ अधिवक्ता वेंकिता सुब्रमणि मोहना।

अन्य महत्वपूर्ण जानकारी:

- **न्यायाधीशों की संख्या में वृद्धि:** 'सर्वोच्च न्यायालय (न्यायाधीशों की संख्या) संशोधन अध्यादेश, 2026' के माध्यम से स्वीकृत न्यायाधीशों की संख्या 34 से बढ़ाकर 38 कर दी गई है।
- **संवैधानिक प्रावधान:** नियुक्तियाँ संविधान के अनुच्छेद 124(2) के तहत की गई हैं।
- **महिला प्रतिनिधित्व:** न्यायमूर्ति वी. मोहना की नियुक्ति से सर्वोच्च न्यायालय में महिला न्यायाधीशों का प्रतिनिधित्व बढ़ा है।
- **वर्तमान स्थिति:** 5 नए जजों की नियुक्ति के बाद भी सर्वोच्च न्यायालय में 1 पद अभी भी रिक्त है।

7. जनरल NS राजा सुब्रमणि: भारत के तीसरे चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (CDS)



चर्चा में क्यों?

- केंद्र सरकार ने लेफ्टिनेंट जनरल एनएस राजा सुब्रमणि को भारत का तीसरा चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (CDS) नियुक्त किया है।

मुख्य बिन्दुः

- उन्होंने जनरल अनिल चौहान का स्थान लिया है।
- जनरल सुब्रमणि ने अपने कार्यभार में तीन मुख्य स्तंभों पर बल दिया है:
- J - संयुक्तता (Jointness)
- A - आत्मनिर्भरता (Atmanirbharta)
- I - नवाचार (Innovation)

CDS पद के बारे में:

- CDS भारत की तीनों सशस्त्र सेनाओं (थल सेना, नौसेना और वायु सेना) के प्रमुख और भारत सरकार के सर्वोच्च सैन्य सलाहकार होते हैं। इस पद का मुख्य कार्य तीनों सेनाओं के बीच तालमेल और रणनीतिक एकीकरण सुनिश्चित करना है।
- **सृजन:** दिसंबर 2019 (प्रथम CDS: जनरल बिपिन रावत, जनवरी 2020)।

- **सिफारिशें:** कारगिल समीक्षा समिति (1999) और शेकटकर समिति (2016) की सिफारिशों के बाद इस पद का गठन किया गया।
- **स्थिति:** यह एक 'चार-सितारा' अधिकारी का पद है। यह संवैधानिक नहीं, बल्कि मंत्रिमंडल के निर्णय द्वारा सृजित पद है। भारतीय वरीयता क्रम में यह 12वें स्थान पर है।
- **नियुक्ति प्राधिकारी:** कैबिनेट की नियुक्ति समिति (ACC), जिसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री करते हैं।
- **कार्यकाल:** निश्चित कार्यकाल नहीं, परंतु ऊपरी आयु सीमा 65 वर्ष है।

8. विवेक अग्रवाल बने FATF के नए उपाध्यक्ष



चर्चा में क्यों?

- हाल हीं में FATF की पूर्ण बैठक में भारत के वरिष्ठ नौकरशाह विवेक अग्रवाल को संगठन का उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। यह पहली बार है जब भारत इस पद का दायित्व संभालेगा।

मुख्य विवरण:

- विवेक अग्रवाल भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) के अधिकारी हैं और वर्तमान में संस्कृति मंत्रालय में सचिव के पद पर कार्यरत हैं।
- उनकी नियुक्ति जुलाई 2026 से जून 2027 तक की अवधि के लिए की गई है।

- वे पूर्व में 'वित्तीय आसूचना इकाई-भारत' (FIU-IND) के निदेशक रह चुके हैं और FATF में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर चुके हैं।
- ब्रिटेन के गाइल्स थॉमसन को अगला अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

वित्तीय कार्रवाई कार्य बल (FATF) के बारे में:

- **स्थापना:** 1989 में पेरिस में G-7 शिखर सम्मेलन के दौरान।
- **मुख्यालय:** पेरिस, फ्रांस।
- **उद्देश्य:** धन शोधन, आतंकवादी वित्तपोषण और सामूहिक विनाश के हथियारों के प्रसार के वित्तपोषण के खिलाफ वैश्विक मानक निर्धारित करना।

- ***भारत की स्थिति:*** *भारत 2010 से FATF का पूर्ण सदस्य है।*
- ***निगरानी:*** *FATF वर्ष में तीन बार पूर्ण सत्र आयोजित करता है।*
- ***सूचियाँ:*** *यह गैर-अनुपालक देशों को अपनी 'ग्रे लिस्ट' (बढ़ी हुई निगरानी) या 'ब्लैक लिस्ट' (उच्च-जोखिम क्षेत्राधिकार) में शामिल कर सकता है।*
- ***वैश्विक नेटवर्क:*** *40 सदस्य देश और 200 से अधिक क्षेत्राधिकार इसके मानकों को लागू करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।*

१. तुषार मेहता पुनः नियुक्तः सॉलिसिटर जनरल ऑफ इंडिया



चर्चा में क्यों?

- भारत सरकार ने वरिष्ठ अधिवक्ता तुषार मेहता को पुनः 'सॉलिसिटर जनरल (SG) ऑफ इंडिया' नियुक्त किया है। उनका यह नया कार्यकाल 1 जुलाई 2026 से 30 जून 2029 तक प्रभावी रहेगा।

महत्वपूर्ण विवरण:

- **कार्यकाल:** 3 वर्ष (या अगले आदेश तक)। गौरतलब है की वे अक्टूबर 2018 से इस पद पर कार्यरत हैं।

- **उल्लेखनीय मामले:** उन्होंने अनुच्छेद 370 का निरसन, अयोध्या राम जन्मभूमि विवाद, डिजिटल विनियमन और वक्फ (संशोधन) अधिनियम से संबंधित महत्वपूर्ण मामलों में सरकार का प्रतिनिधित्व किया है।
- **अन्य समवर्ती नियुक्तियाँ:** केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के लिए 5 एडिशनल सॉलिसिटर जनरल (ASGs) को भी 3 वर्षों के लिए पुनः नियुक्त किया है। ये हैं:-विक्रमजीत बनर्जी, के.एम. नटराज, सूर्यप्रकाश वी. राजू, एन. वेंकटरमन और ऐश्वर्या भाटी।

सॉलिसिटर जनरल के बारे में:

- यह भारत के 'अटॉर्नी जनरल' के बाद देश का दूसरा सबसे बड़ा विधि अधिकारी है।
- अटॉर्नी जनरल एक संवैधानिक पद है (अनुच्छेद 76), जबकि सॉलिसिटर जनरल का पद संवैधानिक नहीं, बल्कि एक वैधानिक/कार्यकारी पद है।
- यह पद 'लॉ ऑफिसर्स (कंडीशन्स ऑफ सर्विस) रूल्स, 1987' द्वारा शासित होता है।
- वे अटॉर्नी जनरल की सहायता करते हैं और केंद्र सरकार को सुप्रीम कोर्ट तथा अन्य संवैधानिक न्यायालयों में कानूनी सलाह एवं प्रतिनिधित्व प्रदान करते हैं।

10. तुर्किये में भारत के नए राजदूत



चर्चा में क्यों?

- विदेश मंत्रालय ने वरिष्ठ भारतीय विदेश सेवा (IFS) अधिकारी रुद्र गौरव श्रेष्ठ को तुर्किये में भारत का अगला राजदूत नियुक्त किया है।

मुख्य बिन्दु:

- रुद्र गौरव श्रेष्ठ 1999 बैच के IFS अधिकारी हैं।
- वे वर्तमान में ईरान में भारत के राजदूत के रूप में कार्यरत थे।
- ईरान के अलावा, उन्होंने प्रधानमंत्री कार्यालय (PMO) में प्रतिनियुक्ति और मोज़ाम्बिक में उच्चायुक्त के रूप में कार्य किया है।

अतिरिक्त जानकारी

- राजदूतों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है, जो विदेश मंत्रालय (MEA) की सिफारिशों पर आधारित होती है।
- तुर्किये की राजधानी अंकारा है, जहाँ भारतीय दूतावास स्थित है।
- वर्ष 1946 में स्थापित भारतीय विदेश सेवा (IFS) में अधिकारियों का चयन संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षा के माध्यम से किया जाता है।
- इसका मुख्य उत्तरदायित्व भारत की विदेश नीति को प्रभावी ढंग से लागू करना और अंतरराष्ट्रीय संबंधों का कुशल प्रबंधन करना है।

चर्चित व्यक्तित्व (Persons in News)

I. अजीत डोभाल

चर्चा में क्यों?

- भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (NSA) अजीत डोभाल ने हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित 'ब्रिक्स देशों के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों की 16वीं उच्च-स्तरीय बैठक' की अध्यक्षता की। इस दौरान उन्होंने साइबर सुरक्षा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और आतंकवाद जैसी गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए वैश्विक एकजुटता का आह्वान किया।



अजीत डोभाल के बारे में

- **पदः** वह वर्ष 2014 से भारत के 5वें राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं और उन्हें 'कैबिनेट मंत्री' का दर्जा प्राप्त है।
- **पृष्ठभूमिः** वह 1968 बैच के केरल कैडर के भारतीय पुलिस सेवा (IPS) अधिकारी हैं।
- **खुफिया अनुभवः** वर्ष 2004-2005 में वह 'इंटेलिजेंस ब्यूरो' (IB) के निदेशक रहे।
- **सम्मानः** वह सैन्य सम्मान 'कीर्ति चक्र' प्राप्त करने वाले भारत के पहले पुलिस अधिकारी हैं।

- **डोभाल डॉक्ट्रिन:** सुरक्षा क्षेत्र में उनकी रणनीति को 'ऑफेंसिव-डिफेंस' (आक्रामक-रक्षात्मक) नीति के रूप में जाना जाता है, जो रक्षात्मक रुख के बजाय निवारक और सक्रिय सुरक्षा उपायों पर जोर देती है।
- **प्रमुख ऑपरेशंस:** 2016 की 'सर्जिकल स्ट्राइक' और 2019 की 'बालाकोट एयरस्ट्राइक' की योजना और कार्यान्वयन में उनकी केंद्रीय भूमिका रही।
- **राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (NSA) :** भारत में इस पद की शुरुआत वर्ष 1998 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल के दौरान हुई थी। NSA प्रधानमंत्री के प्रधान सलाहकार होते हैं। वे RAW, IB और अन्य खुफिया एजेंसियों से प्राप्त इनपुट के आधार पर राष्ट्रीय सुरक्षा, भू-राजनीति और रणनीतिक मामलों पर निर्णय लेने में मदद करते हैं।

2. जनरल धीरज सेठ: भारत के 31वें थल सेनाध्यक्ष

चर्चा में क्यों?

- जनरल उपेंद्र द्विवेदी के सेवानिवृत्त होने के बाद, जनरल धीरज सेठ ने 30 जून 2026 को भारत के 31वें चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ (थल सेनाध्यक्ष) के रूप में पदभार ग्रहण किया है।



जनरल धीरज सेठ के बारे में:

- **उपलब्धि:** वे लगभग तीन दशकों बाद आर्मर्ड कोर से सेना प्रमुख बनने वाले पहले अधिकारी हैं। जनरल सेठ '2nd Lancers' से आने वाले तीसरे सेना प्रमुख हैं।
- **अनुभव:** चार दशकों का सैन्य करियर। 'दक्षिणी कमान' और 'दक्षिण-पश्चिमी कमान' दोनों का नेतृत्व करने का दुर्लभ अनुभव।

- ***ऑपरेशनल उपलब्धिः*** *दक्षिणी कमान प्रमुख के रूप में 'ऑपरेशन सिंदूर' का नेतृत्व, जिसमें गुजरात और राजस्थान सेक्टरों में हवाई खतरों व ड्रोन का मुकाबला किया गया।*
- ***प्रशिक्षणः*** *NDA स्नातक; पेरिस से कमांड एंड स्टाफ कोर्स और अमेरिका के नेवल पोस्टग्रेजुएट स्कूल से 'रक्षा अधिग्रहण' में विशेषज्ञता।*
- ***प्रमुख सम्मानः*** *परम विशिष्ट सेवा मेडल, उत्तम युद्ध सेवा मेडल और अति विशिष्ट सेवा मेडल।*

3. सुदर्शन पटनायक

चर्चा में क्यों?

- ओडिशा के प्रसिद्ध रेत कलाकार सुदर्शन पटनायक ने रूस के कैलिनिनग्राद क्षेत्र में आयोजित 'द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय रेत मूर्तिकला महोत्सव' में 'रूस ग्रैंड सैंड मास्टर कप 2026' जीतकर इतिहास रच दिया है।



मुख्य बिन्दु :

- वे यह प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त करने वाले पहले भारतीय रेत कलाकार बन गए हैं।
- उनकी 3 मीटर ऊँची पुरस्कार विजेता कलाकृति 'जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग' पर आधारित थी।
- यह मूर्ति पृथ्वी के दो विपरीत स्वरूपों को दर्शाती है—एक ओर पर्यावरणीय क्षरण और दूसरी ओर वनीकरण व सतत जीवनशैली।

सुदर्शन पटनायक के बारे में:

- **मूल निवास:** पुरी, ओडिशा।
- **प्रमुख सम्मान:** वर्ष 2014 में भारत सरकार द्वारा 'पद्म श्री' से सम्मानित।
- **विश्व रिकॉर्ड:** वर्ष 2017 में पुरी तट पर विश्व का सबसे ऊँचा सैंड कैसल (रेत का महल) बनाने के लिए गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज।
- **योगदान:** उन्होंने 1991 में पुरी में 'सुदर्शन सैंड आर्ट इंस्टीट्यूट' की स्थापना की, ताकि नई पीढ़ी को इस कला रूप में प्रशिक्षित किया जा सके।

5. विश्वनाथन आनंद

चर्चा में क्यों?

- भारत के पांच बार के विश्व शतरंज चैंपियन और FIDE के वर्तमान उप-अध्यक्ष विश्वनाथन आनंद को 24 जून 2026 को 'स्पोर्ट्स जर्नलिस्ट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया' (SJFI) पदक से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें चेन्नई के मद्रास क्रिकेट क्लब में एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया।



SJFI पदक के बारे में:

- **महत्व:** यह SJFI द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है।
- **स्थापना:** 1976
- **विशिष्ट क्लब:** इस पदक से सम्मानित होने वाले चुनिंदा दिग्गजों में सुनील गावस्कर, विजय अमृतराज, प्रकाश पादुकोण, पी.टी. उषा और मिल्खा सिंह (मरणोपरांत) शामिल हैं।

विश्वनाथन आनंद के बारे में:

- **जन्म:** 11 दिसंबर 1969, मयिलादुथुराई, तमिलनाडु।
- **ग्रैंडमास्टर:** 1988 में भारत के पहले ग्रैंडमास्टर बने।
- **विश्व चैंपियन:** उन्होंने 1995, 2000, 2007, 2008 और 2010 में कुल 5 बार विश्व खिताब जीता।

प्रमुख पुरस्कार:

- पद्म विभूषण (2008), पद्म भूषण (2000), पद्म श्री (1987)।
- राजीव गांधी खेल रत्न (1991-92): वे इस पुरस्कार के पहले प्राप्तकर्ता थे।
- अर्जुन पुरस्कार (1985)।

5. रॉबर्ट फिको

चर्चा में क्यों?

- जून 2026 में भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की स्लोवाकिया यात्रा के दौरान, राष्ट्रपति पीटर पेलेग्रेनी ने उन्हें सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'द ऑर्डर ऑफ द व्हाइट डबल क्रॉस' से सम्मानित किया। इस दौरान स्लोवाकिया के प्रधानमंत्री रॉबर्ट फिको ने भारत के प्रधानमंत्री के लगातार निर्वाचित होते रहने को एक 'राजनीतिक चमत्कार' करार दिया।



रॉबर्ट फिको के बारे में:

- **पद:** स्लोवाकिया के प्रधानमंत्री।
- **पार्टी:** स्मेर-सोशल डेमोक्रेसी, जो एक वामपंथी और लोकलुभावन विचारधारा वाली पार्टी है।
- **राजनीतिक महत्व:** फिको स्लोवाकिया के इतिहास में सबसे लंबे समय तक सेवा करने वाले प्रधानमंत्रियों में से एक हैं।

स्लोवाकिया:

- **स्थापना:** 1 जनवरी 1993 को 'वेलवेट डिवोर्स' (चेकोस्लोवाकिया का शांतिपूर्ण विघटन) के बाद स्वतंत्र देश के रूप में उदय।
- **राजधानी:** ब्रातिस्लावा।
- **मुद्रा:** यूरो (2009 से)।
- **वैश्विक सदस्यता:** 2004 से यूरोपीय संघ (EU) और नाटो (NATO) का सदस्य।

6. नीलकंठ मिश्रा

चर्चा में क्यों?

- मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति ने प्रसिद्ध अर्थशास्त्री नीलकंठ मिश्रा को वाशिंगटन, डीसी में विश्व बैंक मुख्यालय में भारत का नया कार्यकारी निदेशक (Executive Director) नियुक्त करने की मंजूरी दी है।



मुख्य बिन्दु :

- **कार्यकाल:** उनकी नियुक्ति 3 वर्षों के लिए, या अगले आदेश तक (जो भी पहले हो) प्रभावी होगी।
- **पूर्ववर्ती:** वे परमेश्वरन अय्यर का स्थान लेंगे।
- **प्रक्रिया:** इस नियुक्ति को कार्मिक मंत्रालय द्वारा जारी आदेश के तहत कैबिनेट की नियुक्ति समिति द्वारा अनुमोदित किया गया है।
- कार्यकारी निदेशक के रूप में, वे भारत और उनके निर्वाचन क्षेत्र (भारत, बांग्लादेश, भूटान और श्रीलंका) का विश्व बैंक के बोर्ड में प्रतिनिधित्व करेंगे।

नीलकंठ मिश्रा के बारे में:

- **शैक्षणिक पृष्ठभूमि:** वे भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT), कानपुर के पूर्व छात्र हैं।
- **वर्तमान पद:** वर्तमान में वे प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के सदस्य हैं।
- **विशेषज्ञता:** उन्हें अर्थशास्त्र और नीति निर्माण में व्यापक अनुभव है।

7. प्रोफेसर जैनेंद्र कुमार जैन

चर्चा में क्यों?

- भारतीय-अमेरिकी सैद्धांतिक भौतिक विज्ञानी प्रोफेसर जैनेंद्र कुमार जैन को भौतिकी के प्रतिष्ठित 'वुल्फ पुरस्कार 2025' (जो 2026 में प्रदान किया गया) से सम्मानित किया गया है। वे इस सम्मान को प्राप्त करने वाले भारतीय मूल के पहले वैज्ञानिक हैं।



मुख्य बिन्दुः

- उन्होंने 1989 में 'कंपोजिट फर्मियॉन्स' का सिद्धांत प्रतिपादित किया।
- यह सिद्धांत 'फ्रैक्शनल क्वांटम हॉल इफेक्ट' जैसी जटिल क्वांटम घटनाओं को समझने का आधार बना।
- यह खोज इलेक्ट्रॉन के व्यवहार को समझने का एक क्रांतिकारी तरीका प्रदान करती है, विशेष रूप से तीव्र चुंबकीय क्षेत्रों में।

प्रो. जैनेंद्र जैन के बारे में

- **शिक्षाः** महाराजा कॉलेज (जयपुर), IIT कानपुर और स्टोनी ब्रुक यूनिवर्सिटी (न्यूयॉर्क)।

- **वर्तमान पदः** पेंसिल्वेनिया स्टेट यूनिवर्सिटी, अमेरिका में 'इवान पुग यूनिवर्सिटी प्रोफेसर'।
- **संस्थापक भूमिकाः** मुंबई स्थित 'लोढ़ा थियोरेटिकल फिजिक्स इंस्टीट्यूट' के संस्थापक निदेशक।

वुल्फ पुरस्कारः

- **स्थापनाः** 1978, वुल्फ फाउंडेशन (इजराइल) द्वारा।
- **प्रदानकर्ताः** इजराइल के राष्ट्रपति।
- **क्षेत्रः** भौतिकी, रसायन विज्ञान, गणित, चिकित्सा और कृषि।
- **महत्वः** इसे विज्ञान के क्षेत्र में 'नोबेल पुरस्कार का पूर्वगामी' माना जाता है।

4. कुणाल शाह

चर्चा में क्यों?

- भारत के प्रमुख फिनटेक उद्यमी और 'क्रेड' (CRED) के संस्थापक कुणाल शाह को मेटा द्वारा व्हाट्सएप का ग्लोबल चीफ नियुक्त किया गया है।



मुख्य बिन्दुः

- कुणाल शाह अब दुनिया के सबसे बड़े मैसेजिंग प्लेटफॉर्म 'व्हाट्सएप' का नेतृत्व करेंगे। क्रेड के सीईओ का कार्यभार अंतरिम रूप से मितन संपत संभालेंगे।
- क्रेड से पहले, उन्होंने 'पैसाबैंक' और 'फ्रीचार्ज' जैसे सफल स्टार्टअप्स की स्थापना की थी।
- इस नियुक्ति के साथ ही, मेटा ने क्रेड में 900 मिलियन डॉलर (लगभग ₹8,550 करोड़) का रणनीतिक निवेश करने की घोषणा की है।
- मेटा, जो फेसबुक, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप की पैरेंट कंपनी है, इस पूरे निवेश और नेतृत्व परिवर्तन की मुख्य सूत्रधार है।

१. यानुंग जमोह लेगो

चर्चा में क्यों?

- अरुणाचल प्रदेश की पारंपरिक चिकित्सक यानुंग जमोह लेगो अपने हर्बल चिकित्सा ज्ञान के माध्यम से 300,000 से अधिक मरीजों का उपचार कर चर्चा में हैं। उन्हें व्यापक रूप से 'क्वीन ऑफ हर्ब्स' के रूप में पहचाना जाता है।





परिचय एवं पृष्ठभूमि:

- **जन्म:** 1963, सिका तोडे गाँव, पूर्वी सियांग जिला, अरुणाचल प्रदेश।
- **समुदाय:** आदि जनजातीय समुदाय।
- **योग्यता:** वे 'इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ अल्टरनेटिव मेडिसिन' के तहत एक पंजीकृत चिकित्सा व्यवसायी हैं और उनके पास कृषि में MSc की डिग्री भी है।
- **चिकित्सा सेवा:** उन्होंने 1995 में अपनी उपचार सेवा शुरू की। वे कैंसर, मधुमेह, किडनी रोग, गठिया और त्वचा विकारों जैसी पुरानी बीमारियों के उपचार के लिए स्थानीय रूप से प्राप्त जड़ी-बूटियों का उपयोग करती हैं।
- **इंडिजिनस हर्बल हेरिटेज:** 2009 में इस पहल की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य प्राचीन ज्ञान को संरक्षित करना और युवाओं को प्रशिक्षित करना है।
- वे अरुणाचल प्रदेश के कृषि विभाग में उप-निदेशक के पद पर भी कार्यरत रही हैं ।

10. सोनम वांगचुक

चर्चा में क्यों?

- प्रसिद्ध जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक द्वारा दिल्ली के जंतर-मंतर पर 'कॉकरोच जनता पार्टी (CJP) के सहयोग से शुरू की गई भूख हड़ताल चर्चा में है। यह विरोध प्रदर्शन प्रतियोगी परीक्षाओं में अनियमितताओं के विरुद्ध छात्रों के समर्थन और लद्दाख की संवैधानिक सुरक्षा की मांगों को लेकर है।



सोनम वांगचुक के बारे में:

- **पृष्ठभूमि:** वे एक लद्दाखी इंजीनियर, शिक्षा सुधारक और जलवायु कार्यकर्ता हैं।

प्रमुख नवाचार:

- **आइस स्तूप:** कृत्रिम ग्लेशियर का आविष्कार, जो सर्दियों के पानी को संचित कर वसंत ऋतु में सूखे से निपटने में मदद करता है।
- **SECMOL:** 'Students' Educational and Cultural Movement of Ladakh' की स्थापना, जो पूरी तरह से सौर ऊर्जा पर आधारित एक शिक्षा केंद्र है।

- **सम्मानः** 2018 में प्रतिष्ठित 'रैमन मैग्सेसे पुरस्कार' से सम्मानित। उन्हें बॉलीवुड फिल्म '3 इडियट्स' के पात्र 'फुंसुख वांगडू' की वास्तविक प्रेरणा माना जाता है।
- **स्पष्टीकरणः** ध्यान देने योग्य है कि जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक और कारगिल युद्ध के नायक कर्नल सोनम वांगचुक (महावीर चक्र विजेता, जिनका 2026 में निधन हुआ) दो अलग-अलग व्यक्तित्व हैं।

II. बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

चर्चा में क्यों?

- भारत के प्रधानमंत्री ने महान उपन्यासकार, कवि और पत्रकार बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय (1838-1894) की जयंती पर उन्हें 27 जून को श्रद्धांजलि अर्पित की।



परिचय और जीवनः

- **जन्मः** 27 जून 1838, नैहाटी, बंगाल प्रेसीडेंसी।
- **शिक्षाः** कलकत्ता विश्वविद्यालय के पहले स्नातक बैच में शामिल। उन्होंने 1858 से 'डिप्टी मजिस्ट्रेट' एवं 'डिप्टी कलेक्टर' के रूप में सरकारी सेवा की।
- **उपाधिः** उन्हें साहित्य में उनके अद्वितीय योगदान के लिए 'साहित्य सम्राट' के रूप में सम्मानित किया जाता है।

साहित्यिक एवं पत्रकारिता योगदानः

उपन्यासः

- **राजमोहन की पत्नी (1864):** इसे व्यापक रूप से पहला भारतीय अंग्रेजी उपन्यास माना जाता है।
- **दुर्गेशनंदिनी (1865):** पहला प्रमुख आधुनिक बंगाली रोमांस उपन्यास।
- **आनंदमठ (1882):** 18वीं शताब्दी के संन्यासी विद्रोह पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास, जिसने स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रवादी चेतना जगाई।
- **पत्रकारिताः** 1872 में मासिक पत्रिका 'बंगदर्शन' की स्थापना की, जिसने बंगाली पहचान और राष्ट्रवादी साहित्य को दिशा दी।

'वंदे मातरम' और राष्ट्रीय आंदोलन:

- **रचना:** 1870 के दशक में रचित, जिसे बाद में 'आनंदमठ' में शामिल किया गया।

ऐतिहासिक महत्व:

- 1896 के कांग्रेस अधिवेशन में पहली बार रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा गाया गया।
- 1905 के स्वदेशी आंदोलन के दौरान यह जन-आंदोलन का मुख्य उद्घोष बना।
- 1950 में संविधान सभा द्वारा इसे भारत का राष्ट्रीय गीत घोषित किया गया।
- **आधिकारिक निर्देश (2026):** गृह मंत्रालय (MHA) के निर्देशानुसार, यदि आधिकारिक कार्यक्रमों में 'वंदे मातरम' और 'जन-गण-मन' दोनों का उपयोग होता है, तो 'वंदे मातरम' को राष्ट्रगान से पहले बजाया/गाया जाना अनिवार्य है।

खेल-कूद (Sports)

1. राष्ट्रीय खेल प्रशासन अधिनियम, 2025



चर्चा में क्यों?

- केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय खेल प्रशासन अधिनियम, 2025 के तहत इन नियमों को अधिसूचित किया है, जिसका मुख्य उद्देश्य खेल निकायों में सुशासन सुनिश्चित करना और न्यायिक विवाद निपटान तंत्र को आधुनिक बनाना है।

प्रमुख बिंदु

I. राष्ट्रीय खेल बोर्ड नियम, 2026

- **संरचना:** बोर्ड में एक अध्यक्ष और दो सदस्य होंगे।
- **नियुक्ति:** इनकी नियुक्ति केंद्र सरकार द्वारा एक खोज-सह-चयन समिति की सिफारिशों के आधार पर तैयार पैनल से की जाएगी।

प्रमुख कार्यः

- राष्ट्रीय खेल निकायों को मान्यता प्रदान करने वाला केंद्रीय प्राधिकरण।
- खेल निकायों द्वारा शासन, वित्तीय और नैतिक मानकों के अनुपालन की निगरानी करना।

2. राष्ट्रीय खेल ट्रिब्यूनल नियम, 2026

- उद्देश्यः खेल से जुड़े विवादों के समाधान के लिए एक समर्पित न्यायिक निकाय की स्थापना।

प्रमुख लाभः

- सिविल अदालतों पर निर्भरता में कमी।
- स्वतंत्र, त्वरित, किफायती और सुलभ विवाद निपटान।
- सिंगल-विंडो तंत्र के माध्यम से मुकदमों की बहुलता पर नियंत्रण।

डिजिटल कार्यान्वयनः एक समर्पित पोर्टल के माध्यम सेः

- ऑनलाइन विवाद दर्ज करना और दस्तावेज़ जमा करना।
- वर्चुअल सुनवाई और डिजिटल रिकॉर्ड प्रबंधन।
- पारदर्शी आदेश प्रकाशन।

2. मेंस एशिया कप 2026: भारतीय अंडर-19 पुरुष हॉकी टीम की स्वर्ण पदक जीत



चर्चा में क्यों?

- जून 2026 में जापान में आयोजित 'मेंस एशिया कप' (अंडर-19) में भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने मेजबान जापान को हराकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया है।

प्रमुख बिंदुः

- **टूर्नामेंटः** मेंस एशिया कप 2026 (अंडर-19)।
- **फाइनल परिणामः** भारत ने जापान को 4-1 के अंतर से पराजित किया।
- **सेमीफाइनलः** भारत ने अपने चिर-प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को 5-3 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया था।

- **प्रमुख खिलाड़ी:** फाइनल मुकाबले में आशीष तानी पूर्ति (आशीष कुमार) ने शानदार हैट्रिक लगाई और कप्तान केतन कुशवाहा ने एक गोल किया।
- **पुरस्कार:** हॉकी इंडिया ने स्वर्ण पदक विजेता प्रत्येक खिलाड़ी के लिए ₹3 लाख और सहयोगी स्टाफ के लिए ₹1.5 लाख के इनाम की घोषणा की है।
- **यूरोप टूर (जुलाई 2026):** भारतीय जूनियर (अंडर-21) पुरुष और महिला टीमें यूके, बेल्जियम, जर्मनी और नीदरलैंड के दौरे पर हैं, जहाँ वे शीर्ष अंतरराष्ट्रीय टीमों के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करेंगी।

3. SAFF महिला चैम्पियनशिप 2026: भारतीय टीम की ऐतिहासिक जीत



चर्चा में क्यों?

- भारत ने गोआ में आयोजित SAFF महिला चैम्पियनशिप 2026 के फाइनल में बांग्लादेश को 3-1 से हराकर रिकॉर्ड छठी बार यह खिताब अपने नाम किया है।

टूर्नामेंट के मुख्य विवरण:

- **विजेता:** भारत।
- **उपविजेता:** बांग्लादेश।
- **आयोजन स्थल:** पंडित जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम, मारगाओ, गोआ।
- **फाइनल तिथि:** 6 जून 2026।

व्यक्तिगत पुरस्कार (अवॉर्ड्स):

- **सर्वाधिक गोल (टॉप स्कोरर):** अवेका सिंह (5 गोल)।
- **मोस्ट वैल्युएबल प्लेयर (MVP):** सनफिदा नोंगराम।
- **बेस्ट गोलकीपर:** पांथोई चानू एलंगबाम।

3. फीफा (FIFA)



- **पूरा नामः** फेडरेशन इंटरनेशनेल डी फुटबॉल एसोसिएशन (Fédération Internationale de Football Association)।
- **स्थापनाः** 21 मई 1904 (पेरिस, फ्रांस में)।
- **मुख्यालयः** ज्यूरिख, स्विट्जरलैंड।
- **सदस्यः** 211 राष्ट्रीय फुटबॉल संघ।
- **अध्यक्षः** जियानी इन्फैंटिनो (Gianni Infantino)।
- **आदर्श वाक्य (Motto):** "खेल के लिए, दुनिया के लिए" (For the game. For the world.)

फीफा की भूमिका और कार्य

1. **अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताएं:** यह फीफा विश्व कप (पुरुष और महिला) और अन्य अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल टूर्नामेंटों का आयोजन करता है।
2. **नियम निर्धारण:** अंतरराष्ट्रीय मैचों के लिए 'लॉज़ ऑफ द गेम' (Laws of the Game) को लागू करना और रेफरी/कोचिंग के लिए मानक तय करना।
3. **वैश्विक विकास:** फुटबॉल के खेल को जमीनी स्तर से लेकर पेशेवर स्तर तक बढ़ावा देना और विकासशील देशों में फुटबॉल अवसंरचना (Infrastructure) विकसित करना।
4. **प्रशासनिक नियंत्रण:** सदस्य देशों के फुटबॉल संघों पर निगरानी रखना और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनुशासनात्मक कार्रवाई करना।

- यह फीफा विश्व कप (पुरुष और महिला) और अन्य अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल टूर्नामेंटों का आयोजन करता है।
- **नियम निर्धारण:** अंतरराष्ट्रीय मैचों के लिए 'लॉज़ ऑफ द गेम' (Laws of the Game) को लागू करना और रेफरी/कोचिंग के लिए मानक तय करना।
- **वैश्विक विकास:** फुटबॉल के खेल को जमीनी स्तर से लेकर पेशेवर स्तर तक बढ़ावा देना और विकासशील देशों में फुटबॉल अवसंरचना (Infrastructure) विकसित करना।
- **प्रशासनिक नियंत्रण:** सदस्य देशों के फुटबॉल संघों पर निगरानी रखना और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनुशासनात्मक कार्रवाई करना।

फीफा विश्व कप (FIFA World Cup) - प्रमुख तथ्य

- यह दुनिया का सबसे लोकप्रिय और देखा जाने वाला एकल-खेल आयोजन है।
- **प्रथम विश्व कप:** 1930 में आयोजित (मेजबान और विजेता: उरुग्वे)।
- **आयोजन अंतराल:** यह हर 4 वर्ष में आयोजित किया जाता है।
- **सर्वाधिक सफल टीम:** ब्राजील (कुल 5 बार विजेता

प्रमुख तथ्यः

- ***मेजबान देशः*** *अमरीका, कनाडा और मैक्सिको (इतिहास में पहली बार 3 देशों द्वारा संयुक्त मेजबानी)।*
- ***संस्करण की विशेषताः*** *यह अब तक का सबसे बड़ा संस्करण है।*
- ***प्रतिभागी टीमें:*** *कुल 48 टीमें (पहले 32 टीमें होती थीं)।*
- ***क्वालीफिकेशनः*** *मेजबान देशों को सीधे प्रवेश; अन्य 45 टीमें क्वालीफाइंग अभियान के माध्यम से चुनी गईं।*

टूर्नामेंट प्रारूपः

- 12 ग्रुप (प्रत्येक में 4 टीमें)।
- **नॉकआउट चरणः** शीर्ष 2 टीमें + तीसरे स्थान पर रहने वाली सर्वश्रेष्ठ टीमें (अंतिम 32 टीमें नॉकआउट में)।
- **कुल मुकाबलेः** 104 मैच (72 ग्रुप स्टेज + 32 नॉकआउट)।
- **फाइनलः** 19 जुलाई को निर्धारित।

4. आईसीसी महिला टी-20 विश्व कप 2026



चर्चा में क्यों?

- आईसीसी महिला टी-20 विश्व कप 2026 का आयोजन इंग्लैंड और वेल्स में 12 जून से 5 जुलाई 2026 तक किया जा रहा है। आईसीसी महिला टी20 विश्व कप का यह दसवां संस्करण है।

प्रमुख तथ्यः

- **मेजबानः** इंग्लैंड और वेल्स।
- **प्रतिभागी टीमें:** 12 टीमें।
- **कुल मुकाबलेः** 33 मैच।
- **फाइनल स्थलः** ऐतिहासिक लॉर्ड्स क्रिकेट ग्राउंड, लंदन (5 जुलाई 2026)।

- ***भारतीय टीम की कप्तानः*** *इस टूर्नामेंट में भारतीय महिला टीम का नेतृत्व हरमनप्रीत कौर कर रही हैं।*
- ***भारतीय टीमः*** *टीम ने अपने अभियान की शुरुआत पाकिस्तान के विरुद्ध ६५ रनों की जीत के साथ की थी, लेकिन ऑस्ट्रेलिया से हार के कारण सेमीफाइनल की दौड़ से बाहर हो गई।*
- *ऑस्ट्रेलिया ने वेस्टइंडीज को ४ विकेट से हराकर फाइनल में अपनी जगह बना ली है।*

Result Mitra

5. ग्लासगो राष्ट्रमंडल खेल 2026



चर्चा में क्यों?

- राष्ट्रमंडल खेल महासंघ (CGF) ने वित्तीय और अवसंरचनात्मक कारणों से 2026 के ग्लासगो खेलों में निर्धारित खेलों की संख्या को 22 से घटाकर 10 कर दिया है।

परिचय:

- यह एक नियोजित अंतरराष्ट्रीय बहु-खेल आयोजन है, जिसमें मुख्य रूप से पूर्व ब्रिटिश साम्राज्य के उपनिवेश रहे देश (राष्ट्रमंडल देश) भाग लेते हैं।
- यह आयोजन प्रत्येक 4 वर्ष में किया जाता है।

- **शुरुआत:** सर्वप्रथम वर्ष 1930 में हेमिल्टन, ओंटेरियो (कनाडा) में आयोजित किया गया था।
- **नामकरण:** 1978 से इन्हें आधिकारिक तौर पर 'राष्ट्रमंडल खेल' (Commonwealth Games) कहा जाने लगा।
- **22वां संस्करण (2022):** इंग्लैंड के बर्मिंघम में आयोजित किया गया था।
- **23वां संस्करण (2026):** ग्लासगो, स्कॉटलैंड में 23 जुलाई से 2 अगस्त 2026 के बीच निर्धारित है।

प्रमुख तथ्यः

- **संस्करणः** 23वां राष्ट्रमंडल खेल।
- **आयोजन स्थलः** ग्लासगो, स्कॉटलैंड।
- **तिथियाँः** 23 जुलाई से 2 अगस्त 2026।
- **विशेषताः** राजा चार्ल्स तृतीय के राष्ट्रमंडल प्रमुख बनने के बाद आयोजित पहले खेल।
- **शामिल 10 खेलः** एथलेटिक्स/पैरा एथलेटिक्स, तैराकी/पैरा तैराकी, जिमनास्टिक, ट्रैक साइक्लिंग/पैरा साइक्लिंग, नेटबॉल, भारोत्तोलन/पैरा पावरलिफ्टिंग, मुक्केबाजी, जूडो, बाउल्स/पैरा बाउल्स, 3x3 बास्केटबॉल।

- **बाहर किए गए प्रमुख खेलः** क्रिकेट, हॉकी, बैडमिंटन, कुश्ती, टेबल टेनिस, रग्बी सेवेंस, स्क्वैश आदि (कुल 12 खेल)।

परिवर्तन के कारणः

- **वित्तीय बाधाएंः** बढ़ती लागत और बजट को नियंत्रित रखने की आवश्यकता।
- **बुनियादी ढांचाः** सीमित संसाधनों में सुव्यवस्थित प्रबंधन सुनिश्चित करना।
- **परंपराः** खेलों के अधिक पारंपरिक प्रारूप (लगभग 10 खेलों) की ओर वापसी।

भारत के लिए रणनीतिक प्रभावः

1. **पदक तालिका पर असरः** भारत के पारंपरिक मजबूत खेल जैसे कुश्ती, बैडमिंटन, टेबल टेनिस और हॉकी के बाहर होने से भारत की पदक तालिका पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।
2. **सीमित विकल्पः** अब भारत की पदक संभावनाएं मुख्य रूप से एथलेटिक्स, भारोत्तोलन, मुक्केबाजी और जूडो जैसे खेलों पर केंद्रित हो गई हैं।
3. **ऐतिहासिक संदर्भः** भारत का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दिल्ली 2010 में रहा है (101 पदक)। 21वीं सदी में भारत लगातार शीर्ष 5 में रहा है, जिसे बनाए रखना अब चुनौतीपूर्ण होगा।

Result Mitra

6. भारत के सबसे तेज़ एथलीटः गुरिंदरवीर सिंह



चर्चा में क्यों?

- 25 वर्षीय धावक गुरिंदरवीर सिंह वर्तमान में भारत के सबसे तेज़ एथलीट (फास्टेस्ट एथलीट) हैं।

प्रमुख तथ्य:

- **उपलब्धि:** इन्होंने 100 मीटर की दौड़ को 10.09 सेकेंड के रिकॉर्ड समय में पूरा कर नेशनल रिकॉर्ड अपने नाम किया है।
- **स्थान:** यह कीर्तिमान 24 मई 2026 को बिरसा मुंडा एथलेटिक्स स्टेडियम, रांची में बनाया गया।
- **पृष्ठभूमि:** ये जालंधर, पंजाब के रहने वाले हैं और इनके पिता कमलजीत सिंह (पंजाब पुलिस में ASI) इनके लिए प्रेरणा के सबसे बड़े स्रोत रहे हैं।

- **अन्य रिकॉर्ड:** इसी आयोजन में विशाल टीके ने 400 मीटर की दौड़ 44.98 सेकेंड में पूरी कर नया नेशनल रिकॉर्ड बनाया है।

उसेन बोल्ट: विश्व रिकॉर्ड और उपलब्धियाँ

- **विश्व रिकॉर्ड समय:** 9.58 सेकेंड (100 मीटर दौड़)।
- **रिकॉर्ड तिथि और स्थान:** यह रिकॉर्ड 16 अगस्त 2009 को बर्लिन (जर्मनी) में आयोजित विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप के दौरान बनाया गया था।

7. तैराकी (Swimming): विश्व और भारतीय रिकॉर्ड्स



विश्व तैराकी

- **50 मीटर फ्रीस्टाइल (पुरुष):** कैमरन मैकएवॉय (ऑस्ट्रेलिया) - 20.88 सेकंड।
- **100 मीटर फ्रीस्टाइल (पुरुष):** झानले पैन (चीन) - 46.40 सेकंड।
- **100 मीटर बटरफ्लाई (महिला):** साशा सोजोस्ट्रॉम (स्वीडन) - 55.48 सेकंड।
- **सबसे पुराना विश्व रिकॉर्ड:** 4x100 मीटर फ्रीस्टाइल रिले (पुरुष - टीम यूएसए) - 3:08.24 मिनट (बीजिंग ओलंपिक 2008)।

भारतीय गौरवः ईशांक सिंह का कीर्तिमान

- **उपलब्धिः** पाक स्ट्रेट (तलाई मन्नार, श्रीलंका से धनुषकोड़ी, भारत) की 29 किमी की दूरी को पार किया।
- **समयः** 9 घंटे 50 मिनट।
- **विशेषताः** इस दूरी को पार करने वाले दुनिया के सबसे कम उम्र के तैराक (7 वर्ष)।
- **ग्रैंचेन वाल्श (अमेरिका):** तैराकी के इतिहास में सर्वाधिक व्यक्तिगत और रिले विश्व रिकॉर्ड्स का सम्मान।